श्री रसमोद कुञ्ज बिहारी बिहारिणी जू

श्रीरूपानुराग में परिवर्तित हो जायेगा। अनुपम प्रेम होगा वह। नाम जप कर अनुभव–सिद्ध–महानुभावों का संग करिये, तो श्रीनाम के सूक्ष्म गूढ़ रहस्यों की जानकारी प्राप्त होवे। निस्ताप नाम नशा में मतवाला बनने के लिए आपको विषय का भ्रमपूर्ण सुख भूल ही जाना होगा।

नाम रटे अभिलाष बढ़ाय, लहे रस भावहपात अनूपम्।
मौत को धौल न भाल लगे, जगे जानकिनाह से प्रेम निरूपम्।।
संत समागम कीन्हे बिना नहि भेद खुले अति झीन स्वरूपम्।
(श्री) युग्म अनन्य विसारि विषय भ्रम, मातिये नाम नशा गतधूपम्।।१२८९।।

श्याम सुन्दर श्रीजानकीरमणजू की मनमोहिनी मूर्ति आपको श्रीनामाक्षरों के भीतर से ही प्रगट होती हुई प्रतीत होगी। विश्वास प्रेमपूर्वक नाम रूपी महामंत्र को बैखरी वाणी में उच्चारण करते हुए आप युगल रूप दर्शनों की प्रतीक्षा में बने रहिये। आपके हृदय में श्रीनाम कृपा से कोटि–कोटि सूर्य चन्द्रमा के समान प्रकाश करते हुए श्रीयुगलकिशोर प्रगट हो जायेंगे। उस समय आपको वाद्ययंत्रों की झनकार के समान कर्णसुखद नामध्वनि बहुत मीठी लगेगी। तब तो आपके हृदय में विलक्षण नाम नशा चढ़ जायेगा।

माधुरि सूरति साँवरे की, झलकाति सुनाम ललाम के अंतर।
जोहिये प्रीति प्रतीति समेत, उचारि के रंग उमंग से मंतर।।
आपहि आप प्रकाश उठे उर रंग सुभान समान बसंतर।
(श्री) युग्म अनन्य अजूब नशा निज जानि परै सुनि रागिनी यंतर।।१२५०।।

श्रीबड़े महाराज ऐसे नामानुरागी को बड़भागी कहते हैं और आदेश देते हैं कि नित्य नवीन स्नेह बढ़ाते हुए, नाम का नशा पीया करो। प्रियतम प्राणवल्लभ श्रीजानकी कातजू के प्रति बड़ी सुहागिनी प्रीति प्रतीति जग पड़ेगी। तब तो वह नाम की खुमारी कभी हृदय से उतरेगी ही नहीं, फिर आप दिन रात (लैल निहार) दिव्य युगल विहार का दर्शन करते रहिये। वह नाम रूप विहार दर्शन जन्य जो अविरल रति आपको प्राप्त होगी, उस दशा में शोक का नामोनिशान नहीं रहता है और अभागे लोगों को तो जो विषयसुख का नशा चढ़ता है, वह सर्वथा विकारपूर्ण है, निस्सार है, हृदय का कलंक हैं

नाम नशा नित पीजिये नेम से नेह नवीन सजाय सुभागी।
फेर नहीं उतरे हिय से प्रिय प्रेम प्रतीति सोहागिनि जागी।।
लैल निहार बिहार विलोकनि शोक नएक रती रति रागी।
(श्री) युग्म अनन्य विकार अगार असार नशा सब ही दिल दागी।।१९२२।।

श्रीबड़े महाराज कहते हैं कि श्रीसीतारामनाम के नशा के समान दिव्यानन्द दायक और नशा कहाँ पाइये? गाँजा, भाँग, मद्यादि वाले लौकिक नशा तो सदा विकार पूर्ण होते हैं। दूसरी बात यह है कि लौकिक नशा किसी निश्चित अवधि तक रहता है। एक पहर रहे, दो चार आठ पहर तक हद हो गया। फिर उतर जाता है। नाम नशा चढ़ा तो फिर उतरने को नहीं। युग युगान्त तक बना रहेगा। भगवान् शंकर तो नाम–नशा

को प्राण समान जोगाते रहते हैं। उनके हृदय में, नयन में श्रीनाम–नशा निरन्तर चढ़ा रहता है। अत: इसी नाम–नशा में तुम्हें भी दिन–रात छके रहना चाहिये। नाम–नशा से भिन्न और अभिलाषा हो ही नहीं सकता।

रामनाम अमल समान न अमल आन
समल जहान माँझ अमल प्रमानियो।
और जेते मादक रहम तेते जाम एक
दोय चार आठ तक अवधि सुजानियो।।
उमापति प्रान सर्वेश युग बरनेश
सतत सुनशा दृग दिल में निसानियाँ।
(श्री) युगलअनन्य याते याही मद माँझ भोर
साँझ रहो मगन न और चाह आनियो।। १०५४।।

सन्त कबीरजी महाराज भी यही कहते हैं। नामनशा तो उतरने को नहीं। जहाँ लौकिक मादक वस्तुओं का नशा क्षण–क्षण चढ़ता उतरता रहता है– वहाँ नाम–नाशं दिनानुदिन बढ़ता ही जायेगा। श्रीनामक्षरों के दर्शन करो, अथवा नामानुरागी की दशा देख लो, तब नशा चढ़े, नामानुरागीके मुखसे नामोच्चारण सुनो तब नशा चढ़े, श्रीनाम का ध्यान करो, तब तक वह नशा तन को समाधिस्थ ही कर देता है। अपना अनुभव सुनाते हुए श्रीसन्तजी कहते हैं कि मैं तो उस नाम मदका प्याला पीकर उन्मत्त ही बन गया हूँ। श्रीनाम के प्रति तभी से संशय भगा। इसी नशे के स्पर्श से तो सदन कसाई और सुग्गे को नाम पढ़ाने वाली वेश्या तर गई। गूंगे के गुड़ खाने के समान, इस नशे का स्वाद हृदय जानता है। हृदय को जीभ हो तो कहे।

नाम अमल उतरै नहि भाई।
और अमल छिन–छिन चढ़ि उतरै, नाम अमल दिन बढ़ै सबाई।।
देखत चढ़ै सुनत हिये लागै, सुरत किये तन देत घुमाई।
पियत पियाला भये मतवाला, पायो नाम मिटी दुचिताई।।
जो जन नाम अमल रस चाखा, तर गइ गनिका सदन कसाई।
कहे कबीर गूंगे गुड़ खाया, बिन रसना क्या करै बड़ाई।।

श्रीराम–स्नेहीपंथ के सन्त श्रीरामजनजी भी इसी राग में अपना स्वर मिला रहे हैं। मैंने उस नाम जापक की दशा देखी है जो दिन–रात केवल श्रीरामनाम ही का उच्चारण करते रहते हैं। उन्हें मोह माया छू तक नहीं गई है। आठो पहर श्रीरामनाम के नशा को पान करते रहते हैं। त्रिगुणमय स्थूल शरीर को तो वे मानो भूल ही गये हैं। वह नशा उनमें सदा एकरस बना रहता है। कभी उतरता नहीं। मालूम पड़ता है दिन–दूना रात–चौगुना बढ़ता जा रहा हो। उनकी दशा देखकर मैं भी नाम–दिवाना बन गया हूँ।

संतो देखि दिवाना आया।
निसिदिन रामहि राम उचारै, जाके नही मोह नहि माया।
आठौ पहर राम रस पीवै, बिसर गये गुण काया।
अमल एक रस उतरै नाहीं, दूणादूण चढ़ाया।।

इधर श्रीदादूजी अलग नाम माधुरी पानकर मतवाले बन रहे हैं। आप सर्वशिरमौर रामनाम पर बलिहार हो रहे हैं। श्रीनाम का कौन कौन गुण गावें? दुस्तर संसार सागर से पार उतारें श्रीनाम, नरक निवारे श्रीनाम! श्रीनाम कभी तो अपनी छटा दिखाते हैं, कभी अपने तेज में मिलाते हैं, कभी हृदय में ज्योति जगा देते हैं। आप ऐसे एक सुखदाता नामामृत में अनुरक्त हो रहे हैं।

नाऊँ रे नाऊँ रे सकल सिरोमनि, नाऊँ रें मैं बलिहारी जाऊँ ते।
दूतर तारै पार उतारै नकर निबारै नाऊँ रे।
तारणहारा भव जल पारा, निर्मल सारा नाऊँ रे।।
नूर दिखावै, तेज मिलावै, जोति जगावै नाऊँ रे।
सब सुखदाता अमृत राता दादू माता नाऊँ रे।।

उधर भगवान गौरांग महाप्रभु से पूछिये। आप कहते हैं संसारी जन हमें चाहे जितना निन्दें, हम कुछ विचार नहीं करते हैं। जिसको मुख है वह जो चाहे सो कहो हम तो हरिरस मदिरा से मत्त हैं। कभी पृथ्वी पर लोट पोट होते हैं, कभी नाचते हैं, कभी सोते हैं। हम अपने आनन्द में मग्न हैं। हमको दूसरे के कहने–सुनने की कुछ परवाह नहीं है।

परिवदतु जनो यथातथायं, ननु मुखरो न ततो विचारयामः।
हरिरस मदिरामदेन मत्ता, भुवि विलुठाम नटाम निर्विशामः।।

जो नाम के रसिक हैं, जिन्हें असली रसास्वादन काकभी अवसर प्राप्त हो गया है वे तो फिर दूसरी ओर भूलकर भी नहीं ताकते! न उन्हें शरीर की कुछ परवाह रहती है न जगत् की। मतवाले शराबी की तरह, नाम प्रेम में मस्त हुए वे कभी हँसते हैं, कभी रोते हैं, कभी गाते हैं, कभी नाचते हैं, उने लिये फिर कोई अपना पराया नहीं रह जाता। वास्तव में ऐसे ही पुरुष नाम के प्रकृत भक्त हैं और इन्हीं लोगों के द्वारा किया हुआ नामोच्चारण जगत् को पावन कर देता है।

नाम महामदिरा मनमोहनि जे जन छकि छकि पीते हैं।
कोटिन कल्प विकल्प भए पर नशा जैन नहिं रीते हैं।।
झुकि झुकि रहे रहस राते दृग मृग मदमस्त अभी ते हैं।
युगलानन्य अमर पद पाये हर हमेश ही जीते हैं।। – श्रीनाम कांति

नामरुचि के लिये विपत्ति का स्वागत

सुख के माथे सिल पड़े, नाम हृदय से जाय।
बलिहारी वा दुःख के, पल–पल नाम रटाय।।

भगवन्नाम का स्मरण प्रायः विपत्तिकाल में ही हुआ करता है। जब मनुष्य के सब सहारे छूट जाते हैं, कहीं से कोई आशा नहीं रहती, किसी से कोई आश्वासन नहीं मिलता, जगत् के लोग मुखसे नहीं बोलना चाहते, निर्धनता, निर्जनता, आरोग्य हीनता और अपमान से मन घबरा उठता है, दुःखों की विषमयी ज्वाला से हृदय दग्ध होने लगता है, घर के मित्र, स्नेही और सुहृदों का एकान्त अभाव हो जाता है तब प्राण रो उठते हैं। हृदय खोजता है किसी शीतल सुरम्य वस्तु को जिसे पाकर उसे कुछ शीतलता, कुछ शान्ति प्राप्त हो सके। ऐसे दुःखसमयमें छटपटाते हुए व्याकुल प्राण स्वाभाविक ही उस अनजाने और अनदेखे हुए प्रियतम की गोदका आश्रय ढूँढ़ते हैं। ऐसे अवसर पर बड़े–बड़े शास्त्राभिमानी, शास्त्रार्थ में तर्क–युक्तियों से ईश्वर का खण्डन करने वाले, धन और पद के मद में ईश्वर को तुच्छ समझने वाले, विषयों की प्रमाद–मदिरा के अविरल पान से उन्मत्त होकर विचरने वाले मनुष्यों के मुँह से भी सहसा ऐसे उद्गार निकल पड़ते हैं कि हे राम! हे ईश्वर, तू ही बचा! तेरे बिना अब कोई सहारा नहीं है। ऐसे ही विपद्–संकुल समय में जिह्वा स्वच्छन्दता से भगवन्नाम का उच्चारण करने लगती है और ऐसे ही शोकमोहपूर्ण समय में मन और प्राण भी उसका स्मरण करने लग जाते हैं। इसी लोभ से तो माता कुन्ती ने भगवान् श्रीकृष्ण से विपत्ति का वरदान माँगा था। उसने कहा था 'हे कृष्ण! तेरा स्मरण विपत्ति में ही होता है। इसलिये मुझे बार–बार विपत्ति के जाल में डालता रहा!

तात्पर्य यह कि भगवन्नाम का स्मरण प्रायः दुःखकाल में होता है। दुःखी, अनाश्रित और दीन जन ही प्रायः उसका नाम लिया करते हैं। इसलिए कुछ लोग जो विषयों के बाहुल्य से मोह वश अपने को बड़ा बुद्धिमान, धनजनवान और सुखी मानते हैं, भगवन्नाम लेकर अपनी समझ से दुःखी और अनाश्रितों की श्रेणी में सम्मिलित होना नहीं चाहते।

❄ निष्काम साधकोत्तम ❄

हम बहुत बड़ी मूल्यवान् वस्तु को बहुत सस्ते दामों पर बेच देते हैं। सिर में मामूली दर्द होता है तो उसे मिटाने के लिये 'राम–राम' कहते हैं? सौ पचास रुपये की कमाई के लिए राम–नाम लेते हैं, स्त्री बच्चों की आरोग्यता के लिये रामनाम लेते हैं, मान बड़ाई पाने के लिए रामनाम कहते हैं, संतान सुख के लिए रामनाम कहते हैं। फल यह होता है कि हम रामनाम लेने पर भी कमाने के साथ ही लुटाने वाले मूर्ख समाज जहाँ के तहाँ रह जाते हैं। चलनी में जितना भी पानी भरते रहो, सभी निकल जायेगा। हमारा अन्तःकरण भी कामनाओं के अनंत छेदों से चलनी हो रहा है। कुछ ठहरता नहीं! रामनाम का फल कैसे हो? प्यास

लगी हुई है, जगत् में सुख की पिपासा नहीं है? पवित्र जलका भी झरना झर रहाहै। रामनाम के झरने का प्रवाह सदा ही अवाधित रूप से बहता है, परंतु हम अभागे उस झरने के आगे अंजलि, बाँधकर जल ग्रहण नहीं करते। हम उसके आगे रखते हैं हजारों छेदों वाली चलनी। जिसमें न तो कभी पानी ठहरता है और न हमारी प्यास ही बुझती है! सकाम भाव से लिये हुए नाम से भी नाम के असली फल आत्यन्तिक सुख से हम इसी प्रकार वंचित रह जाते हैं। प्रथम तो कोई रामनाम लेता ही नहीं और यदि कोई लेता है तो वह सकाम भाव से, धन, संतान, मान बड़ाई की वृद्धि के लिए लेता है। नियमानुसार फल में जहाँ का तहाँ ही रहना पड़ता है। परन्तु नाम की महिमा अपार है इसप्रकार लिये हुये नाम से फल तो होता ही है। सकाम कर्म की सिद्धि भी होती है और आगे चलकर भगवद्‌भक्ति भी प्राप्त होती है। जब मैं सकाम भाव से नामजप किया करता था तब कई बार मेरी विपत्तियाँ टली हैं, जिनके टलने की कोई आशा नहीं थी। मेरी केवल यह विपत्तियाँ ही नहीं टली, उसका और भी फल हुआ। नाम में रुचि बढ़ी और आगे चलकर निष्काम भाव भी हो गया। रामनाम का अंतिम परिणाम है श्रीजानकीरमण में एकांत प्रेम हो जाना। एकांत प्रेम होने के बाद प्रेममय के मिलने में जरा सा भी विलंब नहीं होता। जैसे ध्रुवको और विभीषण को राज्य की भी प्राप्ति हुई और भगवत्प्रेम की भी। इसलिये शास्त्रों में चाहे जैसे भगवन्नाम लेने के भी बड़ा उत्तम बतलाया है।

रामनाम गुन गुप्त धन, पावे हरिजन संत।
करे नहीं जो कामना, दिन दिन होय अनंत।।

कुछ लोग कह दिया करते हैं कि हमें तो नाम जपते बहुत दिन हो गये, कोई लाभ नहीं हुआ। पर ऐसा कहने वाले यदि अपने हृदय की ओर देखें तो उन्हें पता लगेगा कि उन्होंने सकाम भावों में नाम जपके फलको खो दिया है। निष्काम भजन हो तो निश्चय ही वह बहुत तेजी से बढ़कर साधक का शीघ्र कल्याण कर देता है।

इस जगत में सुखिया नामजापक ही है

जन्मत मरत जीव जग अगनित तिनमें सुखिया सोई है।
सकल दुराग्रह त्यागि दिवशनिशि रटते आखर दोई है।।
सपनेउ नहि परवाह किसी की दुर्मति भवभय खोई है।
प्रेमनलता सियराम नाम बिनु हितू न जाने कोई है।।
भजन करय भगवान सृष्टि सब भगवत के आधीना है।
भजन करत यह जानि संत शुचि बैठि इकंत प्रवीना है।।
भजन हीन नर दुखित रहहिं नित फिरहिं मलिन ज्यों दीना हैं।
भजन प्रभाव सुप्रेमलता जन पावत सुख अति पीना है।।
भजन करहिं मन मारि साधु जे ते सियवर के प्यारे हैं।
करत लगत सुख सकल लोक के निन्हि कहँ बेद पुकारे हैं।।

भजनानन्द लहहि इच्छित फल होत न कबहूं दुखारे हैं।
प्रेमलता प्रिय सबहि संत ते अपर फिरहि जग मारे हैं॥
श्री सियारामनाम मुख रटना भजन इसी को कहते हैं।
अपर अर्थ करि भजन शब्द को भ्रमदायक उर दहते हैं॥
तर्क वितर्क त्यागि जे नामैं धरि अनन्य मति गहते हैं।
प्रेमलता लय लाय रटत नित परम सुखी सोइ रहते हैं॥
पल—पल में जो होत परम सुख सो न बखाना जाता है।
जीवत ही भये मुक्त नाम रटि रसिक त्यागि जग नाता है॥
अटहि सुखेन इष्ट धामादिक ठाट फकीरी भाता है।
दरसत तुच्छ अमीरी का सुख तेहि सुख सम न तुलाता है॥
नामहि की करुना लवलेश से होता हजार करोर महामुद।
काम कषाय रहे न कहीं फिरि मोह रु कोह करे न जरा तुद॥
आठहू याम सुदामहि फेरिये सिघ्र नसे विष वासना को छुद।
युग्म अनन्य अकाम भये पर जानकी जीवन आय मिले खुद॥

पेखिये प्रत्यक्ष स्वच्छ अक्ष खोलि आप ही से
नाम जो न रटे ताको अखिल अगम है।
वाको दुरलभ तीन काल में सुगति मीत
बिना मोल मूजी सो विकाय हाथ जम है॥
नाम नेह वानन के मौज छन छन नित्त
वित्त वर पाय सपनेहू में न गम है।
युगल अनन्य प्रीति परम पुनीत पर
नाम के अधासर सुख सकल सुगम है॥ २०४३॥

कहिये बुझाय टुक मोहूँ संग मूढ़ मन
कपट कलंक छावनीन अव छाइये।
लोक माहि मान परलोक सुखखान दोउ
नाम के अधीन ताते खूब ताहि गाइये॥
जानि तोहि आपनो सनेही साँचो सीख देऊँ
मानैगो जो मीत तौ अभीत सरसाइये।
युगल अनन्य जनि भूलिये भरम मग
कौन सुख स्वाद जो न नाम जपि पाइये॥

'नानम दुखिया सब संसारा। सुखिया केवल नाम अधारा।'

नाम—जापक—महत्त्व

श्रीमार्कण्डेय पुराण में भगवान् वेदव्यासजी श्रीसूतजी से कहते हैं—वह कुल धन्य है जिसमें प्रभुके प्यारे सत्यसंकल्प रामनाम जप तत्पर पुत्ररत्न उत्पन्न होते हैं।

धन्य कुलवरं तस्य यस्मिन् श्रीराम तत्परः।
जायते सत्यसंकल्पः पुत्रः श्रीशेषवल्लभः।।

श्रीदक्षस्मृति में कहा गया है कि जहाँ परमपावन श्रीरामनाम—जापक उत्पन्न होता है, वह कुल धन्याति—धन्य है और धन्यहैं माता—पिता।

धन्या माता पिता धन्यो धन्याद्धन्यतमं कुलम्।
यत्र श्रीरामनाम्नस्तु जापको जायते शुचिः।।

श्रीधर्मराज स्मृति में कहा गया है कि जहाँ श्रीरामनाम जप में संलग्न महापुरुष निवास करते हैं, वह स्थल, वह देश धन्य है। साक्षात् श्रीसाकेतधाम ही के समान उसे समझना चाहिए।

स वै धन्यतरो देशः साक्षाच्छ्रीधाम सन्निभः।
यत्र तिष्ठन्ति श्रीरामनाम संलाप नैष्ठिकाः।।

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुनजी से कहते हैं कि नाम—जापक यदि नीच वर्ण का है तो भी श्रीराघवजू उससे इतनी प्रीति करते हैं, जितनी गुणातीत सन्त से भी नहीं करते।

नामयुक्ता जनाः पार्थ जात्यन्तर समन्विताः।
प्रीतिं कुर्वन्ति श्रीराम न तथा नष्ट षड्गुणाः।।

श्रीवशिष्ठ रामायण में श्रीमुख वचन है जो जितेन्द्रिय होकर मेरा नाम—स्मरण करता है, उससे बढ़कर ब्रह्माण्ड भर में मुझे प्रिय नहीं हैं

मन्नाम संस्मरेद्यस्तु सततं नियतेन्द्रियः।
तस्मात् प्रियतमः कश्चिन्नास्ति ब्रह्माण्डमण्डले।।

मम प्रसन्नता हेतु मोर ये द्वादश भक्ति प्रधाना है।
नवधा दशधा परा सुप्रेमा वेद पुराण बखाना है।।
इक इक के बहुभेद बखानत जानत सन्त सुजाना है।
'प्रेमलता' पै नाम जापकनि समन मोहि प्रिय आना है।।
सोवत जागत उठत परात सुनाम रटन जेहि लागी है।
तेहि समान तिहुँ लोक न दूसर पुण्यमान बड़भागी है।।
पूजनीय शुचि संत सनेही प्रभुप्रिय सोई मति जागी है।
प्रेमलता सोई गुणी गनी बुधज्ञानी सोई वैरागी है।।

जानकी जीवन को सोइ प्राणप्रिय है।
जाके नहिं आस विश्वास अभिलाष लोक
रंजना रुचत एक नाम सियपीय है।
देह गुजरान जैसे तैसे करै मान बिन
खान पान सरस सोहात नहि हीय है।।
बसै इष्टधाम अभिराम गुण गावै सदा
परसे न भूलिहू कदापि वित्त तोय है।
युगल अनन्य मोसे खालन को कौन गनै
जानकी जीवनजू को सोइ प्राणप्रिय है।। ९९०।।
अन्त समे रामनाम बारक कहत जौन
तौन जन जात अनयास परधाम है।
साधन समूह आस दास पन जग भास
मिटत कलंक काश पास दुख रास है।।
अहो भाग रटत रहत एकरस जोइ
सोई है अदाग रागरस शुचि वास है।
युगल अनन्य नाम निरत सुजन नित्य
जानकी–जीवन प्राणप्रीतम सुदास है।। २६०५।।
सीताराम परम परात्पर नाम सुख
सार सद धाम जौन जीह जक लाय जप।
कारक हमेश भव वारक विोष ताको
अनयास कटत कलेश रो गसोक तप।।
जानकीविहारी छबिकारीजू को प्राणप्रिय
होत सो सदैव सानुकूल दल छाड़ि छप।
युगलअनन्य नाम कीरतन आठो याम
उचित विहाय वद वाद अपवाद दप।।

शिव सिद्धान्त नामक ग्रंथ में भगवान् शंकर जी कहते हैं कि हिमालय और विन्ध्याचल के मध्य भाग आर्यावर्त निवासी श्रीरामनाम उच्चारण करने वाले परम भागवत माने जाते हैं और मेरे लिये तो ऐसे नाम जापक प्राणों से बढ़कर प्रिय हैं।

हिमवद् विंध्ययोर्मध्ये जना भागवता: मता:।
उच्चारयन्ति श्रीरामनाम प्राणात्प्रियं मम।।

श्रीवैष्णवस्मृति में कहा गया है कि जो सोते खाते, उठते, बैठते, चलते सदैव रामनाम जपते रहते हैं, उन्हें बार–बार प्रणाम है।

स्वपन् भुञ्जन ब्रजंस्तिष्ठनुश्ठंश्च वदंस्तथा।
यो वक्ति रामनामाख्यं मन्त्रं तस्मै नमो नमः।।

श्रीआदि रामायण में भी यही बात कही गयी है कि इस भूलोक में जो सतत् नामगान करते रहते हैं, उनके लिये बार—बार नमस्कार है।

गायन्ति रामनामानि सततं जे जना भुवि।
नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यः पुनः पुनः।।
जहँ तहँ जायँ नाम जापक तन तहँ तहँ परमानंद पावैं।
पावन करैं सुनाय नाम धुनि पतितनि कहँ चहुँ श्रुति गावैं।
दरश परस जिन्ह कर शुभदायक बचननि में रस बरसावैं।
प्रेमलता कृतकृत्य होयं ते जे नामिनि पद शिर नावै।।

श्रीआदि रामायण में श्रीमुख वचन है कि मेरे नाम कीर्त्तन से आनन्दमग्न रहने वाले मानव पुण्यवानों में शिरमौर हैं। उनके चरण रज से यह वसुधा भी पावन बन जाती हैं।

मन्नाम कीर्त्तने हृष्टो नरः पुण्यवतां वरः।
तस्यापि पाद रजसा शुद्धयति क्षिति मण्डलम्।।

धर्मराज स्मृति में स्वयं महाभागवत श्रीधर्मराजजी कहते हैं कि ध्याननिष्ठ रामनाम जापक को देखते ही मैंउनके सत्कार में स्नेह पूर्वक उठकर खड़ा हो जाता हूँ।

दृष्टवा श्री रामनाम्नस्तु जापकं ध्यान तत्परम्।
अभ्युत्थानं सदा स्नेहात् करिष्येऽहं सदा मुने।।

गार्गीय संहिता में भी श्रीधर्मराज अपने यमदूतों को आदेश देते हुये कहते हैं कि हम लोग नामप्रेमी सज्जन के गुणगान करते रहते हैं तथा नाम जापक के चरण सेवक अपने को मानते हैं। क्योंकि श्रीरामनाम ही के प्रभाव से ब्रह्मा सृष्टि करने में, श्रीविष्णु पालन करने में तथा श्रीशंकर जगत के संहार करने में समर्थ हुए हैं। अतः खबरदार दूतो! जिस घर में नाम कीर्त्तन होता हो, वहाँ से सावधान होकर दूर—दूर रहना।

वयं सदा नामसुहृद्द् गुणेरता स्तथैवतज्जापक पादसेवकाः।
प्रभावते यस्य हरीश ब्रह्मा विभर्ति विश्वं सलयं ससम्भवम्।।
तस्मात् प्रमादमुत्सृज्य दूरतः किंकरास्सदा।
श्री रामनाम सम्पन्ने गृहे गच्छन्तु नैव हि।।

श्रीवात्स्यायन संहिता कहती है कि श्रीरामनाम समस्त जगत् के आधार हैं, अखंड सर्वेश्वर हैं, इस कलिकाल में जो इनका सादर जप करते हैं, वे धन्य हैं, पूजनीय हैं। उनके लिये कहीं कभी कोई भय नहीं रहता। मैं सत्य कहता हूँ। मेरी बात को अन्यथा न मानना।

समस्त जगदाधारं सर्वेश्वरमखण्डितम्।
रामनाम कलौ नित्यं ये जपन्ति समादरात्।।

ते धन्याः पूजनीयाश्च तेषां नास्ति भयं क्वचित्।
सत्यं वदामि विप्रेन्द्र नान्यथा वचनं मम।।

मत्स्यपुराण में कहा है कि श्रीरामनाम स्मरण निष्ठ सज्जनके नामस्मरण करने से महान पापी भी सर्वपातक मुक्त हो जाता है तथा अभिलाषित मनोरथ पाता है।

नामस्मरणनिष्ठानां नामस्मृत्या महाघवान्।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो वाञ्छितार्थं च विन्दति।।

श्रीआदि पुराण का श्रीकृष्ण वचन है कि श्रीरामनाम में निरत रहने वाले ही श्रीरामचन्द्रजू के भावुक भक्त हैं। ऐसे भक्त के दर्शनों से रसात्मिका भक्ति प्राप्त होती है।

रामानामरता ये च ते वै श्री राम भावुकाः।
तेषां संदर्शनादेव भवेद् भक्ती रसात्मिका।।

श्रीआदि रामायण में कहा गया है कि जब तक श्रीनाम जापक रामभक्त के सतत चरण सेवा न करोगे, तब तक तुम्हारे सुख से इस परमदुर्लभ रामनाम का उच्चारण होगा कैसे?

यावन्न राम भक्तानां सततं पाद सेवनम्।
रामानाम्नः कथं तेषां मुखादुच्चारणं भवेत्।।

ऐसे विशुद्ध नाम जापक संत प्रभु कृपा से ही मिलते हैं—

जेहि पर कृपा करहिं प्रभु पूरन तेहि कहँ संत मिलाते हैं।
परम विशुद्ध नामरस माते जे उर कमल खिलाते हैं।।
जिन्ह कर सेवा संग रंग लहि खलगगहू पिघलाते हैं।
प्रेमलता दै नाम सुधा श्रुति जीवत मुये जिलाते हैं।।
नामी नाम प्राण प्रिय जिन्ह कहँ ते जानहु प्रभु प्यारे हैं।
रटहि नाम निज अरु नामिनि पर तन मन धन सबु बारे हैं।।
तिन्ह के सुकृत समूह लिखत शिव शेष गणेशहुँ हारे हैं।
प्रेमलता नामिनि के सेवक नामिनिहूँ ते भारे हैं।।

यहाँ नामिनि का अर्थ नाम जापक समझना चाहिये। श्रीमुख वचन है कि—

नाम जापकनि की सेवा सम अपार न प्रिय मोहि कोई है।
पुरवहुँ मैं तिन्ह के सुमनोरथ भावत मन जोई जोई है।।
नाम सनेही—नेहिनि के हित राखहुं नहि कछु गोई है।
प्रेमलता अस जानि सेउ नित नामिनि के पग दोई है।।
बिनु समुझे नर पचत मूढ़ बहु नाना विधि दुख पावत है।
मम हित अमित उपाय करत नहिं नामिनि के पग ध्यावत है।।
कर्म धर्म जप योग यज्ञ व्रत तेहि बिनु मोहि न भावत है।

प्रेमलता अस जानि सेउ नित जे मम नामहि गावत हैं।।
सेवा संग रंग नामिनि कर कामिनि कहँ गति दायक है।
बड़भागी रटि नाम सुसेवहि नामिनि पद सब लायक है।।
रक्षा करहिं सदा नामिनि की सियवर धरि धनु शायक है।
प्रेमलता तजि आस त्रास भजु नामहि सबके नायक है।।
संत रहै अलमस्त जगत में रामनाम गुन गाते हैं।
रिद्धि सिद्धि सुख संपति सादर संग चले जित जाते हैं।।
भक्ति ज्ञान वैराग्य बोध कर जीवों को सिखलाते हैं।
प्रेमलता करि संगति जिन्ह की पापिउ मुक्ति सुपाते हैं।।

श्रीआदि पुराण में भगवान् श्रीकृष्ण अपने सखा श्रीअर्जुन से कहते हैं कि नाम जापकों को देखकर, उनके प्रति जो आदर दृष्टि रखता है, वह परमधाम प्राप्त कर, श्र्ज्ञीरघुलालजू के साथ परमानंद लूटता है। पुन: नाम जापक को देखते ही उन्हें प्रणाम करने वाला; इतने सत्कर्म से सब पापों से मुक्त हो जाता है। नाम जापक के दर्शनों से जिसका हृदय श्रद्धा से स्निग्ध हो जाय, वह परमानन्द सिन्धु परम साकेत धाम को जाता है।

नामयुक्ता ञ्जनान् दृष्ट्वा यः पश्यते सादरं सखे।
स याति परमं स्थानं रामेण सह मोदते।।
नामयुक्ताञ्जनान् दृष्टवा प्रणमन्ति च ये नराः।
ते पूतास्सर्व पापेभ्यः कर्मण तेन हेतुना।।
नामयुक्ताञ्जनान् दृष्टवा स्निग्धो भवति यो नरः।
स याति परमं स्थानं परमानन्द सागरम्।।

रामनाम जप से प्रज्ञाचक्षु प्राप्त परमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज की सिद्ध वाणी प्रमाणिक है। आप नाम जापक के सेवको कों प्राप्त होने वाले लाभ इस प्रकार बताते हैं।

नाम रसिक संतनि कहँ जो कोइ भोजन बसन सुदेते हैं।
बड़भागी ते जीव जगत में जीवन को फल लेते हैं।।
तन मन धन करि देत समर्पन संतनि हित जु सहेते हैं।
प्रेमलता परिवार सहित ते बसहि जाइ साकेते हैं।।
कोटिनि भजन तीर्थ जप तप ते अधिक संत सेवकाई।
चहुं युग चहुँ श्रुति विदित बात यह त्रिभुवन दशदिशि छाई है।।
नाम रसिक जन सेइ परम गति रति मति के न सुपाई है।
प्रेमलता संतनि की महिमा मुख ते जाते न गाई है।।

नाम रसिक संतनि की सेवा करन चहै जब कोउ मन में।
निकसि निकसि तेहि पितर निरय ते होइँ सुखी अति तेहि छनमें।।
कोटिनि पातक नसहिं होइ जब प्रीति प्रतीति सुहरिजन मैं।
प्रेमलता सुचि साधु सुमहिमा लखहि न जे रत तन धन में।।

ब्रह्म बधादिक पाप प्रबल जे घोर नरक के दानी हैं।
सेवत नाम रसिक संतनि पद पावहिं सब अध हानी है।।
परहि न ते भवकूप जीव जे संत संग रति मानी है।
प्रेमलता दोउ लोक परम सुख लहहि सु रहित गलानी है।।

एक तो श्री सियाराम उपासक नाम रसिक पुनि शृंगारी।
वीतराग संयमी साधु शुचि निष्किंचन इच्छाचारी।।
तिन्ह कर सेवा महल टहल प्रद रमत जहाँ प्रीतम प्यारी।
प्रेमलता सच्चिदानंद दोउ बदत वेद महिमा भारी।।

नाम जापक के रक्षक

जाके रक्षक नाम हैं श्री सियाराम समेत।
ताकी रक्षा करहिं सब जड़ चैतन्य सहेत।।
जड़ चैतन्य सहेत देत जो चाहत साई।
करे निरादर तासु तिहूँ पुर अस नहिं कोई।।
रटहि नाम बसुजाम कामप्रद सिंधु सुधा के।
प्रेमलता श्रुति शेष बखानहिं गुनगान जाके।।

रामरूप धनुवान धारि कर रक्षा में नित रहते हैं।
शिव त्रिशूल धरि ब्रह्म दंड कर विष्णु चक्र नित लहते हैं।।
नारायण धरि गदा कौमुदी जापक के रिपु दहते हैं।
प्रेमलता हनुमान मनोरथ पुरबहि जो कछु चहते हैं।।

सियजू भोजन देइँ शक्ति सब करैं जाइ शिर पर छाया।
दानव देव भूत किन्नर पशु पच्छी जो जगमें जाया।।
प्रेमलता तेहि भजहि न जड़मति पाय अनूपम नरकाया।

ब्रह्म सृष्टि महँ जीव जहाँ लगि जड़ चैतन्य अपारा है।
दानव देव नाग मुनि किन्नर विष्णु आदि अवतारा है।।
शिव विरंचि श्रुति शेष शारदा योग लगन तिथि वारा।
रक्षा करहिं नाम जापक की बाँधि कमर हथियारा है।।
इन्द्रादिक दिकपाल काल यम भूत प्रेत सह दारा है।
दुर्गा दिशा दिवशनिशि निशिचर भय दायक बलभारा है।।
हनुमदादि कपि रीच्छ पशु खग पंडित मूढ़ गँवारा है।
रक्षहि तिन्हें सकल मिलि सादर रटहिं जे आखर चारा है।।
सकल ठाम सब भाँति सर्ब के नाम सुसदा सहायक हैं।
भाव कुभाव अनख आलसहू रटत सकल सुखदायक हैं।।
परमानंद प्रकाशक उर–पुर कोटि अमंगल घायक हैं।
शरणपाल सुठि सुलभ सरल शुचि सर्वेश्वर सब लायक हैं।।

बाधक खण्ड

अशुद्ध अन्न और अति अहार

श्रीराम साधकों के लिये सबसे बड़ा बाधक है अन्न दोष। खाद्य वस्तुओं में १. जाति दोष, २. निमित्त दोष, और ३. आश्रय दोष–तीन प्रकार के दोष भरे होते हैं।

मछली, मांस, लहसुन, प्याज खाने से हृदय में तमोगुण की वृद्धि होकर हिंसादि कुकर्मों में प्रवृत्ति होने लगती है। उसी भाँति मरुआ, कोदो, कौनी आदि कदन्न बुद्धि मलीन करते हैं। गाजर, सलजम, बँधा गोभी आदि साक भी बुद्धि मंद करने वाले होने से इनका सेवन शास्त्र वर्जित है। इस सब अखाद्य वस्तुओं में जो स्वरूपगत दोष हैं, वे जाति दोष कहाते हैं।

खाद्य वस्तुओं को देने वाले में यदि पुत्र, कलत्र, धन की प्राप्ति, रोग निवारण, मृतक–सद्गति आदिकों की कामना हुई तो वैसे अन्न भक्षण करने वालों का भजन, दाता की कामना पूर्ति में नष्ट होता है। इस प्रकार के सूत्रों से प्राप्त अन्न में निमित्त दोष भरा रहता है।

राजा, वेश्या, चोर, डाकू, हिंसक आदि रजोगुणी तमोगुणी व्यक्तियों के यहाँ के अन्न आश्रय दोष से दूषित होते हैं। अतः शास्त्र द्वारा निषिद्धि बताये गये हैं।

उपर्युक्त तीनों दोषों से वर्जित अन्न ही शुद्ध माने जाते हैं। दोषरहित अन्न खाने से हृदय निर्मल होता है। निर्मल हृदय से ही इष्टदेव की अखंड–स्मृति सम्भव है। कहा भी है कि आहार शुद्धि से अन्तःकरण की शुद्धि तथा अन्तःकरण शुद्धि से अखंड स्मरण बनता है।

"आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः सत्त्वः शुद्धौ ध्रुवा–स्मृति।"

अशुद्ध अन्न श्रीठाकुरजी को भोग लगाकर, लोग उसे भगवत्प्रसाद मानकर शुद्धान्न मान लेते हैं, परन्तु सर्वज्ञ अशुद्ध अन्न भोग लगाते ही नहीं। भक्त–गाथाओं से यह बात स्पष्ट होती है। यदि प्रभु अर्पित वस्तु को शुद्ध मान भी लें तो वैसे अन्न की आंशिक शुद्धि ही मानी जायेगी। हाँ यदि सन्त प्रत्यक्ष पा लें तो उनका उच्छिष्ट प्रसाद पूर्ण निर्दोष हो जाता है। अतः केवल संत शीथपर ही शरीर निर्वाह करने वाले का हृदय सद्यः शुद्ध बन जाता है, तथा भजन का चमत्कार अविलंब प्रगट होने लगता है। कई स्थानों से प्राप्त चुटकी, या मधुकरी में अन्नदोष नाम–मात्र के रहते हैं।

यह तो हुई अन्नदोष तथा उनसे बचने की युक्ति। भोजन तब भजन बाधक होता है जब वह अधिक मात्रा में खाया जाय। अधिक खाने वाले, आलसी, रोगी, अल्पायु तथा मंद–बुद्धि बन जाते हैं। नाम–जापक को स्वाभाविक आहार घटाकर, एक तिहाई भोजन मात्र रखना चाहिये। श्रीसीतारामनाम अभ्यास प्रकाश में

श्री बड़े महाराज आदेश देते हैं। "शिष्य! प्रथम तो सब व्यवहार त्यागि के चालीस दिन या भाँति दृढ़ निश्चय सहित अनुष्ठान करो। धीरे-धीरे भोजन लघु करि देखो। इहाँ तक के तीन भाग में एक भाग रहि जाय, परन्तु भोजन शुद्ध, हलका, चिकनाई समेत होय। जल भी थोड़ा पान करो। शरीर की कृशता तरफ न ताके, परम उत्साह समेत प्रभु प्रमोद के तरफ दृष्टि राखे रहो।" मूल महावाणी। इस सम्बन्ध में महात्मागाँधी के वचन भी विचारणीय है।

महात्मा गांधी कहते हैं जो सब इन्द्रियों का पूर्ण संयम करना चाहता है, उसे अन्त को शरीर क्षीणता का अभिनन्दन करना पड़ेगा। जब शरीर का मोह और ममत्व क्षीण हो जायेगा, तब शरीर-बल की इच्छा रही नहीं सकती।

मेरा अनुभव तो ऐसा है कि जिसने स्वाद को नहीं जीता, वह विषय को नहीं जीत सकता। स्वाद का जीतना बहुत कठिन है, परन्तु इस विजय के साथ ही दूसरे विजय की सम्भावना है।

श्रीदेवस्वामी के मत से स्वाद-लोलुप साधक श्री श्रीनामजप नहीं होने को। विचारना चाहिये आखिर जीभ तो चाम-मात्र है। इसके सहायक दाँत केवल हड्डी तो है। जिस खाद्य वस्तु में जितना ही अधिक स्वाद होगा, उससे बने मल में भी इतनी ही अधिक दुर्गन्ध होती है, जो स्वाद का अन्तिम दुर्गन्धमय परिणाम लखाने वाले हैं। यद्यपि दाँत के द्वारा बार-बार यह कटती रहती है। परन्तु फिर भी चटोरापन नहीं छोड़ती। जीभ का पर्यायवाची शब्द है रसना। रसना शब्द का अर्थ है रस को जानने वाली, सो यह मिथ्या स्वाद में अरुझी है। इसे स्वउदही चाहिये तो मिथ्या विषय स्वादको छोड़ नाम-महारस का पान क्यों नहीं करती? उस स्वाद के सामने देवलोक का अमृत भी फीका है। नाम-रसिक सन्तों से जब रहस्य समझे तो जीभ असली स्वाद के लिए यत्नवान हो।

**जीभ चटौरी चाट चटेगी, काहे को राम को नाम रटैगी।
हाड़ सहाय आप खुद चमड़ी, जड़ तारु सों जाय सटैगी।।
छन सवाद पाछे जो गंदा ऐसन सों न हटी न हटैगी।
दगाबाज औ वैरी जन सो बार-बार यह सदपि कटैगी।।
तदपि चखे रस चाखन ही को याकी चाह बढ़ी न हटैगी।
रस न जान याही ते रसना नाम अरथ गति यही अटैगी।।
यह अपराधिनि सजा हमारी बद बदरी कब दैव फटैगी।
नाम महारस जिनके आगे देव सुधाहु दूर छटैगी।
रसिकन सों इतनों जब जानै तबही रसकी मजा पटैगी।।**

पुनः श्रीबड़े महाराज स्वल्पाहार से दश महान् गुण की संभावना बताते हैं–

१. स्वल्पाहारी में आलस्य, प्रमाद तथा निद्रा क्षीण हो जाती है। शरीर में स्फूर्ति, भजन में उत्साह बढ़ता है तथा यथेच्छ जागरण सधता है।

२. स्वल्पाहारी के शरीरगत रोग शरीर की क्षीणता के साथ क्षीण हो जाते हैं। बल से रोगमुक्त होना चाहे तो वह भी सुकर हो जाता है। यदि निष्काम भजन करें, तौ भी रोग ऐसे दबे रहेंगे कि भजन में बाधा नहीं कर पायेंगे। अतः स्वल्पाहारी वैद्यों के चक्कर नहीं पड़ते हैं।

३. स्वल्पाहारी में भजन–जन्य परमानन्द अविलम्ब अनुभूत होने लगता है।

४. स्वल्पाहारी में मलमूत्र का वेग प्रबल नहीं हो पाता। अतः शरीर स्वच्छ रहता है।

५. स्वल्पाहारी को भोजन–संग्रह में अधिक समय नहीं गँवाना पड़ता है। भोजन चबाने में भी समय की बचत हो जाती है।

६. भोजन की मात्रा जितनी अधिक बढ़ाओ, उसी अनुपात में भोजनदाता की पराधीनता बढ़ेगी। स्वल्पही भोजन से लापरवाह रहने के कारण किसी जीव के पराधीन नहीं रहते।

७. स्वल्पाहारी के शरीर क्षीण होने पर पशुबल छ्नटकर, दैवीबल बढ़ता है। शारीरिक निर्बलता के साथ विषयेन्द्रियाँ निर्बल पड़ जाती है। अतः इन्द्रियदमन सुकर हो जाता है।

८. स्वल्पाहारी में काम–विकार शिथिल पड़ जाता है।

९. पेट में भोजन वाला वजन कम रहने से आप सुखपूर्वक एक आसन से मनमाने काल तक बैठे रहिये। आसन अचल बना रहेगा।

१०. स्वल्पाहारी के जहाँ शारीरिक रोग श्रीण होते हैं, वहाँ काम, क्रोध, लोभ आदि मानस रोग भी घट जाते हैं। शम दम सम्पन्न सज्जन को शोक कहाँ?

अलप अशन माहि दश गुन जानियो।
आलस प्रमाद नींद बैद की अधीनताई
रंचक न होय महामोद पहिचानियो।
सदा तन स्वच्छ व्यर्थ काल न विहात
पराधीनता बहुत चाह भूलि हूँ न आनियो।।
करन निवल मनमथ हूँ नसात तिमि
आसन अचल रोग सोग दूर ठानियो।
युगल अनन्य सावधान सदा रहो नित
अलप अशन माँहि दश गुन जानियो।।

अधिक खाने वाले की आयु का अधिक समय भोनज सामग्री जुटाने में ही बीत जाता है। वह सर्वदा अपने शरीर के पालन–पोषण की खटपट में लगा रहता है। अधिक आहार से छः गुणोंके नाश होते हैं। १. भजन के रहस्य का अनुभव नहीं होता, २. दूसरी बातों का स्मरण नहीं होता, ३. दया, धर्म में कमी आ जाती है, ४. आलस्य बढ़ जाता है, ५. भागों की आसक्ति बढ़ जाती है, ६. सर्वदा खाने और मल त्यागने की खटपट लगी रहती है।

त्यागने की खटपट लगी रहती है।

पारसमणि के सप्तम उल्लास को दूसरी किरण में कहा गया है। जो अपने उदरका विशेष पोषण करता है, उसके लिये दिव्य देश का मार्ग नहीं खुलता है। आहार की अधिकता से हृदय मृतक हो जाता है। आहार–संयमी का हृदय उज्ज्वल होता है और कोमल। भूखे और नंगे रहने वालों को निसन्देह भगवान के दर्शन होते हैं। भूख के द्वारा चपल मन का स्वाभाविक निग्रह हो जाता है। भूखे रहने पर धैर्य और सहनशीलता प्राप्त होते हैं। आहार संयम से व्यर्थ वचन और काम की प्रबलता दूर होती है। स्वप्न दोष नहीं होने पाते। शरीर निरोग रहता है। निश्चिन्तता और भजन का आनन्द बढ़ता है। हृदय धर्म उदार बन जाता है।

अधिक शयन

तीसरा बाधक है अधिक शयन। नाम जापक यदि निद्रा जीत सके तो उसमें भजन का चमत्कार शीघ्र उदित होता है। यदि नींद का सर्वथा त्याग संभव नहीं हो, तो नाम जापक को दो तीन घंटे से अधिक कदापि नहीं सोना चाहिये। अधिक सोने से आलस्य प्रमाद आदि तमोगुण की वृद्धि, बुद्धि मंद, आयु क्षीण; देव दुर्लभ अमोल मानव जीवन का दुरुपयोगनाम रटन का समयाभाव, भावना में अनुभवहीनता आदि अनेक दुर्गुण आ जुटते हैं।

सैन याम अधिक किये से सुखासार बीच
परत विशेष ताते जागनोई सार है।
सीताराम नाम बिना वैन व्यवहार बीज
बोलत उपाधि नाम मध्य टकसार है।
लौकिकी कलाम खाम वाम बदनाम संग
त्यागिये तमाम तम असम असार है।
युगल अनन्य अलसाय दिसि दूसरी से
शौक सजवाय नाम जपो सुखासार है।।

श्रीपारसमणि में लिखा है कि रात्रि का जागरण ही भजन, ध्यान और विचार का बीज है। श्रीबड़े महाराज कहते हैं जग कर नाम रटने से रात ठीक ही परमानन्द दायिनी तथा चित्त में शान्ति देने वाली बन जाती है। काम, अहंकार आदि निःशेष रूपसे मिट जाते हैं। उसे दिव्य कनक–भवन में मानसिक स्थिति अनायास ही सुलभ हो जाती है। अतः सभी मत मतान्तरों से हटकर श्रीनाम सरकार की अनन्य शरण ग्रहण करा लें। श्रीनामही श्रीनाम–स्नेह को निवाहते हैं।

रैन महामुद दैन सही चित्त चैन निधान सुनाम उचारत।
मैन मदादिक लेश रहे नहिं ऐन निवास लहे गत आरत।।
जैन जमात समान सभी मत मानि के छोड़िये लोक कहावत।
युग्म अनन्य रती हूँ नही शक आपहि नाम सनेह निवाहत।।१०७८।।

श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि नींद सब प्रकार से निन्दनीय है। साधक का सर्वनाश करती है। अतः इसे भली प्रकार जीतना ही योग्य हैं। निद्रा जीतने पर ही भजन भावना का एकरस अघट स्वाद सरसने लगता

है। अतः अपने मन में यह निश्चय विश्वास करें कि हम जहरीली तथा जड़ता बढ़ाने वाली नीन्द हो जीते बिना परमानन्द दुर्लभ है। नीन्द जीतकर अखंड नाम–स्मरण करे तो सभी अनिष्ट स्वतः मिट जायेंगे।

नींद निन्द्य निज नाश हेत हिय समुझि भली विधि जीतो।
भजन भावना स्वाद एकरस तब सरसाय अरीतो।।
बिना विजय जड़ जहर नींद नहि मोद प्रमोद प्रतीतो।
युगलानन्यशरन सुमिरन से विनसत अखिल अनीतो।। ६३।। श्रीनाम कांति

असंयत बोल

नाम–जप का चौथा बाधक हैं अधिक बोलना। पापों के तीन विभाग माने जाते हैं।

१. कायिक–शरीर के अंगों से बनने वाले २. मानसिक हृदय में परिहिंसादि नाना प्रकार के पापों का चिन्तन तथा पाप करने का संकल्प ३. वाचिक–वाणी द्वारा संभूत ताप।

किसी भी पातकी के पापों का विश्लेषण किया जाय तो उनमें वाचिक पाप ही आधे से अधिक सिद्ध होंगे। अतः वाणी के संयम से आप बहुत अंशों में पापों से बच सकते हैं। ऐसे तो वचन से होने वाले अनेक दोष हैं, परन्तु पारसमणि के मत से पंद्रह दोष प्रधान हैं। उनका व्योरा नीचे दिया जाता है।

१. बिना प्रयोजन बोलना निन्दनीय है। जिस वचन से न तो अपना स्वार्थ सिद्ध होता है, न परमार्थ, न दूसरे का हित, ऐसे वचन से सत्त्वगुण का सुख नष्ट होता है। ऐसे वचन बोलने में कितना नाम–जप छूट जाता है? सबसे बड़ी हानि यही है।

२. मिथ्या बोलना– "नहि असत्य सम पातक पुंजा" लड़ाई झगड़े की चर्चा दुराचारी पुरुषों के व्यवहार की आलोचना, आदि वाचिक पाप कभी मिथ्या भाषण के समान ही अनर्थकारी है। ऐसे अवसर पर मौन रहना ही हितकर है।

३. किसी की बात का खंडन करना उचित नहीं। कोई झूठा भी कह रहा हो तो आप सुनकर चुप रहें खंडन से उसे क्लेश होगा। कलह बढ़ेगा। वाद–विवाद बढ़ेगा।

४. भूमि तथा धन के लिए झगड़ा करना तथा पंचायती या कचहरी का आश्रय लेना निन्दनीय है। जापक तो स्वेच्छापूर्वक धन तथा भूमि का त्यागकर देते हैं।

५. मुख से दुर्वचन, अश्लील शब्द, किसी को गाली देना दोषावह है।

६. किसी को धिक्कारना–इसमें नाम–जापक की शोभा नष्ट होती है। उसकी जगह नामोच्चारण अधिक हितकर है।

७. किसी स्थूल शरीरधारी के हाड़–माँस मलमूत्र से भरे हुये घृणित शरीर के रूप–सौन्दर्य की चर्चा, लौकिक श्रृंगार सम्बन्धी कविता करना, आदि दुर्गुणों से मनमें कामविकार जगता है। भगवान् संत की स्तुति उससे अच्छाहै और उससे भी अच्छा ऐसे वचन के बदले नाम ही रटना।

८. हास विनोद मय वचन बोल कर अपने तथा दूसरे को प्रसन्न करना। इससे आयु का अमोल समय व्यर्थ जाता है, हृदय अंधकारमय हो जाता है तथा जापक की गंभीरता नष्ट होती है। अपनी नीच स्थिति तथा प्रभु के वियोग में रोना उचित है, हँसना हँसाना नहीं।

९. किसी के छिद्र पर उससे मजाक करना तथा उसके द्वार औरोंको हँसाना। हो सकता है, अपने में उसमें भी बड़े–बड़े छिद्र भरे हों और उस पर दृष्टि नहीं जाती हो ऐसा भी हो सकता है, वह छिद्रों के रहते भी प्रभु का हमसे अधिक प्यारा हो। जो अभिमानपूर्वक किसी के अवगुण पर हँसता है, मरने के पहले वही अवगुण हँसने वाले में भी आ जाता है।

१०. किसी के साथ वचनबद्ध होकर, अपने वचन को न निभाना। वचनबद्ध होने पर एक प्रकार से उसका ऋण अपने माथे पर चढ़ जाता है। वचन पूरा न करने पर उसे कर्जखोर की दुर्गति होती हैं

११. झूठ बोलना तथा झूठी गवाही देना। इससे भी हृदय अंधा हो जाता है। भगवान की शपथ खाना भ्झी महान पाप है।

१२. पर निंदा करना महापाप है। "पर निंदा सम अध न गरीसा।" निंदा का लक्षण यह है कि उसके विषय की बात सच्ची भी हो, किन्तु यदि उसे सुनकर कष्ट होवे तो वह निंदा तुल्य ही है। उचित तो यह है कि हम हृदय से भी किसी की निंदा न करें। 'सपनेहु नहिं देखहिं परदोषा।' जैसे हम अपने पापों को सदा छिपाने का यत्न करते हैं, उसी प्रकार हमें अन्य व्यक्तियों के पापों का भी उद्घाटन नहीं करना चाहिये। हम जिसकी निंदा करते हैं, उसके अधिकांश पाप हममें ही आ जायेंगे तथा हमारे सुकृत का बड़ा अंश उसे प्राप्त होगा।

१३. किसी की चुगली करना। किसी दूसरे के दोष, देखकर दूसरे से कहना चुगली है।

१४. वाक्छलं करना। दो विरोधियों के साथ मैत्री दिखाने के लिये इसकी बात उससे तथा उसकी बात इससे कहना वाक्छल है। यह कपट कहलाता है।

१५. किसी की व्यर्थ स्तुति करना। मिथ्या करनेवाले तथा सुननेवाले दोनों ही दोषी सिद्ध होते हैं। और भी कितने पाप वचन से संभव हैं। इसी से तो कहते हैं कि वाणी का संयम नाम–जापकों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। अधिकतर मौन ही रहकर नाम–रटते रहें। बहुत आवश्यकता पड़ने पर कम से कम वचन द्वारा अपना कार्य सिद्ध करें। पर उपदेश देने के चक्कर में नहीं पड़े। उससे मान बड़ाई बढ़ती है, व्यवहार बढ़ जाता है। हमारी आदर्श नाम रटन ही कोटि–कोटि उपदेशों के समान औरों को नाम तत्पर बनाकर उसका सच्चा हित करेगी। श्रीदेवस्वामी ने क्या ठीक कहा है–

कथनी से का होइ हैं कछु करनी चाही।
कथनी केवल वाद बढ़ैहैं, करनी वादहि खोइ है॥
करनी वारां अन्त लहे सुख कथनीवारे रोई हैं।
करनीवारो जियत मुक्त हैं, टांग पसारे सोइ हैं॥
कथनीवारो मारि खाइकै बार बार शिर टोइ है।
जैसी करनी कर राखी हैं तैसे बोझा ढोइ है॥

साधनवारो साधन करि के अंतर मलकों धोई है।
कथनी वै वारो कथ रहिहैं देय रूप वह जोइ है।।

इस सम्बन्ध में श्रीदेवस्वामीजी के एक और पद विचारणीय है—

जो देखन चाहै जग की मजा, तौ रोको बानी औ मन को।
वानी से व्यवहार बढ़त है मन ही को तूफान सजा।।
ज्यों ज्यों वानी रुकत जायगी, त्यों त्यों बढ़ै मन को दरजा।
श्याम रूप तब कुछ कुछ झलकत इन्द्रिन आपुइ विषय तजा।।
मन दर्पण प्रतिविंव लहत ही उघटि जात तब पट हरजा।
हूवहू साहिब सों मुजरा करते पातक दूरि भजा।।
यही पंथ परमारथ को अस, वेद नगारा धमकि बजा।
वासुदेव पद पंकज भजले सबके ऊपर जाको रजा।।

नाम जापकों के लिए अन्य संयम

१. नामजापकों को सबसे पहले दंभ त्यागना चाहिये। जो गुण अपने में नहीं है, उन्हें मान बड़ाई, पूजा प्रतिष्ठा के निमित्त कृत्रिम उपायों से जगत में प्रगट करना तथा भीतर में कुछ और ऊपर से कुछ और दिखलाना दंभ कहाता हैं शारीरिक दंभ यह है कि ऊपर से वैष्णवों का, सन्तों का वाना धारण कर लेना, भीतर में वैष्णवोचित, संतोचित रहनी आचरण में नहीं रखना।

'साधु कहावत न लागत शरम।
वाना बड़े को धारत पाजिन के सब करत करम।।'
— देवस्वामीजी।

वाचिक दंभ हैं

लोभ मनहि नचाव कपि ज्यों गरे आसा डोरि।
बात कहौं बनाइ बुधज्यौं। वर विराग निचोरि।।

मानसिक दंभ है—

'हे हरि कवन यतन भ्रम भागै।
भगति ग्यान वैराग्य सकल साधन यहि लागि उपाई।
कोउ भल कहहु देउ कछु कोऊ अस वासना हृदय ते न जाई।।'

दंभ करने से तीन अलौकिक वस्तुओं से हाथ धोना पड़ता है।

१. अपने अन्तर्यामी इष्ट में प्रेम तथा विश्वास से।
२. हृदय में इष्ट ध्यान के साक्षात्कार से।
३. परलोक में उज्ज्वल सुगति से।

४. अतः सब प्रकार के दंभों का त्याग कर, नामाभ्यास करना चाहिये। दंभ त्यागते ही नाम, नामी में चित्तवृत्ति मगन होने लगेगी तथा वैराग्य, ज्ञान एवं भक्ति की प्राप्ति का मार्ग परिष्कृत हो जायगा।

५. नाम–जापकों को केवल नामानुरागियों का ही संग करना चाहिये। सामूहिक नाम–संकीर्तन के लिए भी नाम समाज में सम्मिलित होना चाहिये। अन्यथा निर्जन, निर्विघ्न एकान्त देश में ही बैठकर नामाभ्यास करना श्रेयस्कर हैं

६. नाम जापकों को षट खटका नामानुराग घटाने वाले हैं। तीन तो हैं ईषणा और तीनही वासना भी है। तीन ईषणा है। १. सुतैषणा, २. धनैषण, ३. नारीईषणा। तीन वासना हैं १. शास्त्र वासना, २. देश वासना, ३. मन वासना। सुतैषणा– बेटे की चाह, उसकी प्राप्ति में उसके लालन–पालन, शिक्षा–दीक्षा में, व्याह, निर्वाहार्थ जीविका में रचते–पचते रहना। नामजप का बाधक है। अतः पुत्रहीन अपना सौभाग्य समझ सुतैषणा के चक्कर में न पड़ें।

७. धन जड़ है। धनप्राप्ति के आदि में व्यर्थश्रम, प्राप्त होने पर उसकी सुरक्षा में लगे रहना, नष्ट होने पर शोक करना आदि बाधाएँ लगी रहती हैं। सम्पत्ति प्राप्त होने पर भी, उसे स्त्रीरूपा जानकर, उसे अपने शारीरिक भोग में न लगावे। अपनी अर्जित सम्पत्ति को, अपनी बेटी माने, पिता की अर्जित सम्पत्ति को बहनवत् मानें, दूसरे से प्राप्त सम्पत्ति को परनारी माने। तीनों दशाओं में कभी सम्पत्ति को भोग्या न मानें। हाँ कन्या को योग्य वन से ब्याह कर देना ही उचित है। भगवत–भागवत में खर्च कर डालना, कन्यारूपी सम्पत्ति को योग्य वर से ब्याह देना मानना चाहिये।

८. नारी ईषणा को विचार–पूर्वक त्यागना चाहिये। स्त्री का स्थूल शरीर, हाड़माँस, मल–मूत्र, आदि दुर्गन्ध वस्तुओं का पुतला होता है। काम–विकार परवश यदि युवक उसमें आसक्त भी होता है तो तभी तब जब तक उसमें जवानी बनी है। धनहीन होने पर युवती स्त्री भी अपने कामी पति का तिरस्कार करने लगती है। अतः कामविकार पर ही विजय पाकर, स्त्री आसक्ति को त्यागना चाहिये।

९. शास्त्र वासना नामजप का बाधक है। आत्म–कल्याणार्थ थोड़ा सा विद्या बोध प्राप्त कर लेना पर्याप्त है।[२] नाना ग्रन्थों के स्वाध्याय उपयोगी है पुजाने खाने, मान बड़ाई, प्राप्त करने के निमित्त। किन्तु आत्म कल्याण के लिए नामजप ही एकमात्र उपाय है। ग्रन्थों में रचते–पचते जीवन गँवा देने में बुद्धिमानी नहीं है।

१०. मान बड़ाई की वासना छोड़ना है कठिन, पर नामानुराग प्राप्ति के निमित्ति तो इन्हें छोड़ने में ही कल्याण है। मान–वासना को त्याग कर अखण्ड भजन में लगना चाहिये।

११. देश–वासना– नये–नये देशों को देखने के लोभ से भटकते फिरना, भजन सुविधा के उपयुक्त स्थान की खोज में अधिक समय गँवा देने में बुद्धिमानी नहीं है। भ्रमण किये हुये देशों की यादगारी भजनकाल में मन को एकाग्र करने में बाधक बन जाती है। अतः घूमना–फिरना भी बाधक ही है।

१२. नाम जपमें चार विघ्न उपस्थित होते हैं।– १. लय, २. विक्षेप, ३. कषाय और ४. रसाभास। इनसे बचना चाहिये। अधिक भोजन से, गुरुपाक वस्तुओं के आहार से, नामजप काल में आलस्य सताता है। माला हाथ से फेरते–फेरते ऊँधने लगे, नाम जप अधूरा छोड़कर सो गये–ये सब लय नामक बाधा है। स्वल्प सुपथ भोजन के द्वारा इनहें जीतना होगा।

१३. जन समूह में नाम व्यतिरेक सांसारिक वार्ता कान में पड़ेगी ही। इससे ध्यान करने में विक्षेप होना स्वाभाविक है। अत: शान्त एकान्त देश में नामाभ्यास करना चाहिये।

१४. मनको पवित्र बनाकर इष्ट ध्यानपूर्वक नाम जपना चाहिये। पूर्वकृत विषय भोग के अधिक अभ्यास से भजन काल में भी भोग्य विषयोंका स्मरण वरबश आते रहना कषाय नामक विघ्न है। वैराग्य विचार से इन्हें हटाना होगा।

१५. श्रीसीताराम नाम तो स्वत: सुधा सार हैं। स्वत: अपरिमित स्वादु, असीम आनन्द को उत्पन्न करने वाले हैं। अन्यान्य साधन रूपी रस इसमें आनन्द वर्द्धन के लिये मिलाना रसाभास कहाता है। स्मरण रहे अपने इष्ट के रूप, गुण, लीला धाम का चिंतन श्रीनाम सरकार से भिन्न रसान्तर नहीं है। कर्म, ज्ञान योग आदि रसान्तर माने जायेंगे। ये भी सहायक हों, तो रसाभास नहीं हैं।

१६. मिथ्या संभाषण से नामानुराग रस सूख जाता हैं ये सब उपर्युक्त मत श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज विरचित श्रीमानबोधशतक नामक ग्रन्थ से लिखे गये हैं।

महाप्रभु श्रीचैतन्यदेवजू ने अपने अनुयायिओं के लिए, नाम जपने में चार अत्यन्त प्रयोजनीय संयमात्मक गुण धारण का आदेश दिया है।

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्त्तनीय: सदा हरि:।।

१. अर्थात् नाम संकीर्त्तन करने वाले सर्वप्रथम अपने को तृणसे भी अत्यधिक नीच मानें। तृण यदि कृषकों के खेत में उग आये, तो उसे वे शीघ्र उखाड़ फेंकते हैं। मार्ग मे उग आया तो पथिकों का दिन रात पदप्रहार सहना पड़ता है। सर्वत्र तृण का निरादर ही होता है। इसी भाँति नाम जापक अपने को नीचातिनीच तुच्छ और सर्वत्र तिरस्कृत होने योग्य माने।

२. दूसरा गुण नामजापक धारण करे सहनशील। सहनशील होना वृक्षों से सीखें। वृक्ष दिन रात एक पैर पर खड़ा होकर, शीतधाम, वर्षा एवं ओले पत्थरों की बौछार, तुफानों का झकझोर सब सहता हुआ भी परोपकार परायण रहता है। अपने डाल पात छेदन करने वालों को भी छाया, फल–फूल देता रहता है। उसे रोड़े डंडों से मारो तो उसके बदले वह पके फल ही गिराकर, सेवा करेगा। नाम जापक को तो वृक्ष से भी बढ़कर सहनशील होना चाहिये। क्योंकि वृक्ष जड़ है, हम चैतन्य हैं। हममें सहनशीलता के लाभ समझने की बुद्धि भी हैं

३. नाम जापक को होना चाहिये अमानी। प्रतिष्ठा को सूकरी–बिष्टा समझ कर त्याग देवे। कहीं किसी से मान बड़ाई मिलने पर भी उसे स्वीकार न करें। इससे अपने पतन की संभावना समझे।

४. सन्तों का तो भगवान का रूपही मानकर अत्यधिक समादर करे, और जगत को सियाराममय मानकर, घृणित व्यक्ति को भी अधिक से अधिक मान सम्मान दें, आदर करे।

श्रीसुदर्शन संहिता की आज्ञा है कि नाम—जापक को चाहिये कि सांसारिक दो दिनों के दु:ख सुख को एक समान मानकर धैर्यपूर्वक नाम रटता रहे। निन्दा, स्तुति, मान, अपमान आदि द्वन्द्वों से ऊपर उठकर नामाभ्यास में तत्पर रहे। अब औरों से मन को खींचकर एकमात्र निरामय नाम रटता रहे।

"दु:खादिकं समं कृत्वा द्वन्द्व धर्मं विहाय च।
भजेन्निरामयं नाम चित्तमाकृष्य सर्वत:।।"

परमहंस श्रीप्रेमलताजी कहते हैं—

प्रेमलता भेषज भजन, संयम यह सुख देत।
सीताराम सुनाम रटि, संयम नेम समेत।।
भजन स्वरूप सुखते के, रक्षक संयम नेम।
प्रेमलता सियराम मधि, इन बिनु होत न प्रेम।।
भोजन शयन सुबैन लघु, दंभ त्यागि मद मान।
प्रेमलता सियराम कर, नाम रटहु धरि ध्यान।।
खेद रहित एकान्त में, जग—जंजाल बिहाइ।
प्रेमलता सियराम कर, रटै नाम चित लाइ।।
वाम दाम दोनों तजे, सजे सुदृढ़ अनुराग।
प्रेमलता सियराम कर, नाम रटे ध्व भाग।।
नाम अर्थ चिन्तन करै, आशा तृष्णा त्यागि।
प्रेमलता सियराम के, नाम महारस पागि।।
चाह बड़ाई मान्यता, सुख दुख भोग विलास।
प्रेमलता तजि एकरस, भजि सियराम निरास।।
विघ्न करे कोउ आइ जो, तापर करै न क्रोध।
प्रेमलता सियराम रटि, उपजै आतम बोध।।
निन्दा अस्तुति सम लखै, जाति पाँति दुख रूप।
प्रेमलता पाखंड तजि, रटि सियराम अनूप।।

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज नाम में पाँच और विघ्न बताते हैं।

१. प्रेम भक्तों का लक्ष्य होता है, अपने इष्ट के प्रति अधिक से अधिक प्रेम जागृत करना तथा प्रेम संवर्द्धन के लिए इष्टरूप का साक्षात्कार। निराकारवादी योगी केवल ब्रह्मप्रकाश के ही दर्शनकर पाते हैं तथा अन्त में कैवल्य मोक्ष प्राप्त होने पर, श्रीसाकेतके बहिर्देश व्यापी प्रकाशावरण में लीन हो जाते हैं। उनकी

देखादेखी हम भी केवल प्रकाशलोक के ही दर्शन के लिए साधन तत्पर होवें, तो हम अपने लक्ष्य से भ्रष्ट हो जायंगे। अत: इष्ट रूप छोड़ ब्रह्म प्रकाश के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिये। यह नाम जपका विघ्न है।

२. संसार में पुजाने खाने, भोग सामग्री इकट्ठे करने के लिए बहुत से लोग नकली सिद्धाई प्रदर्शन की ढोंग करते हैं। यदि नाम जप से बाचासिद्ध, संकल्पसिद्धि आदि प्राप्त हो जायं, तो उन्हें या तो प्रभु प्रार्थनापूर्वक त्याग दे, या गुप्त रखें। कहते हैं कि एक बार श्रीबड़े महाराज को श्रीचित्रकूट में नामाभ्यास काल में अपनी संकल्प सिद्धि देखने में आई। मन में कोई संकल्प फुरा, तत्काल उसकी पूर्ति होते देखीं। आप अपने इष्टदेव से झगड़ पड़े। देखोजी, कौतुकी प्यारे! संकल्प फुराना भी तुम्हारा ही काम है, उसकी तत्काल पूर्ति भी तुम ही करते हो। इस लीला में तुम्हें तो कौतुक का मजा मिलता होगा, किन्तु मैं तो इस सिद्धाई के चलते अपने पथसे भ्रष्ट ही हो जाऊँगा। अत: अपनी दी हुई यह सिद्धाई वापस ले लो, नहीं तो मैं तुम्हारा भजन ही छोड़ दूँगा। इतना कहते ही, वह सिद्धाई आपकी लुप्त हो गई। आज हम ऐसे विचारहीन हो गये, कि न धन हो तो मान ही बड़ाई के लिये ही सही, सिद्धाई न होने पर भी सिद्धिका दंभ करते फिरते हैं। दर्शनार्थियों की भीड़ इकट्ठे कर, भजन से वंचित हो जाते हैं। अत: सिद्धाई प्रदर्शन नाम जपका ऐसा विघ्न है मानों कोढ़ की खाज हो।

३. तीसरा विघ्न है देशाटन, तीर्थाटन की चाह।

तीरथ अमित कोटि सम पावन। नाम अखिल अघपुंज नसावन।।

'तीरथ की आस सो तो नाहक उपास हित, एक बार राम कहो, कोटिन प्रयाग है' एक जगह स्थायी रहकर नामजप अधिक होता है। नामाभ्यास का उत्साह भी बना रहता है। घूमने–फिरने वाले, बाहर की देखी जागतिक वस्तुओं की चर्चा और स्मरण करने में अपना बहुमूल्य मानव जीवन व्यर्थ खो देते हैं। श्रीगोस्वामीजी अपनी कवितावली ९/८६ में कहते हैं।

न मिटै भव संकट दुर्घट है। तप तीरथ जन्म अनेक अटो।

... ...

तुलसी जो सदा सुख चाहिये तौ रसना निसिवासर राम रटो।।

तीर्थयात्रा तो स्वर्ग सुख देने वाला कर्मकांड है। भक्ति देश में इसका कोई मोल नहीं है। अत: नामजापक को एकही जगह स्थायी रहकर कम से कम बारह वर्ष नामाभ्यास करना चाहिए।

४. वाद–विवाद में प्रतिपक्षी को परास्त करने के लक्ष्य से अधिक विद्या का अभ्यास आवश्यक है। आत्मकल्याण के लिए, थोड़ा बहुत इसलिये पढत्र ले कि केवल दिव्य प्रेम मार्ग की जानकारी प्राप्त हो जाय। श्री गोस्वामीजी के काव्यों का अनुशीलन पर्याप्त है। सो भी कथा कहकर पुजाने खाने के लक्ष्य से नहीं, केवल भक्तितत्त्व के ज्ञान मात्र के लिये ही।

नाम लिया तिन सब लिया, चहूँ वेद के भेद।
नाम बिना नरके गये, पढ़ि पढ़ि चारिउ वेद।।

अधिक विद्या पढ़ने वालों को अपने कहीं स्थायी बैठकर नामाभ्यास करते देखा है?

५. पाचवाँ विघ्न है कविता बना–बनाकर कवि कहाने की लालसा।

सारद दारुनारि सम स्वामी। राम सूत्रधर अन्तरजामी।।
जेहिपर कृपा करहि जन जानीं। कबिउर अजिर नचावहि बानी।।

प्रभु प्रसाद जन्य अलौकिक काव्य, जो आचार्य कोटि के महानुभावों द्वारा प्रगट किये गये हैं, उन्हींके आधार पर तो आज हमारी उपासना परिचालित हो रही है। उनकी बात ही न्यारी है। हमलोग तुकबन्दी–मात्र जानंकर, अपनी अल्हड़ तुकबन्दियों के प्रचार प्रसार के लिए आचार्यों की महावाणी की भी अपेक्षाकर बैठते हैं। नामरटना छोड़ तुकबन्दी जोड़ने में समय नष्ट करते हैं, यह विघ्न नहीं तो क्या है? अब इस सम्बन्ध की मूलवाणीभी अप पढ़ें।

नाम के रटन बिच पाँच विघ्न दुष्ट हैं।
प्रथम प्रकास लोक वासना दुरास दूजो
सिद्धताई चाह हिये कोढ़ में को कुष्ट हैं।
तीजो देश तीरथ अटल विद्या वाद बहु
पढ़न कथन चौथो सोकदन सुष्टहै।।
पाँचवों कबित कुशलाई निपुनाई निज
सुजस के हेत दुखादाई नहीं पुष्ट है।।
(श्री) युगलाअनन्य अति कठिन उपाधि सब
नाम के रटन बिच पाँच विघ्न दुष्ट हैं।।

श्रीसीताराम सनेह वाटिका, २०४९

आचार्यपादका उपदेश है कि नामाभ्यास से अनुभूत श्रीनामसरकार के चमत्कारपूर्ण प्रभाव को उसी भाँति छिपाकर रखना है, जैसे साँप मणि को। कामविकार को नामप्रेम में कलंक मानकर सर्वथा त्याग देना चाहिये। रिद्धि–सिद्धि को प्रपंच मानकर इनसे दूर रहना चाहिए। नामजप का स्थान होना चाहिये, एकान्त, शान्त। वहाँ अपने प्रियतम के ध्यान परायण रहें। वहाँ नाम के प्रकाश का अनुभव संभव है। श्रीनामानन्य होकर नामाभ्यास करते रहने से श्रीनाम सर्वविधि सहायता करेंगे।

नाम महामनि मानस माँझ छिपाय के राखिये साँझ सबेरे।
काम कलंक विहाय भलीविधि रिद्धिहु सिद्धि विचारि बखेरे।।
शान्त नितान्त सुकान्त समेत निकेत के अन्तर पाय उजेरे।
(श्री) युग्मअनन्य प्रमोद परायन प्रीतम नाम सहायक मेरे।।

नाम जापकों के लिए संयम बताते हुए श्रीबड़े महाराज आदेश देते हैं कि शुद्ध सतोगुणी आहार स्वल्पमात्रा में खाना चाहिये। वाणी मधुर, सत्य, हितप्रद, सुखदायक स्वल्प शब्दों में बोले, दिन रात कभी न सोये।

सदैव नाम रटे। गृह, धन, भूमि, युवती को धूल समान समझे। संकल्प विकल्प आदि मन की कल्पना को शरीर की खाज समान दुःखद जानकर त्याग दे। अपनी उच्चारित नामध्वनि को सुनने में मनको मगन कर दे। नामोच्चारण नाम परत्व प्रतिपादन छोड़कर, अन्य बातें व्यर्थ बोलना एकदम छोड़ दें। इधर—उधर घूमना, नाच तमाशा, सिनेमा, टेलीविजन आदि तथा—कथित मनोरंजन को दुःखदायी कार्य माने, कलियुग के साथ प्रीति करना समझिये, इन्हें छोड़ दे। नामोच्चारण एवं इष्टध्यान निरन्तर दृढ़ता—पूर्वक करते रहें। नाम में सुदृढ़ विश्वास जमाये रखिये। नामजप में आलस्य करना, भोगों की दुर्वासना त्याग दें। रात—दिन नाम जपकर जागरण करें। मान—अभिमान निःशेष रूप से त्याग दीजिए। नाम—सरकार से प्रीति का निर्वाह नामानुरागी सन्तों से विनयपूर्वक भीख माँगनी चाहिए।

अशन अलप शुद्ध सतोगुन लिये मित वचन विचित्र मुद मधुर उचारिये।
रैन दिन जागरन सुपन सुभाय भूलि धूलि धन धाम धरा जुवती निहारिये।।
सावधान होय मनोराज खाज खेहि गुनि धुनि माँझ मानस मगन नित धारिये।
(श्री) युगलअनन्य और कथन बकन व्यर्थ दायक अनर्थ ताको मूल जुत जारिये।। ३१९।।

इत उत गमन रमन कौतुकादि कुल, कारज कठोर कलि रीति—प्रीति त्यागिये।
ध्यान ही करत एकरस दृढ़ आस विश्वास सुखरास अभिराम बन पागिये।।
आलस अयोम भोग सोग दुर्वास माँस शान्त त्यागि रैन ऐन जपि जागिये।
युगल अनन्य अभिमान मान लेश नहि, नाधे सोई रीति—प्रीति संतन सो मागिये।। ३२०।।

❁ एक सिद्ध संत के पच्चीस अनमोल बोल ❁

१. एकान्त में रहने का अभ्यास करो।
२. जहाँ तक हो सके अकेला रहो।
३. प्रेम सबसे करो, किन्तु आसक्ति किसी में नहीं हो।
४. अभ्यास बढ़ाते चलो कि निरन्तर नामजप होना रहे।
५. एक ही इच्छा, एक ही वासना बने कि नामजपही में पूर्ण रुचि हो जाय।
६. कम बोलना।
७. सुनो कम, कहो कम, करो अधिक।
८. एक क्षण भी व्यर्थ न खोना।
९. भजन में जो बाधा पड़े उसे सह लेना महापाप है।
१०. विचार एकही हो कि श्रीनामजप कैसे बने।
११. जीभ का मुख्य काम यही कि नाम रटे।
१२. कानों का मुख्य काम यही कि नाम श्रवण करे।
१३. मन का मुख्य काम यही कि नामजप से पूर्ण आनन्द ले।

१४. समस्त पुण्य पुंज का एक फल कि श्रीनाम सरकार में पूर्ण निष्ठा हो जाय।

१५. जीवन की सफलता केवल नामजप में।

१६. भजन का मुख्य फल भजन।

१७. भजन से कभी तृप्ति न हो।

१८. सौभाग्य यही है कि केवल भजन ही सोहाय।

१९. दुर्भाग्य इसी को मानना कि भजन छोड़ अनान्य कामना में लगना।

२०. भजन ही को साधन, भजन ही को साध्य मानना।

२१. श्री प्राण संजीवन इष्टदेव की पूर्ण कृपा का यही परिचय, यही पहचान है कि श्रीनाम का पूर्ण आश्रयण हो जाय।

२२. भजन करते करते जीये।

२३. श्रीनाम रटते रटते मरे।

२४. अगले जन्म में क्या करेंगे? श्री नामजप।

२५. श्रीनाम श्रीनामी (रूप) में अभेद भाव रखना।

अब हम श्रीनाम कांति के कुछ छन्द संयम विषयक उद्धृत करेंगे।

'लघु भोजन सुचि सत्त्व सुगुन युत वचन मधुर धुनि बोलो।
अचल हमेश रहो आसन–थल विकल न भवमग डोलो।।
संजम साधि समाधि सुधा सम नाम–नेह अनमोलो।
युगलानन्यशरन चित–वृत्ति नित विरह तराजू तोलो।। ९२।।
बाहर दृग मृग धृग दशदिशि से खैचि एकठा कीजै।
लक्ष्य ललित लय लगन लाय अभ्यंतर अमृत पीजे।।
मन मारे बिन काज सेरे नहि बार बार मर जीजे।
युगलानन्य चौथ चंदा सम आलस तार तजीते।। १२१।।
युगल वरन हिय हरन एकरस रटिए रगर लगाई।।
वृथा वाक नापाक खाक परिपाक बराक विहाई।।
सत संगति संतत सजि के सुख सर्वस लहो सदाई।
युगलानन्य शरन खाहिश खटका दिल दूर बहाई।। १९०।।
करन–कषाय बहाय नाम बर बिरह नीरनीधि माही।
जीवत मरन कबूल करो परिहरो बिस्व छल छाँही।।
चातक धरन धरे दायम दिल गहि श्री सतगुरु बाँही।
युगलानन्य शरन प्रीतमरस कहो न काहू पाहीं।। १९७।।
सावधान व्यवधान हान हरि हिरस हवा हनि हेरो।
नाम हरित हित लाय भाय भल ज्ञान गरूरी गेरो।।

किसही से न करो सोहवत तजि तिरगुन मेरो तेरो।
युगलानन्य शरन सुमिरन संबंध सुसाजु सबेरो।। १९९।।
रसना नाम रटो आलस तजि बाद वितर्क बिहाई।
यामे कहा कलेश होत सोऊ कहिए समुझाई।।
फेर समा दुर्लभ देखो दृग खोल प्रपंच पराई।
युगलानन्य शरन नामहि में रहो हमेश समाई।। २०७।।
खबरदार हरदम रहिए गहिए श्री सतुरु वानी को।
लोकरीत विपरीत समुझि के त्यागो जगत कहानी को
ममता नाम श्यामसुंदर छवि समता सहज जहानी को।
युगलानन्य शरन आसा हरसायत सिय ठकुरानी को।। २०९।।
होत कहा किस्सा गाए औ सुनाए बिचारे भाई।
जौलौं लगे न नाम माधुरी माँझ नेह दृग जाई।।
मौन रहे मन मारि एकरस तजि जगजाल सगाई।
युगलानन्य शरन पहुँचे पुर प्रीतम बंव बजाई।। २४०।।
क्रिया कलाप तरफ ताके नहि बिना नेह निधि नामा।
वृथा अलाप भजे अंतर तिहु काल न दुख परिनामा।।
मदन–दाप दावे सबही विधि कांपे नहि कोउ कामा।
युगलानन्यशरन सुमिरन से प्रमुदित मन वसुजामा।। २४१।।
षट उद्वेग नेग नासन करि तेग नाम कर गहिये।
मन वानी तिमि जठर कोह अभिलाष सिश्न ज्वर जहिये।।
रसना रटन लगाय नाम मुख से कटु कहर न कहिये।
युगलानन्यशरन सुशांत रह शीश परे सुख सहिये।। २६९।।

❀ दश प्रकार के नाम अपराध ❀

इसके पूर्व श्रीनाम जापकों के लिए आवश्यक संयम बता आये हैं। उन संयमों को धारण करना तथा निवाहना नये नाम साधक से तभी बनेगा, जबकि किसी अनुभवी नामनिष्ठ विशुद्ध संत के तत्त्वावधान में, उनकी उपदिष्ट रीति से श्रीनामाभ्यास करते रहेंगे। नवीन नाम साधक के लिये जहाँ श्रीनाम परत्त्व प्रतिपादक ग्रन्थों का नित्य पठन मनन आवश्यक है, वहाँ नामानुरागी महानुभावों का नित्य सत्संग भी अनिवार्य रूप से आवश्यक है। आगे बताये जाने वाले दश प्रकार के नामापराध से बचने का उपाय भी सत्संग ही हैं श्री सत्सिद्धान्त सार में श्रीबड़े महाराज हम लोगों को आदेश देते हैं।

श्री सतुगुरु सुचि संत संग, साजत सुलभ सुनाम।
रटन होय अपराध बिनु, नसत वासना वाम।।

१. प्रथम नामापराध है नामानुरागी संतों की निन्दा करना। विचारना चाहिये नामानुरागी महानुभाव तो युगल नाम के रसास्वाद से प्रमोन्मत्त हो रहे हैं। श्रीनाम पर ही निछावर हैं। सभी जीवों से नाम जपवा रहे हैं, वह भी स्वार्थ रहित होकर, स्वयं दीन–हीन बनकर। ऐसे ही नामनिष्ठ महापुरुष सच्चे संत शिरोमणि हैं। काल रूपी भयंकर सर्प से वही वाल वाल बचेंगे। ऐसे महानुभाव की यदि हम निंदा करेंगे, तो उस अपराधनिग्न से हमारा हृदय क्यों न संतप्त होता रहेगा? ऐसे नाम–प्रेमी के प्रति किये गये निंदा–अपराध को कृतज्ञ शिरोमणि श्री नाम सरकार कैसे सहन करेंगे? चाहे सैकड़ों कल्प पर्यन्त नाम रटा करो, तौभी हमें नाम जपना निष्फल ही होता रहेगा। वही कृपालु संत जिनकी हमने निन्दा की है, क्षमा कर दें तभी उवार है, नहीं तो नाम जपने पर भी भव सागर में डूब मरेंगे।

२. भगवान शंकर निरंतर श्रीरामनाम जप करते रहने से ही अजर अमर बन गये हैं। 'नाम प्रसाद संभु अविनाशी। आप बाहर से चिता भस्म; मुंडमाल आदि अमंगल साज सजे रहते हैं, तो भी श्रीशिव अर्थात् स्वयं रूप है, तथा शंकर औरों के कल्याण कर्त्ता भी हैं।

'साज अमंगल मंगल रासी।'

नाम प्रभाव से ही आपको

'काल कूट फल दीन्ह अमी को।'

नाम सुनाकर ही मरणशील काशीवासी प्राणियों को आप मुक्त किया करते हैं। आपके समान श्रीरामनामानुरागी और कौन होगा? तभी तो नाम साधक आपके नामोपदेश से पुराणादि आर्षग्रन्थ भरे हैं। तभी तो नाम जापक संसार आपको गुरुओं के परमगुरू, जगद्गुरु पद पर प्रतिष्ठा करते हैं। ऐसे नामानुरागी गुरु में तथा नामी में क्या भेद रह गया? श्वतोश्वतर उपनिषद् की श्रुति कहती है कि आपको अपने इष्टदेव में जितनी भक्ति है, उतनी ही भक्ति आपको गुरु में भी रखनी होगी। तभी आपके हृदय में सर्व वेदमय श्रीरामनाम का अर्थ भासित होगा।

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथित ह्यार्था, प्रकाशन्ते महात्मनः।। ६/२३।।

श्रीशंकर जी में गुरु भाव रखकर, उनके प्रति प्रेम कीजिये। तभी आपको श्रीनाम जप का सुख स्वाद मिलेगा। गुरु में और इष्ट में अभेद भाव रखना भी चाहिये। उनके नाम रूप में भी अभेद मानें।

महादेव पद विमुख जौन जन। नाम सुरस पावत न मोद धन।।
श्री शंकर हरि भेद न धारे। नाम स्वरूप अभेद बिचारे।।

३. तीसरा नामापराध है श्रीसदगुरु की अवज्ञा करना। भला विचारिये तो सही, उन्हीं कृपालु गुरुदेव ने आपको ऐसा अमोल नाम रत्न दिया है, उनका महत्त्व परत्व समझा दिया है। 'महामोहतम पुंज जासु वचन रविकर निकर।' ऐसी वचन शक्ति रखने वाले गुरुदेव के आदेश आप नहीं मानते।

स्वयं आलस्य प्रमाद में पड़कर नाम साधना शिथिल कर रहे हैं। मालूम पड़ता है परमार्थ साधन के लिये नहीं, प्रत्युत पेट भरने के लक्ष्य से, अपने क्षणभंगुर स्वार्थ परक उल्लू सीधा करने के लिए ही आपने ऐसे परलोक साधक गुरुदेव की शरण में आये हैं, तभी तो उनके लोक परलोक बनाने वाले नामोपदेश की उपेक्षा करते हैं। आप ही के हित की बात कहते हैं और आप उनकी आज्ञा उल्लंघन करते हैं? क्या होगा आपको नाम जपने से? श्रीनाम सरकार ने ही तो इन्हें गुरु पद पर बैठाया है। इनका अनादर सहकर, आप पर कभी नाम सरकार रीझेंगे? कभी नहीं।

निज गुन विपुल भाँति सनमाने। सतगुरु सुमति स्वल्प अनुमाने।
ते पापी सिरताज विसेषी। यह दुतिय अघ दुखद विशेषी।।

४. वेद तो साक्षात ब्रह्मवाणी है। जिन सद्ग्रन्थों में त्रिकालदर्शी ऋषि मुनियों के आप्तवचन भरे हैं तथा सिद्धसंत महानुभावों ने जिन परोक्ष वस्तुओं को अपने ध्यान देश में प्रत्यक्ष की भाँति देखकर, वहाँ की गुप्त बातें बतायी हैं, उनके प्रमाण बचन को हम नहीं मानें, तो हमारे मन बुद्धि के परे भगवद्धाम जाने का मार्ग हमें कहाँ से और कैसे प्राप्त होगा? हमारी समझ में शास्त्र वचन नहीं आवें, तो हम उनकी निन्दा करें? श्रीनाम प्रभाव तो हमें अपने अनुभव के मालूम भी नहीं बताने वाले तो अल्प बचन ही हैं। उनकी निन्दा करोगे, तो श्रीनाम सरकार को कैसे रिझा पाओगे? अत: वेद शास्त्र निंदा चौथा नामापराध है।

५. **'कहौं कहाँ लगि नाम बड़ाई। राम न सकहि नाम गुन गाई।।'**

श्रीनाम का अपरिमित प्रभाव यथावत् किसी को मालूम नहीं है। वेद शास्त्र, संत वचन में जो श्रीनामका माहात्म्य कहा गया है वह तो आंाशिक मात्र है अति स्वल्प है। उतने में भी हमें विश्वास नहीं उसे भी अर्थवाद यथार्थ से भी अधिक बढ़ा–चढ़ाकर, श्रीनाम की मिथ्या प्रशंसा कहकर मखौल करें तो वह भारी अपराध लगेगा न हमें?

अर्थवाद श्रभ्नाम मझारी। करै महा अघ रूप अनारी।।
सुनि प्रभाव अति प्रबल अनूपा। शंका करै परै भवकूपा।।
नाम महत्त्व शेष श्रुति शारद। वरनि न सके महेश विशारद।।
अपर जीव मन मलिन अजाने। क्यों जाने भव कुपथ भुलाने।।

६. श्रीनाम में अनन्त पाप नष्ट करने का प्रभाव भरा है। पापपर्वत को रूई मान लीजिये, तो उस समस्त पाप पर्वत को एक नामोच्चारण, अग्नि कणिका के समान भस्म कर डालने में समर्थ है।

जासु नाम पापक अध तूला। सुमिरत सकल सुमंगल मूला।

नामाभ्यास प्रारम्भ करने के पहले अज्ञान दशा में किये गये हमारे इस जन्म के क्रियमाणपाप तथा अनेकों पूर्व जन्मार्जित पाप सभा श्रीनाम सरकार नष्ट कर देंगे, किन्तु नामाभ्यास करते समय तो हमें पापों से बचना ही चाहिये। श्रीनाम जैसे पूर्व पापों को नष्ट करते हैं, उसी भाँति अब भी हम पाप करते रहेंगे, तो नाम सरकार मिटा ही देंगे, इसी बल पर हम नाम रटते हुये, जान–बूझकर पाप करते रहेंगे, तो श्रीनाम

कैसे क्षमा करेंगे उसे? प्रत्युत् उन पापों के साक्षी स्वयं श्रीनाम सरकार ही हो जाते हैं। अत: ढिठाई पूर्वक किये गये नाम जापक के पाप ऐसे अक्षम्य हो जाते हैं कि नरक यातना भोगने पर भी, उसकी निष्कृति नहीं हो पाती। हाँ, धोखे से अनजान दशा में जो पाप नाम जापक से बन जायें, उसके लिये हम ग्लानि करें, रोयें, आरत होकर, श्रीनाम सरकार से क्षमा करावें और भविष्य में पाप न करने का दृढ़ निश्चय करें, तो प्रमादवश किया हुआ पाप क्षमा कर देंगे श्रीनाम।

७. धर्म, व्रत, त्याग, यज्ञ, आदि सत्कर्म अधिक से अधिक स्वर्ग सुख देने वाले हैं। स्वर्ग भोगकर पुन: वे जन्म मरण के चक्कर में पड़ो। श्रीनाम जप तो परम भगवद्धाम देने वाले हैं, जहाँ जाकर जन्ममरण सदा के लिये मिट जाते हैं। ऐसी दशा में स्वर्ग देने वाले सत्कर्मों से श्रीनाम की तुलना कैसी? एक एक नाम उच्चारण से ही वह मुक्ति मिलने वाली है, जो अनन्त जन्मों के अन्य क्लिष्ट से क्लिष्ट साधनों से भी दुर्लभ थी।

जासु नाम सुमिरत एक बारा उतरहि नर भव सिंधु अपारा।

अत: सत्कर्मों से श्रीनाम प्रभाव की तुलना करना नाम की लघुता मानना हुआ। यह अपराध भी श्रीनाम दरबार में अक्षम्य माना जाता है।

८. अनधिकारियों को श्रीनाम का उपदेश नहीं करना चाहिये। जो श्रीनाम में श्रद्धा विश्वास न करें, उल्टे उनकी निंदा करता है, जिसे नाम प्रशंसा सुनने की श्रद्धा भी नहीं, उन अभागे को पैसे के लोभ से श्रीनाम की प्रशंसा कहके सुनाना क्यों न अपराध माना जायगा? संतों की सभा में नाम प्रभाव कहने—सुनने में पारस्परिक हित होता है। अत: संत सभा की शोभा है यह। निस्वार्थ भाव से श्रीनाम की प्रशंसा किये बिना न रहा जाय, तो साधारण तरह से तो योग्य रहस्य न बनाकर, साधारणतया कुछ प्रशंसा कर देने में हर्ज नहीं।

'नाम विनिन्दक अधम खल, श्रवन चाह जेहि नाहि।
तेहि उपदेशे लोभ वश, नाम मंत्र चित चाहि।।
अधिकारी बिन जनि कहौ, नाम परत्व प्रकार।
युगलानन्य सुनाम मनि, संत सभा दुतिदार।।
सहज सुभाय नाम कहि देवे। स्वारथ लोभ न मन मधि लेवे।।
ता मधि कछु अपराध न लागे। स्वारथ किये पाप फल रागे।।
ताके अष्टम अघ अपुनीता। लगे भगे वासना पुनीता।।

९. नाम माहात्म्य सुनकर भी, जिसे नाम जपने की श्रद्धा न जगे, नाम जप से विमुख बना रहे, उसके उद्धार का क्या उपाय? नाम प्रभाव सुनकर चटपट नाम जप में जुट जाना चाहिये। विलंब लगाने का बहाना न बनाया करें।

१०. मोह ममता में पड़कर, नाम साधना से विमुख रहना भी नामापराध ही है।

ममता मद मैं मोर मलीना। संतत रहे एक रस लीना।।

संत संग से राग न लागे। दंभ खंभ हिय बीच गड़ावै।।
मान मोह मद मृषा विगोये। भ्रम तन्द्रादि विवश शठ सोये।।
नाम रटै पै दाग न खोवै। बिना विवेक शीश हनि रोवै।।
दशम महा अपराध विचारी। भजे नाम रसना भ्रम जारी।।

ऊपर बताये गये दश नाम अपराध अनेक स्थलों में कह गये हैं। हमने यहाँ उन अपराधों का विवेचन साधारणत: श्रीपद्मपुराण में श्री नारद जी के प्रति कहे गये श्रीसनतकुमारजी के वचनों के आधार पर खास कर श्रीबड़े महाराज विरचित श्रीसत्सिद्धान्तसार के सहारे किया है। इस प्रसंग के उद्धृत दोहे चौपाई सब श्रीसत्सिद्धान्त सारसे ही लिये गये हैं।

श्री पद्मपुराण में वही संवाद कहता है कि यदि प्रमादवश हमसे उपर्युक्त नामापराधों में से कोई अपराध बन जाय, तो उसके क्षमापण के लिये कोई भी अन्य प्रायश्चित समर्थ नहीं हो पावेगी। हम श्रीनामार्थ का विचार करते हुए अथक भाव से नाम ही रटते रहें। उन्हीं से आरत प्रार्थनापूर्वक क्षमा करा दें।

जाते नामापराधे तु प्रमादेन कथञ्चनन।
सदा संकीर्तयन्नाम तदेकं शरणोभवेत्।।
नामापराध युक्तानां नामान्येव हरन्त्यघम।
अविश्रान्त प्रयुक्तानि तान्येवार्थ कराणि च।।

श्रीरामनाम में अतुल प्रभाव भरा है। हम नाम रटें, मन से स्मरण करें अथवा सुन ही लें तो श्रीनाम हमें अवश्य तार देंगे। परन्तु चाहे नामाक्षर शुद्ध हो या अशुद्ध देह पालने के उद्देश्य से, धन कमाने के लोभ से, मान बड़ाई पाने के लिए, जमात घुमाने के लिए, दंभ से पाखंड से नाम रटन कीर्तन करेंगे, तो नाम के फलोदय में बहुत विलंब लग जायगा। फल होगा भी तो नाम मात्र का। उसी ऊपर के प्रसंग में ऐसा भी लिखा है।

नामैकं यस्य वाचि स्मरणपथि गतं श्रोत्रमूले गतंवा।
शुद्ध वाऽशुद्ध वर्ण व्यवहित रहितं तारयत्येव सत्यम्।।
तद्वेदेह द्रविण जनता लोभ पाखंड मध्ये निक्षिप्तं।
स्यान्न फलजनकं शीघ्रमेवात्र विप्र।।

प्रात: स्मरणीय स्वामी श्रीअग्रदेवाचार्य के मत से छ: ऐसे घोर पाप हैं, जो नाम रटने से भी नहीं मिटते।

१. गुरु में मनुष्य बुद्धि करना।

२. श्रीशालग्राम अथवा भगवत्प्रतिमा को पत्थर समझना।

३. भगवच्चरणामृत को सामान्य जल मानना।

४. अपार शक्ति प्रपूरित श्रीमंत्रराज को साधारण वचन के समान मानना।

५. महामहिम भगवत्प्रसाद में अन्नबुद्धि करना तथा।

६. संतों की जाति पर विचार कर, उन्हें नीच दृष्टि से देखना। मूल छप्पय जैसे स्मरण हैं यहाँ नीचे लिखते हैं।

गुरु विषे नर बुद्धि सिला करि गनै विष्णु तन।
चरनामृत जल जान मंत्र मानै वानी सन।।
महा प्रसादहि अन्न साधु की जाति पिछानै।
सो नर नरके जाय वेद स्मृति वखानै।।
अग्र कहै ये पाप षट अति मोटो दुर्घट विकट।
और पाप सब जाय पै ये न मिटै हरि नाम रट।।

उत्तम साधकों को श्रीनाम सरकार स्वयं बाधकों से परिचय करा देते हैं तथा स्वयं सर्वसमर्थ श्रीनाम सरकार ही उनसे रक्षा भी करते हैं। सावधान रहना चाहिये तथा तत्काल उनसे बचने के उपाय और युक्ति में लग जाना चाहिये।

●

❀ साधक खण्ड ❀

❀ ❀

श्रीसद्गुरु शरणागति

श्रीनाम–साधना में तत्पर होने वाले जिज्ञासु को सर्वप्रथम किसी नामानुरागी, नामरंग में रँगे हुए विरक्त सिद्ध सन्त को अपने साधनमार्ग प्रदर्शक के रूप में सद्गुरु मनोनीत करना चाहिये। कर्मकाण्डियों, ज्ञानियों, योगियो तथा उपसकों के लिये नाम–साधना की विधि भी भिन्न–भिन्न प्रकारों की होती है। जिस जिज्ञासु को अपने हृदय की प्रवृत्ति जिस मार्ग में हो, उसी के अनुकूल पथ–प्रदर्शक भी उसे चुनना चाहिये।

पुराणसंग्रह नामक आर्षग्रन्थ में श्रीवेदव्यास के शिष्य श्रीसूतजी महाराज श्रीशौकनऋषि से बता रहे हैं। श्री नाम का जप, तो साधक चाहे किसी प्रकार से करे, उसका अवश्यम्भवी फल है। अन्त में मोक्ष की प्राप्ति। किन्तु नीचे लिखी रीति से, जो बड़भागी साधक, नाम–जप करेगा, सिद्धि कर तलगत हो जायेगी और बिना विशेष परिश्रम के ही, अतिशीघ्र होंगी यह अनुभव सिद्ध उपाय मैं सत्य–सत्य बता रहा हूँ और इस कलीके पाप भी सभी मिट जायेगे।

सर्वप्रथम साधक अपने नामसाधना बताने वाले सद्गुरु से नामजप की विधि पूछकर जान ले। तत्पश्चात् वह परात्पर ब्रह्म श्रीनामसरकारका जप–अभ्यास करे। अभ्यास निरालस्य होना चाहिये। साधक भोजन कम करे, सोये थोड़ा, बोले कम। झूठ तो कभी न बोले। व्यर्थ में इधर–उधर घूमना–फिरना बन्द्ध कर दे। इस रीतिसे नामाभ्यास करने पर, उसे सर्वप्रथम अपने इष्ट परिकरों का समागम यहीं इसी संसार में होने लगेगा तथा नाना प्रकार के गूढ़ रहस्यों का श्रीनामकृपा से ज्ञान हो जायेगा। श्रीनामसरकार का सर्वश्रेष्ठ ऐश्वर्य क्या बतावें? स्मरण करते–करते यह चराचरमयी सृष्टि श्रीरामरूप भासने लगती है। मूल श्लोक इस प्रकार पठित हैं।

"येन केन प्रकारेण जपन्मोक्षप्रद नृणाम्।
एवं रोत्या जपेद्यस्तु रामनाममनुत्तमम्।।
तस्य पाणितलें सिद्धिरनायासेन सत्त्वरम्।
सत्यं बदामि सिद्धान्तं सर्व कलिमलापहम्।।
पृष्ट्वा रीतिर्यथा तथ्यं गुरोः सान्निध्यतो मुने।
तत्पश्चादभ्येन्नाम सर्वेश्वरमतन्द्रितम्।।
स्वल्पाहारं तथा निद्रां स्वल्पवाक्य निरन्तरम्।
मिथ्या सम्भाषणं त्यक्त्वा तथा च गमनादिकम्।।

इहैव लभते नित्यं परिकराणां समागमम्।
तथा नाना रहस्यानां ज्ञानं संजायतें ध्रुवम्।।
नाम्नः परात्परैश्वरर्य कथं वाचा वदामि ते।
स्मरणाल्लक्षते विश्वं रामरूपेण भास्वरम्।।

इसी प्रका श्री गोस्वामिपाद ने भी श्री विनयपत्रिका की पद संख्या १०८ में नामसाधना के आरम्भ में सद्गुरु से मन्त्रदीक्षा लेने की आवश्यकता बतायी है। पद इस प्रकार पठित है।

वीर महा अवराधिये, साधे सिधि होय।
सकल काम पूरन करे, जानै सब कोय।।
बेगि बिलंव न कीजिये, लीजै उपदेश।
बीज मन्त्र जपिये सोई, जो जपत महेस।।
प्रेमवारि तरपन भलो, घृत सहज सनेहु।
संसय समिध अगिनि—छमा, ममता—बलिदेहु।।
अघ—उचाटि मन बस करै, मारै मद मार।
आकरषै सुख—संपदा—सन्तोष बिचार।।
जिन्हें यहि भाँति भजन कियो, मिले रघुपति ताहि।
तुलसिदास प्रभु पथ चढ़यों, जौ लेहु निवाहि।।

अब यथाबुद्धि ऊपर उद्धृत पद का भाव लिखते हैं। साधक को मन्त्रदीक्षा लेने के पहले, अपने इष्टदेवता का निश्चित निरूपण करना चाहिये। श्रीगोस्वामिपादका सुझाव है कि आराधना क्षुद्र देवी, देवता, यक्ष, राक्षस—भूतप्रेत की नहीं करनी चाहिये। क्योंकि मन्त्रजापक के वश में मन्त्रदेवता को होना पड़तास है। इस विचार से आराध्यदेव ही मन्त्रानुष्ठान्त में बाधक बनकर, अपना मन्त्र सिद्ध नहीं होने देते। अतः परम पौरुष सम्पन्न विश्व—विख्यात वीरपुंगव श्रीरघुवीरजी को ही अपना आराध्य इष्टदेव वरण करना चाहिये। दयामय कृपासिन्धु श्रीजानकी नाथजी अपनी मन्त्र आराधना करने वालों के स्वयं सहायक एवं रक्षक बन जाते हैं। अतः आपकी मन्त्रसाधना करने से अवश्यमेव सिद्ध होती है और देवता आपके लौकिक मनोरथ पूरा करेंगे, तो पारलौकिक मनोरथ पूर्ण करने में क्या असमर्थ रहेंगे? श्रीरघुवीर तो आपके सभी मनोरथों को पूर्ण करने में समर्थ सहायक हैं।

जब आपने इष्टदेव का निर्णय कर लिया, तो क्षणभंगुर मानव—जीवन पर विश्वास न कर, शीघ्रातिशीघ्र मन्त्रदीक्षा किसी योग्य सद्गुरु से ले लीजिए। आजाकल के निगुरा विद्वान् सद्गुरु वरण में आपको बहुत बहकावेंगे। परन्तु आपको श्रीभक्तमाल में चर्चित कई साधकों के ऐसे वृतान्त मिलेंगे, जिन्हें प्रभु के साक्षात्कार होने पर भी, प्रभुही की आज्ञा से उन्हें भी गुरू करना पड़ा।

आप श्रीघनाभक्त की कथा पढ़िये। प्रभु प्रगट होकर, आपके हाथ की समर्पित रोटी खाते थे। आपकी गौ भी चराते थे। फिर भी आपकी पूर्ण स्वीकृति के लिये, परलोक सिद्धि के लिए स्वयं प्रभु ने ही श्रीधनाजी रामानन्दाचार्य के शिष्य होने की आज्ञा दी। श्रीहरिव्यासजी को दर्शन होने के बाद दीक्षा दिलवायी। औरों की बात छोड़िये, श्रीपार्वतीजी को भी भगवान् शंकरजी ने श्रीवाम देवजी से मन्त्रदीक्षा गुरु से न लेने पर, "गुरु बिनु भवनिधि तरै न कोई। जौ विरंचित शंकर सम होई।।" यह मानस वचन मिथ्या सिद्ध होगा। यहाँ बीजाक्षर संयुक्त श्रीराम षडक्षर मन्त्रराज लेने की बात कही गयी है, और है भी यही प्रचलित दीक्षा विधि। भगवान् शंकरजी जहाँ दिन–रात श्रीरामनाम जपते रहते हैं, वहाँ उनके षडक्षर श्रीराम मन्त्र जपने का भी प्रमाण श्रीरामोत्तरतापिनी उपनिषद् में आया है। "श्रीरामस्य मनुं काश्यां जजाप्य वृषभध्वजः।।" हमने मन्त्रविज्ञों से सुना है कि श्रीरामनाम की आराधना के पहले श्रीयुगल षडक्षर मन्त्रराज की दीक्षा लेकर, श्रीमन्त्रराज का पहले पुरश्चरण कर लेना चाहिये। १२ लाख मन्त्रराज सविधि जपनाही मन्त्रका पुरश्चण है। पुरश्चरण विधि है, मन्त्रजप संख्या की दशांश संख्या में हवन करना चाहिये। उसकी दशांश संख्या में दर्पण करना चाहिये। उसके दशंश मार्जन। उसका दशांश मन्त्रजापक ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन कराना चाहिये। यहाँ हवन की विधि विस्तारपूर्वक बताने के लिये सूची कटाह न्याय से पहले तर्पण की विधि बता दी गयी। तर्पण तो पवित्र तीर्थजल से उत्तम माना जाता है। परन्तु श्रीराघवजू "रामहि केवल प्रेम पिआरा" है। अतः जपकाल में प्रेमाश्रु विमोचन होता रहे, तो उसी प्रेमआँसू को आप अपना तर्पण मानकर रीझ जाते हैं। हवन में शुद्ध गोघृत चाहिये, आम्र आदि पवित्र काष्ट का हवनीय ईंधन होना चाहिये। हवनाग्नि अरणी मथकर प्रगट किया जाता है। हवनान्त में पशुबलि या हिंसा से बचने वाले के लिये नारियल की बलि देने की विधि है। ये सारी विधियाँ श्रीराघवजू के रिझाने में बदल देनी चाहिये। आप हवन में घृत की जगह, इसी संशय को जलाकर नष्ट कर देना चाहिये। जैसे अग्नि अपने सम्पर्क में आने वाली सभी वस्तुओं को जलाकर भस्म कर देता है, उसी भाँति क्षमा सभी अनिष्ठों को मिटा देती है। अतः क्षमा से हवनीय अग्नि का काम लिया जाय। ममता अर्थात् सांसारिक वस्तुओं में अपनपौ मानना ही सांसारासक्ति का मूल है। अतः ममता को ही बलि देकर अभाव कर देना चाहिये। इस प्रकार मन्त्र जपान्त हवन करने से चार प्रयोग तो आपको अनायास सिद्ध हो जायेंगे– १. उच्चाटन २. वशीकरण ३. मरण और ४. आकर्षण।

उच्चाटन से आपके सारे पापों को उचाट लगाकर भगा दिया जायेगा। वशीकरण से अनेकं यत्नों से भी एकाग्र नहीं होने वाला, आपका मन आपके ऐसा वशीभूत हो जायेगा जब तक चाहें, इसे इष्ट ध्यान चिंतन में लगाये रखें। मारण से आपके अभिमान और काम विकार का काम तमाम कर दिया जायेगा और आकर्षण सिद्ध होने पर सुख सम्पत्ति, सन्तोष विचार आदि शुभ वस्तुएँ बिना यत्न के आप के पास आ

जायेगी। ऐसी श्रद्धा, विश्वास और अनुराग पूर्वक मंत्र नाम जपने वालों को श्रीरघुपतिजी पहले भी प्राप्त हो चुके हैं और अब भी प्राप्त हो रहे हैं, भविष्य में भी सुगम, सुलभ ही रहेंगे। श्रीगोस्वामीजी का कहना है कि यह भक्त भी आपके प्राप्ति–पथ पर आरूढ़ है। अन्त तक इस मार्ग पर चलकर निवाहना, अपने मन की बात नहीं है। आपही की कृपा से निवहेगा।

अनन्त श्रीविभूषित स्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज ने अपनी नाम साधना विषयक पुस्तकों में सर्वत्र इस बात का आदेश दिया है कि साधक सर्वप्रथम सद्‌गुरु शरणापन्न होकर, उन्हीं से मंत्र और नमा की दीक्षा प्राप्त करे तथा नाम आराधना की रीति भलीभाँति सीखकर, उन्हीं के तत्त्वावधान में साधन करे। सर्वप्रथम आपके रचित श्रीसीताराम नामाभ्यास प्रकाश की कतिपय पंक्तियाँ उपर्युक्त आदेश सम्बन्धी हम यहाँ उद्धृत करते हैं। भाषा अवधी है। पाठक–खड़ी बोली वाले लेखन तथा व्याकरण की खोज यहाँ नहीं रखें।

'विचार किया जाना चाहिये कि ऐसे चारु चमत्कार चिंतामनि से विशेष मानव वपुको पशु, सिंह, भूतप्रेत, सम सुभव धारन करके, कौड़ी सम अनादर करना न चाहिये। ताते पुरुषोत्तम राम सुखधाम मिलाप निमित्त सांचे सतगुरु पदपंकज पराग के आश्रित होय के श्रुति संत संमत संयुक्त श्रीनामाभ्यास में सुचि रुचि करना परम उचित है। इह इष्ट पदार्थ सम्बन्धी समस्त दुखदाय प्रभु विमुखता के कारन हैं। ताते सत्संगी मतिमान सब स्थूल भोगरोग शोक सम मानि के केवल प्रभु प्राप्ति अभ्यास मं तत्पर होय। श्रीसतगुरु कृपा कटाक्ष के बिना, अभ्यास सफल नहीं होता। ताते श्रीगुरुद्वारे यतन में तत्पर होय, आलस प्रमाद त्यागि के।'

पुन: श्रीबड़े महाराजजी अपने श्रीयुगल वर्ण विलास नामक ग्रन्थ में लिखते हैं कि श्रीनामाभ्यास की अनुपम भूमिका यह है कि किन्हीं नामाराधन तत्पर महानुभाव के निकट श्रीनाम में प्रेम, विश्वास तथा नामजप की विधि सीखे। बारंबार चारों ओर ढूँढ़े कि नामाराधन में तत्पर निर्मल संत कहाँ मिलेंगे? अपने सौभाग्य से यदि उनकी प्राप्ति हो जाय, तो सावधानी से उनके पादारविन्द का सेवन करे। उनके संग में निवास करके, उनसे सुधासिंधु श्रीसीतारामनाम से स्नेह करने की रीति सीखे। पुन: उनसे श्रीनाम का अर्थ, श्रीनाम परत्व, श्रीनाम का महत्त्व, श्रीनाम की रसरूपता, श्रीनाम में पवित्र विश्वास आदि सीखे। श्रीनाम में भाव करना, नाम में उत्साह श्रीनाम के द्वारा दिव्य अनुभव कैसे हो, तथा निविघ्न रटन कैसे निवहे अपने मनोनीत करुणा सागर सद्‌गुरु से प्रवीण साधक सब सीख ले। नाम सम्बन्धी सारी ज्ञातव्य बातों की जानकारी प्रापत होने पर, साधक अपने सुपास देखकर या तो उन्हीं कृपालु सतगुरु के सानिध्य में रहकर, नामाभ्यास करे अथवा उनकी आज्ञा लेकर पृथक नामाभ्यास में जुट जाय। स्वाद ले लेकर नाम रटना चाहिये। नाम रटन में जहाँ जीभ को लगावे, तो उसके साथ–साथ मन भी लगा रहे। इससे हृदय में शाँति मिलेगी।

नाम मिलन की भूमिका, है यह परम अनूप।
नामाराधन जन निकट, प्रीति प्रतीति सुजूप।।

पुनि पुनि खोजे सकल दिसि, नाम निरत सत स्वच्छ।
विशद भाग्यवल पाय पद, सेवे सतत सुदक्ष।।
बसे संग सीखे सुधा, सिंधु सनेह सुरति।
अर्थ परत्व महत्व रस, रूप पुनीत प्रतीति।।
भाव चाव अनुभाव विधि, रटन उपाधि विहीन।
श्री सद्गुरु करुनेश पहँ, सीखे सकल प्रवीन।।
विदा होय वा संग बसि, जपे जौक जुत नाम।
मधुर मधुर मन जीह सह, दायक दिल आराम।।

हमारे पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज ने श्रीरामनामपरत्वपदावली में भी इसी प्रकार की बात लिखी है, साधक को चाहिये कि किसी नामानुरागी संतसे नामराधन की युक्ति सीखे। यदि नाम छोड़कर, हम अपने लोक परलोक बनाने का दूसरा उपाय कर रहे हैं तो उसमें हमारी भलाई नहीं हैं। इस मूर्ख मनका व्यर्थ भटकना माना जायेगा। हमारे चित्त को मोह, काम तथा अभिमान ने धोखा दे रखा है। इसीसे हम भोग साधक धन के लिये क्षुद्र संसारी धनी जीवों से अनुनय विनय करते फिरते हैं। अमोल आयु व्यर्थ समाप्त होती जा रही है। जब श्रीसद्गुरुदेव हममें श्रीनामाराधन का अटल गुण भर देंगे, तब किसकी सामर्थ्य किहमें साधन से डिगा सके? अत: नाम–साधना में कभी क्षणमात्रका विलंब नहीं करना चाहिए। परम करुणामय, कृपासिंधु श्रीराघवलाल का रूप हृदय में स्मरण करते हुये, उनके नामाभ्यास में तत्पर होना चाहिये।

कोई संत निकट गहु नाम कला।
केहि हित भटकि मरत मन मूरख, और जतन विच नाहि भला।।
बकता विपुल विनय वित हित नित, चित मद मोह मनोज छला।
जब सतगुरु दैहें अविचल गुन, तब कोउ केहि विधि सकत हला।।
जनि पल भर कीजिए अंतर कहुँ, अमल उमर लक्षु जात चला।
(श्री) युगलअनन्य शरन छल बल तजि, सुमिरन करू हिय राम लला।।

इस सम्बन्ध को और भी महावाणियाँ हैं। स्थानाभाव से सब उद्धृत नहीं कर सके। आजकल के कुछ तथाकथित निगुरा विद्वान् किसी संत विग्रह धारी गोविन्द को गुरु मानने को तैयार नहीं होते। वे श्रीगीता या श्रीमानस आदि किसी ग्रन्थको गुरु माने बैठे हुए हैं। उन्हें मन्त्र मर्म दर्शक उड्डीश तन्त्र के इस कथन पर ध्यान देना चाहिए।

पुस्तके लिखिता विद्या नैव सिद्धिप्रदा नृणाम।
गुरु विनापि शास्त्रेऽस्मिन्नाधिकार: कथंचन।।

अर्थात् पुस्तक में लिखी विद्या मनुष्यों को सिद्धि नहीं देती। तन्त्र शास्त्र में बिना गुरु के उपदेश के किसी प्रकार के कार्य का अधिकार नहीं है।

नाम जिज्ञासुको सर्वप्रथम नामानुरागी संतों से पूछकर नाम तत्त्व को जानना चाहिये। प्रथम लोकलाज, घरका सुखसाज छोड़कर, शुद्ध विरक्त बनकर, निश्छल भाव से सतगुरु की सेवा करके अन्तःकरण को शुद्ध बनावे। जगत् से उदासीन हो जाय। एक मात्र नाम रटन की अभिलाषा बढ़ावे। गृह, गृहसम्पत्ति, भूमि में ममता छोड़ दे। जो नाम छोड़कर, अद्वैत मत का ज्ञान सिखावे, उसे विरोधी मानकर, उसकी संगति त्याग देवें। श्रीनामानुरागी संतों को तन, मन, धन समर्पण करके, उनसे नाम तत्त्व का उपदेश लेना चाहिए।

'संतन समीप जाय पूछो नाम तत्त्व को।
प्रथम उपाधि लोक लाज सुख साज तजि
सजि के विराग शुद्ध सोधि सुचि सत्व को
होय के उदास अभिलाष नाम मध्य करि
धरा धन धाम छल छोड़िये ममत्व को।।
संगति विशेष त्यागि दीजिये विरोधी मानि
कहत जो ज्ञान नाम रहित एकत्व को।
(श्री) युगल अनन्य तन मन धन सौंपि पुनि
संतन समीप जाय पूछो नाम तत्त्व को।। ९९३।।

अनुभवी संतों से नाम तत्त्व पूछना इसलिये है कि नाम रहस्य अतिशय गोपनीय है जो नाम प्रभाव प्रगट रूप से देखने में आता है, वह तो श्रीनाम सरकार की कृपा है। पतितों के उद्धार हेतु इतना प्रभाव प्रकाश करना आवश्यक था। जैसे–जैसे आप नाम रहस्य जानते जायेंगे तैसे–तैसे अधिकाधिक जानने की जिज्ञासा बढ़ती ही जायेगी। श्रीनाम के विशुद्ध और अनुपम अर्थ को काम क्रोध जीतने वाले समर्थ श्रीशिवजी, श्रीशेषजी, परमहंस वर्य श्रीशुकदेवजी जान पाये हैं। जब नामानन्द में मगन करुणावान संत सौभाग्यवश किसी बड़भागी नवीन साधक को मिल जायें, तब श्रीनाम की लगन जगे, और सांसारिक भोग–पदार्थ का लोभ लालच मिट जाय। श्रीबड़े महाराज जी कहते हैं कि मतिमंदो के लिये नितांत गुप्त नाम रहस्य अगम है।

नाम को रहस्य अति गोप हू ते गोप है।
प्रगट देखात सो तो पावन पतित हेतु
बढ़े जावे जानिवे की आगे आगे चोप है।
अमल अनूप अर्थ अकथ समर्थ शिव
शेष सुक जान्यो जिन जीत्यो काम कोप है।।
मिले सुख रास संत करुना निकेत तब
लगे लाग बाग होय जाय लोभ लोप है।
(श्री) युगलअनन्य मोसे मंद न निहारि सके
नाम को रहस्य अति गोपहूँ ते गोप है।। ९९४।।

सच्चे नामानुरागी एवं अनुभवी सद्गुरु यदि श्रीनामसाधक–को पथ प्रदर्शक रूप में मिल जाते हैं, तो साधक का साधनपथ बहुतही सुकर हो जाता है। यदि दुर्भाग्यवश, कहीं किसी साधक को ऐसे सुयोग्य अनुभवी सद्गुरु न मिले, तो साधक को उचित है कि किसी भी अन्य सुयोग्य नामनिष्ठ महानुभाव के समाश्रित होके, श्रीनामसाधना में तत्पर होवे। श्रीबड़े महाराज की महावाणी के प्रकाश में ऐसे सद्गुरु ढूढ़िये।

साँचो सतगुरु सिरताज महाराज तौन
जौन निज नाम उपदेशो दोष दलि के।
प्रगट अघट अटपट के विहीन पर
तत्त्व दरसावै मान मोह मद मलि के।।
भावना भरम अधरम असरम मेटि
महामुददान दियो चारो छली छली के।
(श्री) युगलअनन्य ऐसे गुरु सदयाल ढिग
कोटि काम धाम तजि रहो पास चलि के।। २२१७।।

"गुरु बिनु होई कि ग्यान, ग्यान कि होहि विराग बिनु।" परमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज भी गुरु शरणगति की आवश्यकता बताते हुए कहते हैं।

जद्यपि नाम परत्व बहु, पोथिन में विख्याता।
प्रेमलता गुरु ग्यान बिनु, निगुरनि नाहि लखात।।
नाम तत्त्व अतिसय अगम, गुरु बिनु गावहि संत।
प्रेमलता जिमि मसकही, दुर्लभ सागर अंत।।
नाम तत्त्व लहि सुगुरु सन, रटत सदा इकतार।
प्रेमलता ते अचल जिमि, साधु धर्म संसार।।
विधि निषेध के पार जो, परम सार को सार।
प्रेमलता सूझत नहीं, गुरु बिनु नाम उदार।।

सरल भाषा में लिखित दोहे की व्याख्या अनावश्यक समझी गयी

सुख निधान गुरुदेव मिले मोहि सोइ मेरे उर वस्ते हैं।
रटवावहि सियराम कृपाकरि रोकहि जात कुरस्ते हैं।
तेहिलगि कठिन विषय कामादिक जनमन अधिक न धस्ते हैं।
प्रेमलता जे लाल गुरुन के रहहि सदा अलमस्ते हैं।। १३।।
गुरुपद विमुख मनमुखी मूरख परपद पाइउ खस्ते हैं।
रटतौ नाम न सुख सिद्धि सरसत जद्यपि तन बहु कस्ते हैं।।
काढ़त खीस उदर लगि निसिदिन डोलत दर दर सस्ते हैं।
प्रेमलता गुरुदेव कृपा बिनु फिरि–फिरि भोगनि फँस्ते हैं।। १४।।

जो न रटै सियराम नाम जन गुरुमुख होइ धरि नरदेही।
जीवत मुये समान फिरहि जग खर कूकर निंदत तेही।।
झूठे नाते जोरि तजे सठ सीतावर अस असनेही।
ज्ञान ध्यान बहु कथै भजन बिनु प्रेमलता मनमुख गेही।

श्रीहितोपदेश—शतक

श्रीरामनाम—शरणागति

जिन श्रीरामनाम सुधाधाम के प्रभाव से श्रीब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा लक्ष्मी आदि वैकुण्ठ के पार्षदगण, अपने—अपने पदों पर सुशोभित हो रहे हैं तथा जिस तत्त्वका सेवन कर, मुनीन्द्र, योगीन्द्र अपने—अपने मार्गमें चमत्कार पाये हुये हैं, उन्हीं श्रीरामसरकार की शरण में हम भी प्राप्त हो रहे हैं।

राजन्ति यद्विष्णु शिवस्स्वयम्भुवो
लक्ष्म्यादि वैकुण्ठ चराश्च नित्याः।
तदेव तत्त्वं च मुनीन्द्र योगिनां
श्रीरामनामामृतमाश्रयं मे।।

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण अपने परमभक्त श्रीअर्जुनजी को आदेश दे रहे हैं कि जो प्रेमी भावुक श्रीरामनाम का आश्रयण किये हुये हैं वे सदा कृतार्थ रूप हैं। मैंसत्य—सत्य कहता हूँ, मेरी बातों को अन्यथा न मानना।

रामनामाश्रया ये वै भावुकाः प्रेम संलुप्ताः।
ते कृतार्थास्सदा तात सत्यं सत्यं न चान्यथा।।

शरणागति लेने से श्रीरामनामही जापक के रक्षक बनकर, उसकी सदैव सुरक्षा करते रहते हैं, अतः शत्रु उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देख सकते, दुष्ट ग्रहगण, उसे कोई बाधा नहीं पहुँचा सकते, राक्षस उसे खा नहीं सकते। नामजप में तत्पर रहना चाहिये। दण्डकारण्यके “निसिचर निकर सकल मुनि खाये।” वे मुनिगण श्रीनामजापक नहीं रहे होंगे।

रिपवस्तस्य च पश्यन्ति न वाधन्ते ग्रहाश्च तम्।
राक्षसाश्च च खादन्ति नरं रामेति वादिनम्।।

— श्री सूतसंहिता

श्रीमार्कण्डेय संहितामें कहा गया है कि श्रीरामनाम के आश्रित होनेपर, श्रीनाम—सारकार दर्शनानुसार आर्तभक्तों को इष्ट दर्शन कराकर प्राण रक्षा करते हैं तथा शरीरान्त होने पर, अपने इष्टके मिलन में दृढ़ विश्वास रखकर सन्तोषपूर्वक कालक्षेप करने वाले दृप्त भक्तों को दिव्यानन्द देते रहते हैं।

आर्त्तानां जीवानां नित्यं दृप्तानां वै विनोददम्।
भक्ताणां त्राण कर्त्तारं रामनाम समाश्रये।।

श्रीविश्वामित्र संहिता का वचन है कि कलिकाल में श्रीनाम सरकार के प्रपन्न महाभाग धन्य है, बड़े पुण्यवान हैं। शरणागति धर्म का आग्रह है, शरण्येतर अन्य साधन की आशा भरोसा का त्याग करना। सो श्रीरामनाम के आश्रित योगादिक साधनों को भलीभाँति त्याग कर, एकमात्र नाम साधना में निष्ठा रखते हैं।

धन्याः पुण्याः प्रपन्नास्ते भाग्ययुक्ताः कलौयुगे।
संविहायाथ योगादीन राम रामैक नैष्ठिकाः।।

श्रीमार्कण्डेय संहिता में कहा गया है कि श्रीरामनाम ऐसे शरणागत रक्षक हैं कि आश्रित जापकों के विवेकादिक शुभाचरण की रक्षा करने में सदैव तत्पर रहते हैं और आश्रितों को सुख देने में तो परमानन्द के स्वरूप ही हैं।

विवेकादीन् शुभाचारान् रक्षणाय सदोद्यतम्।
श्रीरामेति सन्नाम परमानन्दविग्रहम्।।

श्रीरामरक्षा स्तोत्र में कहा गया है श्रीरामनाम के द्वारा सुरक्षित रहने वाले को पाताल, भूतल या आकाश में विचरने वाले कपट रूप धारी दुष्ट गण दुखदायिनी नजर उठाकर देख भी नहीं सकते।

पाताल भूतल व्योम चारिणःश्छद्म।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः।।

पतंञ्जलि संहिता में भी यही बात आयी है कि वात्सल्यसिन्धु परब्रह्म रूप श्रीरामनाम को छोड़कर माया से रक्षा पाने का दूसरा कोई उपाय नहीं है। हम सत्य कहते हैं।

राम नाम परब्रह्म त्यक्त्वा वात्सल्यसागरम्।
अन्यथा शरणं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्।।

सांखल्य स्मृति में कहा गया है कि जिन श्रीरामनाम के सुनने से अथवा कीर्त्तन करने से, मानव सभी आपत्तियों से बच जाता है, हम उन्हीं श्रीरामनाम रूपी मंत्र के शरणापन्न होते हैं।

"श्रवणात्कीर्त्तनाद्यस्य नरो याति निरापदम्।
तच्छ्रीमद्राम नामाख्यं मन्त्रे वै संश्रयाम्यहम्।।"

वृहन्नारदीय का वचन है कि परात्पर ब्रह्म श्रीरामनाम के ही सदा शरणापत्र होना योग्य है। हम लोगों के संत समाज के लिए अन्य साधनों का आश्रय लेना अनर्थकारक है।

"श्रीमद्रामेश नाम्नस्तु सततं शरणं व्रजेत्।
अस्माकं सत्समाजेषु पायान्तरमनर्थकम्।।"

नृसिंहपुराण में भक्तवर श्रीप्रहलाद जी अपने भगवत्विमुखी पिता का हित बताते हुये कहते हैं कि श्रीरामनाम के प्रभाव से सब बन्धनों से जीव मुक्त हो जाता है। अत: दैत्यराज! आप भी उन्हीं श्रीनाम सरकार की शरणगति ग्रहण करें।

राम नाम प्रभावेण मुच्यते सर्व वन्धनात्।
तस्मात्त्वमपि दैत्येश तस्यैव शरणं ब्रज।।

श्रीकालिका पुराण में कहा गया है कि सभी शक्तियों को उत्पन्न करने वाले तमोगुण से अतीत श्रीरामनाम ही परात्परतम ब्रह्म हैं। अपनी शरण में आने वालों को बहुत बहुत सुख देते हैं।

सर्वासामेव शक्तीनां कारणं तमस: परम्।
श्रीराम नाम सर्वेशं सौख्यदं शरणार्थिनाम्।।

श्री बड़े महाराज श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका (१७) में कहते हैं कि करुणानिधान सुजान शिरोमणि श्रीनाम सरकार की कृपा दृष्टि चाहिये। नाना प्रकार के वेश बनाने से क्या होगा? मरा मरा कहने वाले श्रीवाल्मीकि हराम शब्द कहने वाला यवन नामाभास के कारण, किरात सूग्गा को राम नाम पढ़ाने वाली वेश्या करोड़ों पापी श्री नाम सरकार की शरणागति से परम साकेत धाम को पहुँच गये श्रीनाम का सुयश चारों युगों में संसार भर में जगमगाता आया है ऐसा स्वयं वेद ही कहते हैं। श्रीनाम सरकार को रिझाने के लिये केवल विश्वास और श्रद्धा प्रेम की आवश्यकता है इनके अभ्यास में पैसे कौड़ी तो खर्च करना ही नहीं पड़ता।

सीताराम नाम करुनेश की नजर नेक
चाहिये हमेश वेश और कौन काम को।
वाल्मीकि जमन किरात गनिकादि कोटि
ओट नाम सरन सुपायो पर धाम को।।
चारि युग जाहिर जहान जगमग जस
सरस सुनाम वेद वदत अराम ते।
युगल अनन्य चित्त चाहिये प्रतीति प्रीति
नाम सुमिरन मांझ खरच न दाम को।।

जिन्होंने श्रीनाम महाराज की शरणागति लेकर अहर्निश नामभ्यास किया है उन्हें आप अपनी आँख से ही देख लीजिये कि वे तीनों गुणों से अतीत हो गये कि नहीं? उनके सन्निकट में रहेंगे सत्य, शांति, शील अन्त:करण शुद्धि, सच्चे स्नेह का शौक आदि शुभ गुणगण। नाम शरणागति को आप स्वयं अजमाकर देख क्यों नहीं लेते हैं कि कितना बड़ा सौभाग्योदय होता हैं इनसे? आप भली–भांति देखियेगा कि ऐसे कौन से दिव्य गुण हैं जो नामजापक को प्रत्यक्ष न प्राप्त हो जाय? अर्थात् सब सुलभ है। नाम जापक संतों का संग तो दर्पण है। अपना सहज दिव्य श्रीराघव पार्षद रूप देखना हो तो इसी सत्संग दर्पण में देख लीजिये। अर्थात् नामिष्ठ संतों के संग से अपने दिव्य रूप का बोध होता है।

नाम महाराज के शरन भये जौन जन
तौन तीन गुन तें अतीत दृग देखिये।
सत्य शान्ति शील सत्त्व शुद्धता सनेह शौक
साजन समीपता सुभाग अवरेखिये।।
ऐसौ कौन दिव्य भव्य सुगुन रटत नाम
होय अपरोक्ष नाहि भली–भाँति लेखिये।
(श्री) युगल अनन्य संत संग आरसीस बिच
सहज स्वरूप अवलोकनो विशेषिये।। २९।।

आप श्रीनाम कृपालु के समाश्रित हो जाइये और दिव्य आनन्द वाग की कोयल बनकर कलरव करते रहिये। श्रीनाम शरणागत के ऊपर काम का, कलिकाल का कोई भी दुष्ट प्रभाव नहीं पड़ने को। आवश्यकता है सुधाधाम नामाभ्यास में मन को रमाकर नित्य रात भर जगकर नाम रटते रहे। ऐसे नाम जापक के द्वार. पर सदा निर्भयता का नगाड़ा बजा करेगा।

नाम कृपाल के आसरे हूजिये कूजिये वाग विनोद विलच्छन।
काम कलाल की शक्ति चले नहि काह करे कलिकाल कुलच्छन।।
जागिये रैन सुचैन सुधानिधि नाम से चित्त रमाय अनुच्छन।
युग्म अनन्य निशान अभै बजवाइये शौक समेत विचच्छन।।

हे श्रीनाम सरकार अब तो मैंने आपकही की शरणागति ले ली है। जब मर्जी हो तभी अपनाइये। अपनाना है आपही को, मेरी बुद्धि मलिन मंद आदि मलिन स्वभाव से मिलकर विष में ही महामोदमयी मधुराई मान रही है। हृदय में विचार कर देख लिया है विषय रुचि आदि कलंक कालिमा कीचड़ में सदैव सना हुआ हूँ। श्रीसियाजू की चेरी कहवाने मात्र को हूँ। जगत से फेरने पर भी तनक भी मन भिन्न नहीं होता, वृत्ति सदा वहिर्मुखी बनी रहती है। अब रक्षा आपही की कृपा पर है।

मेरी मति मलिन मदादि मलमूल मिलि
मानत मधुर मोद माहुर मनाय के।
हेरी हिय बीच कीच कालिमा कषाय कुल
घेरि रही संतत न फेरी फिरी धाय के।।
चेरी कहवाय जाय जग ते न नयारी नेकु
रहत वहेरी दिशि बहत अघाय के।
(श्री) युगल अनन्य नाम तेरी हौं शरन अब
चाहो जब तब अपनावो दृग लायके।। १९२।।

नामानुरागी जापक श्रीनाम बल से ऐसे साधनश्रम सहिष्णु तितिक्षु तपोनिष्ठ बन जाते हैं कि कायरों को भय होने लगता है कि हम से इतना कष्ट क्यों कर सहन होगा? परन्तु विचारना चाहिये कि इस कलिकाल रूपी

मत्तगयंद से सुरक्षा श्री नामसिंह ही कर सकते हैं। यदि अन्य साधन रूपी सियार में जायँ तो बेचारे स्वयं जान लेकर भाग खड़े होंगे।

"वात बनाने से क्या हासिल जब तक नाम न जपते हो।
कथनी का कूड़ा बटोरि के मोद मानि खल खपते हो।।
नाम सनेह सहित संतन की कथा सुने पर कँपते हो।
युगलानन्य शरण पंचानन निदरि स्याल पहँ छपते हो।। ११।"

श्रीनाम के समाश्रित हो जाने पर श्रीनाम सरकार अपने आश्रित के ज्ञान–वैरी कामादि का नाश कर देते हैं। अज्ञानता आने देते नहीं। नाम रटते ही नामनशे में जापक चूर हो जाता है। श्रीनाम सम्मुख होते ही इन्द्रिय देवता साधन में अड़चन नहीं डाल सकते। जगत प्रपंच मिथ्या चिंता मिथ्या विषयरस का सुख स्वयं भयभीत हो जाते हैं।

बोध विरोध अबोध धमक हर नाम रटत छकि छावे।
कर न सकत अबरोध अमर जब अभय नाम समुहावे।।
फरक फरेब फिकर फानी फल विषम फनीश सकावे।
युगलानन्य शरन साबित जब सियराम नाम अपनावे।। १०२।।

श्रीनाम शरणागत होते ही परब्रह्म श्रीजानकी रामणजू की प्राप्ति हो जाती है। अष्ट सिद्धि नवोनिधि ऋद्धि नामशरणागत का रुख जोगाने लगती हैं, ये आज्ञा प्रतीक्षा करती है, सिर उठा कर उनकी ओर देखने में भी सकुचाती है। उसके लोक (दुनियाँ) तथा परलोक (दीन) दोनो अनायास (मेहनतहीन) बन जाते हैं। अन्यथा वह वैष्णव वेश का नमकहराम है।

सिद्धि रिद्धि नवनिद्धि निहारत नैन रहे निज नामी।
सिर उठाय नहि सकहि तकति निर्देश बिगत बदनामी।।
मेहनत हीन दीन दुनिया तिमि वेष सुनोन हरामी।
युगलानन्यनाम शरणागत भए प्राप्त पर स्वामी।। १९१।।

जपने का दृढ़ संकल्प

श्रीनाम. शरणापन्न होने पर नाम साधना के लिए दृढ़ संकल्प करे। संकल्प नीचे लिखे प्रकार से करना चाहिये।

नाम जप में बहुत बड़ी बाधा है अधिक सोना, दिन का समय जगत के व्यवहार शारीरिक कृत्यादि में अधिक चले जाते हैं। भजन का निश्चित समय मिलता है रात में। अतः रात्रि जागरण का संकल्प करे। दो घड़ी का अर्थ ४८ मिनट है। दिनरात मिलाकर इससे अधिक निद्रा को नहीं देवे। कामविकार को भलीभांति जीतना है। किसी से कोई प्रयोजन नहीं रखे। संसार से उदासीन हो जाना है। इस प्रकार संयम का संकल्प कर नामाभ्यास करते–करते श्री नाम के सुखसिंधु में प्रवेश कर उसी में मगन रहने का शुभ संकल्प करे।

(झूलना छंद) आज से रैन दिन सैन करिहौं नहीं
लेटि युग घड़ी उठि बैठना है।
मारि मन मदन को शौक सद सदन में
होय हुशयार अब पैठना है।।
किसी से काज कछु मीत मुझको नहीं
विश्व से भली विधि ऐंठना है।
युगल अनन्य श्री नाम सुखा सिन्धु में
दम वदम मौज मिलि मैठना है।। १२२७।।

अब हमें दृढ़ विश्वास हो गया है नाम ही रटने से परमानन्द में मगन रह सकते हैं। नामं विमुखी घोर चिंता में व्याकुल रहते हैं। उन्हें अमिट अपराधों की कलंक कालिमा लगती रहती है। अत: हम तो नाम रटन का संकल्प लेकर इनसे पिंड छुड़ा रहे हैं। हम श्रीनाम शरणागत हो गये हैं। श्रीसुखसिंधुनाम की कृपा से अब मुझे कोई विघ्न बाधा नहीं व्यापेगी। ऐसे सतत सावधान तो हम रहेंगे ही। अब अपने जप गृह में अचल जमकर अपने नामजप से कभी डोलेंगे नहीं। अब क्या फिर फिर इस संसार में आना है। श्रीनामवल जो साथ है।

कठिन कलंक वंक विषम विषाद बल
विवस विहाल होय आप न रहायेंगे
सदा सावधान सुखखान की कृपालता में
भूलेहू के कभी खौफ खतरा ना खायेंगे।।
अचल अडोल नित रहिहौ निकेत निज
फेर भव बीच पार आवैंगे न जायेगे।
युगल अनन्य दृढ़ प्रवल प्रतीति उर
नाम रट लाय परानन्द में समायेंगे।। १७८९।।

आज से नींद को भलीभांति से जीतना है। नामजप से जागरण सुकर हो जायेगा। नामजप का बाधक है खान पान का सुख। अत: नाम साधना रूपी तपस्या—कष्ट सहकर, इसे छोड़ूँगा। किसी से अपना हालनहीं कहना हैं कोई श्रीनाम के एकांगी मार्ग का ज्ञाता भी तो नहीं, जो मुझे राह बतावे। तब गँवार आदमी से क्या वार्ता करना है? नाहक अपने वचन का अपव्यय। श्रीजानकीनाथ के चरणाश्रित होकर, श्रीनाम पर अपना जीजान सपर्मण कर दूँगा।

आज से भली—भांति, जीतिहौं निंद को
जानकी नाह निज नाम जपि के।
खान और पान दुखखान व्यवधान कर
छोड़िहौं नाम तप तीव्र तपि के।।

किसी के साथ निज गाथ कहिहौं नहीं
कौन वाकिफ शबद वृथा खपि के।
भनै युग्म आनन्य जीजान को वारिहौं
जानकीनाथ पद छाँह छपिके।। १८३१।।

(श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका से)

प्रेमपूर्वक श्रीनाम के महत्त्व प्रभाव का ज्ञान प्राप्त कर लेने से ही परमपद की प्राप्ति सुगम हो जाती है। नामजप में तत्पर होने पर वाद विवाद, हृदय को क्रोधाग्नि से दग्ध करने वाला मालूम पड़ता है। यह विषाद बढ़ाने वाला एक कलंक है। इसे छोड़ दूँगा। नाम नेहहीन जीवन को धिक्कार है। अत: अब नाम ही का गान करूँगा। जैसे नामजप करूँगा, उसी भाँति श्रीनामी का अखंड ध्यान करके नाम रूप दोनों के परमानंद सुख में मगन रहूँगा।

नाम निरूपन नित्य नेह से करत पदम पद पावेंगे।
वाद–विवाद विषाद दाग दुख आग अनेक बहावेंगे।।
नाम सनेह रहित धिग जीवन नाह नाम ही गावेंगे।
(श्री) युगलानन्य अखंड ध्यान धरि नामी नाम समावेंगे।। ४०।।

शाप–आशीर्वाद तो भूत प्रेतों के दुष्टकार्य जैसे हैं। इन दोनों में कोई भी नहीं देना है। अपने पराये का विचार तो जगत का प्रपंच है। इसमें रागद्वेष का हृदयताप बढ़ता है। ऐसा विचार कर इसे छोड़ नाम रटनपूर्वक नामकी माधुरी का समास्वादन करूँगा। जिस जीभ पर सर्वमंत्रमौलमणि श्रीसीताराम नाम सरकार विराजमान हो गये, उस जीभ से नामेतर शब्द को असत्य मानकर बोलूँगा नहीं। दुष्टों की, निंदकों की कड़वी आलोचनात्मक वाणी सुनकर कभी क्रोध नहीं करूँगा।

साप अशीष खवीस हरक्कत हरगिज एक न राखेंगे।
आपा पर प्रपंच पावक सम समुझि नाम रस चाखेंगे।।
सर्वोपरि सिरताज नाम गहि रसना असद न भाषेंगे।
श्री युगलानन्य कटुक वानी सुनि तीनों काल न माषेंगे। ४१।।

अपनी निंदा को अमृत से भी सहस्रगुना मधुर मानकर मन ही मन प्रसन्न होऊँगा। लोक बड़ाई कूड़े कचरे के ढेर के समान उपेक्षणीय है। अत: इसे छोड़ने पर ही नामरंग चढ़ेगा। नाम जप से परमानंद सिंधु में मगन होकर षट् विकारों को त्यागूँगा। जैसे घुन भीतर ही भीतर लकड़ी खा डालता है, उसी भाँति ये विकार हृदय के श्रद्धा विश्वास को खा डालते हैं। अब श्रीनामकृपा से मनोराज, संकल्प विकल्प मुझे नहीं उपद्रव कर पायेंगे।

निज निंदा पीयूष सहस सम मिष्ट मानि मन मातेंगे।
लोक बड़ाई धूरकूर घर–घूर बूझि रंग रातेंगे।।
महामोद सत नाम सिंधु में मगन होय घुन घातेंगे।
श्री युगलानन्य सुनाम कृपा लहि चित चरखा नहि कातेंगे।। ४२।।

अब तो मुझे सतत् नाम स्नेहपूर्वक जपकर अपने हृदय में प्रेमानन्द उमगाना है। मेरा मन रूपी हाथी अनादि काल से कामविकार के दल–दल में फँसा है। श्रभ्नाम बल से इसे बाहर निकालूँगा। प्राण प्रियतम श्याम सलोने श्रीजानकी कांतजू से दिव्य सम्बन्ध स्थापित करने में ही अपने स्वरूप की शोभा सरसाना है। अपने शरीर की सभी इन्द्रियों से भी नाम ही का पाठ पढ़ाना है। जीभ नाम रटे, का नाम सुने, आँख नामाक्षरों के दर्शन करे, हाथ माला फेरे, पैर आसन की दृढ़ता सजे, हृदय नाम का ध्यान–धारण करे।

नाम सनेह संग हरदम रसरंग उमंग बढ़ाना है।
काम–कलंक–पंक से बेशक मन मातंग कढ़ाना है।
श्याम सजन संबंध सोहावन भूषन विशद गढ़ाना है।
युगलानन्य व पुष बासिन सन नाम सुपाठ पढ़ाना है।।

श्री युगल नाम जपना चाहिये

नृसिंहपुराण कावचन है कि रामनाम के अर्थ करते समय श्रीसीता शब्द का रकार मकार में अन्तर्भाव हो जाता है, क्योंकि श्रीनामार्थ वैभव ज्ञान विज्ञान से भी परे है। फिर भी नाम प्रकट रूप से युगल होवे। युगल नाम में पहले परमपावन सीताराम का उच्चारण करें पीछे श्रीरामनाम कहें। इसी भाँति सीताराम–सीताराम जुगलनाम प्रशंसनीय है। यदि किसी को दो ही अक्षर के श्रीरामनाम ही जपने का विशेष आग्रह हो, तो वह भी श्रीराम–राम कहते–कहते बीच–बीच में सीता नामका आदरपूर्वक उच्चारण करता रहे। श्रीसीतानाम के सहित श्रीरामनाम का जप, जिस जापक को परमप्रिय है, वह कृतकृत्य हो गया। उसे बड़े–बड़े देवगण पूजा करते रहेंगे।

रामनामार्थ मध्येतु साक्षात् सीतापदम्प्रियम्।
विज्ञानागोचरं, नित्यं मुने श्री रामवैभवम्।।
आदौ सीता पदं पुण्यं परमानन्द दायकम्।
पश्चाच्छ्री रामनाम्नस्तु कथनं संप्रशस्यते।।
युग्मं वर्ण जपेद्यर्हि तदा सीतेति कीर्त्तयेत्।
सावकाशे सदा भक्त्या मध्ये समादरात्।।
सीतया सहितं रामनाम येषांपरं प्रियम्।
त एवं कृतकृत्याश्च पूज्या सर्वे सुरेश्वरैः।।

जपमें श्रीसीतानाम का भी उच्चारण इसलिये आवश्यक है कि श्रीसीतानाम में श्रीरामनाम की अपेक्षा अत्यधिक प्रभाव भरा है। कहते हैं कि यज्ञ, दान, तप, तीर्थाटन वेदाध्ययन, आत्म स्वरूप का ज्ञान आदि जितने भी परमार्थ साधक उपाय हैं, उनसे करोड़ों गुणा अधिक जापक को पावन करने का प्रभाव श्रीरामनाम में भरा है। श्रीरामनाम से भी कोटिगुणा अधिक पावन श्रीअनादि सिद्ध नाम श्रीसीता है। ऐसा ही मानकर, श्रीनारदादि मुनिगण युगल नाम का ही जाप करते हैं। श्रीसीतानाम जपने का सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि

दस प्रकार के शास्त्रोक्त नाम अपराध जगज्जननी जानकी जी अपने नामजापक द्वारा होने ही नहीं देती है। यह आपही का स्वभाव है जो

करौ सदा तिनकी रखवारी। जिमि बालक राखइ महतारी।
गह सिसु बच्छ अनल अहि धाई। तहँ राखइ जननी अरगाई।।

यदि कोई भी सीतानाम से उदासीन होकर, इस अनन्तकोटि मातृवत् नामकी उपेक्षा कर दे, तो सतत् नामापराध होते रहने के कारण, उसके अनन्तकोटि भी एकमात्र रामनामका जप फलदायक होने में संदेह बना रहेगा।

यज्ञदान तपस्तीर्थ स्वाध्यायाध्यात्मबोधत:।
कोटि संख्यं राम नाम्नि पावित्र्यं वर्त्तते प्रिये।।
तत: कोटि गुणं पुण्यं सीतानाम सनातनम्।
इति मत्वा अजन्त्येतान् मनयो नारदादय:।।
सीतया सहितं यत्र रामनाम प्रकीर्त्यते।
न तत्र नामदोषाणां प्रवृत्तिस्स्यात्कथंचन।।
यावन्न कीर्त्तयेदस्या नाम कल्मषनाशनम्।
अनन्तं कोटि जपतोऽपि न राम: फलसाधक:।।

श्रीसीतानामकी महिमा प्रगट होने पर, श्रीरामनाम की महिमा में अपेक्षाकृत न्यूनतम आ जायेगी। अत: श्रीप्रियाजीकी इच्छासे ही श्रीसीतानाम का माहात्म्य सर्वत्र गुप्त रखा गया है। किन्तु श्रीप्रिया भक्ति में मग्न रसिकजन, उन्हीं कृपामयी श्रीस्वामिनीजी के अनुग्रह से श्रीप्रियानाम परत्व तो जानही जाते हैं। श्रीब्रह्मरामायण में कहा गया हैं

सीतानाम माहात्म्यं सुगोप्यं सर्वत: शुभम्।
रसिका प्रेम संमग्ना जानन्ति तदनुग्रहात्।।

एक बात और है। अकेले रामनाम जपने से भगवत्प्रेम की प्राप्ति अवश्य होती है; किन्तु प्रभुके परम प्रेम की प्राप्ति तो श्री युगलनाम जपसे ही संभव है। हाँ जपना चाहिये यत्नपूर्वक। कथन में आप तनिक सा भी संदेह न करें। ऐसा श्रीशिवपुराणका वचन है।

सीतया सहितं य रामनाम जाप्यं प्रयत्नत:।
इदमेव परं प्रेम कारणं संशयं बिना।।

इतना ही नहीं। युगल नाम जप से आपको नाम जपका स्वाद भी अपार मिलेगा। श्रीसुयज्ञ संहिता में कोई नामजापक कहते हैं कि मैं सभी नामों और साधनों को छोड़कर, श्रीरामनाम ही जपता हूँ और नाम में स्वाद के लिये, अत्यधिक आनन्दानुभव के लिये, श्रीरामनाम के साथ श्रीसीतानाम को युक्त कर लेता हूँ।

रामनाम कथयाम्यहमन्यान्यापहाय।
सीता नाम संयुक्तं यत्स्वादुसुखाय।।

श्रीयुगलनाम संयुक्त होने से ही परम भक्तिरसकी वर्षा नामजापक पर होने लगती है। देखिये पूर्ण चन्द्रमा के साथ शरद रातका योग होता है, तभी सुधावृष्टि होती हैं

तुलसी जनकसुता विना, जो सुमिरे रघुबीर।
शरद रैनि विनु चन्द्रमा, स्रवै न अमृत नीर।।

अत: श्रीमानस आदेश हैं। श्रीअवध पुरजन परस्पर में आदेश कर रहे हैं।

जनकसुता समेत रघुवीरहि। कस न भजहु भंजन भव भीरहि।।

वृहन्नारदीय का वचन है कि सीताराम युगल नाम ही में सुधा के निवास हैं। जो जापक सदा भक्तिपूर्वक युगलनाम जपते हैं, उनके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

सीतारामात्मकं नाम सुधाधामं निरन्तरम्।।
ये जपन्ति सदा भक्त्या तेषां किंचिन्नदुर्लभम्।।

हमारे परमाचार्य श्रीस्वामी युगलानन्यशरणजी महाराज स्वरचित श्रीजानकी सनेह हुलास शतक नाम ग्रन्थ में कहते हैं कि परम मनोहर श्रीसीतानाम महामधुर रसका निवास है। यदि मनमें इस नामकी किंचित झलक ध्याताको हो जाय, तो उसका सम्पूर्ण हृदय परमानन्ददायक प्रकाश से भर जायेगा। इस महामधुर नामजप से इतना स्वाद मिलेगा कि अमृत उसके आगे व्यर्थ एवं स्वादहीन प्रतीत होगा। हृदय में इतना अपरिमित आनन्द उमड़ आवेगा कि अन्य किसी सुखकी इच्छा शेष नहीं रहेगी।

महामधुर रसधाम श्री, सीता नाम ललाम।
झलक सुमन भासत कबहुँ, होत जोत अभिराम।।
सुधा सीठ मानहु मुधा, रटत मधुरतर नाम।
रहत न हिय अभिलाष पुनि, पावत परमाराम।।

श्रीजानकीस्तवराज में आया है कि भगवान् शंकरजीने देवताओं की दिन गणना के हिसाब से दिव्य सौ वर्षों तक श्रीसीतामंत्र के बिना अकेले षडक्षर श्रीमंत्रका वेद विधि से अनुष्ठान किया था। जपांत में श्रीराघवजीने बहुत खिन्न रूप में दर्शन देकर कहा श्रीशिवजी शीघ्रातिशीघ्र अपना अभीष्ट वरदान माँग लीजिए। मुझे श्री मैथिलीजी के बिना अकेले ठहरने में अत्यन्त कष्ट हो रहा है। श्रीशिवजी की प्रार्थना से स्वयं श्रीराघवजी ने श्री शिवजी को श्रीसीतामंत्रका उपदेश देकर, युगलमंत्र एक साथ जपनेकी आज्ञा दी। युगलभाव में भक्ति देखकर, श्रीराजकिशोरीजी ने भी दर्शन देकर इन्हें कृतार्थ यिा। श्रीराघवजी के निवास गृह श्रीसियाजू हैं। श्रीमैथिलीजी शरीर है। श्रीराघवजू उसमें प्राणभूत है। अत: युगलनाम ही जपना चाहिये। 'परमहंस श्रीसियालालशरण' उपनाम श्रीप्रेमलताजी महाराजने यह प्रसंग अपने श्रीवृहद् उपासना रहस्य में भी लिखा है। स्थानाभाव से हम वह उद्धरण यहाँ नहीं दे सके। श्रीदेव स्वामी को भी युगल नाम जप में, श्रीसीताराम का अपार स्वाद मिला है। अपना अनुभव आप इस प्रकार कह रहे हैं कि श्रीजानकी–नाम–ध्यान–दर्शन में मनको आकर्षण करने वाले हैं। जपने में परम स्वादिष्ट हैं। जपके लिये

लिखा है। स्थानाभाव से हम वह उद्धरण यहाँ नहीं दे सके। श्रीदेव स्वामी को भी युगल नाम जप में, श्रीसीताराम क़ा अपार स्वाद मिला है। अपना अनुभव आप इस प्रकार कह रहे हैं कि श्रीजानकी–नाम–ध्यान–दर्शन में मनको आकर्षण करने वाले हैं। जपने में परम स्वादिष्ट हैं। जपके लिये अति सुखदाय सिद्धि प्रदान में तो मानो सिद्ध की पीठ ही है। जापक के हृदय को दिव्य सुदृढ़ अनुराग से ऐसा रंग देते हैं कि उसके आगे महावर का रंग फीका लगेगा। मजीठ के समान इनका रंग पक्का है। जीभ पर श्रीसीतानाम का उच्चारण बस गया तो, मानिये आपको सियाजू के दर्शनों का प्रवेश पत्र ही मिल गया। इस नाम के चिंतन से आपके हृदय वाली ध्यान दृष्टि निर्मल हो जायेगी। काल के जालसे छोड़ने में ये बड़े प्रबल हैं। भीतर बाहर में मल को धोकर ऐसा स्वच्छ कर देते हैं जैसे रीठी से धोने पर कपड़े स्वच्छ हो जाते हैं। आप श्रीसीतानाम जपकर देख लीजिये। आपको देवलोक का अमृत इसके आगे फीका लगने लगेगा।

जानकी नाम मनोहर मीठ।
जापक जन सुखदायक सीधो जनु सिद्धिन की पीठ।।
महावरहु को करत रंगीलो जैसे रंग मजीठ।
रसना पर आवत जनु आयो सिय दरसन को चीठ।।
जाके मनन गुनन ते झलकत अन्दर निरमल डीठ।
बरबस काल फाँस ते छोरत बड़ो जवर बड़ ठीठ।।
अन्दर बाहर को मल धोवत जस अंवर को रीठ।
जाके रस के आगे लागत 'देव' सुधा हूँ सीठ।।

श्रीसीतानाम प्रभाव पर और भी शास्त्र एवं पूर्वाचार्य के बहुत से वचन हैं। हम विस्तार भय के कारण सभी उद्धृत नहीं कर रहे हैं। स्वनाम धन्य परमहंस श्रीप्रेमलताजी महाराज ने श्रीसीताराम नाम सम्बन्ध बृहत्तरी नामक अनुपम ग्रन्थ लिखकर बहत्तर कवितों में युगलनाम जप की बहुत ही समीचीनी एवं स्वानुभूत महिमा बतायी है। युगल नामानुरागियों के लिए यह स्पृहनीय ग्रन्थ द्रष्टव्य हैं। हम स्थानाभाव के कारण यहाँ उनमें से केवल पाँच ही कवित्त उद्धृत करते हैं। भाषा सरल एवं सुबोध होने के कारण अर्थ नहीं लिखे गये।

सीता बिनु राम नाम रटत अयान जू।
छन हू न छाड़ियत सियजू को राम रूप
चांदनीहि चंद जिमि घाम को सु भानु जू।
रटत सु रामनाम सीय जू विहीन जौन
श्रम ही के भागी होत कहत सुजान जू।।
रीझत न राम रूप सिय बिनु सुनियत

'सीतायुत रामनाम दिव्य ग्यान देत जू।
काम क्रोध लोभ मोह वासना विकार अघ
हरत सुजन चित करत सचेत जू।
जपत जो सीताराम तपत न तीन ताप
कँपत विलोकि कलि करत सुहेत जू।।
रटत अकाम सियराम नाम जौन जन
भगति के भागी होत सुख के निकेत जू।
सीताराम रटत सुहीय में प्रकास होत
सीतायुत राम नाम दिव्य ग्यान देत जू।।
सीताराम सीताराम रटत सुचैन जू।
मंगल उदित मन मुदित विमल उर
परम प्रमोद महि अटल सुखौन जू।
हरष न शोक ताहि मान अपमान सम
सीताराम नाम मुखा दूसरो न बैन जू।।
सीताराम जपत छपत छल कलिमल
सीताराम जपत खुलत हिय नैन जू।
सीताराम सीताराम रटत सुलभ सब
सीताराम सीताराम रटत सुचैन जू।।
सीता बिनु राम नाम उर न थिरात जू।
सीता बिनु राम नावम रटत अमित काल
होत न सुतोष मन चित न सिरात जू।
रटत सुराम राम रम रम होइ जात
मध्य को अकार सिय रूपसे हिरात जू।
रटिये सुनेम करि सीतायुत राम नाम
सीताराम बिनु जग फिरत रिरात जू
अगिनि पुरान माह शिवहु बखानि कहयों
सीता विनु राम नाम उर न थिरात जू।।
'सीता विनु राम नाम अरध भनत जू।
पूनो बिनु चन्द्र जिमि पूरन न मनियत
अमिय विहीन पाप ताप न हनत जू।

भजन भगति विनु अरध कहाय तिमि
तीय सुपुरुष बिनु सुत न जनत जू।।
पंडित सु अर्ध जिमि ब्रह्म के विचार बिनु
भोजन सुअर्ध जौलों पेट न तनत जू।
साधुता अमान विनु गीता विनु ग्यान जिमि
सीता बिनु राम नाम अरध भनत जू।।
सीता तन रोम रोम राममयी, राम तन
श्यामा श्यमताई छाई नाम रस पतिते।
राम मन मनन करत मोद मैथिली को
मैथिली मनन राम रस मन मति ते।।
रामनाम जानकी को जीवन है सुखधाम
सुमिरत सीतानाम रामहूँ सुरति ते।
सीताराम रामसीता मिले दूध नवनीता
गायो 'रस राम मनि' गीता नेह नति ते।।
राम मन सीता मन, सीता मन राम मन
सीताराम नैन किये राम सीता धाम है।
राममति सीतागति सीतामति रामगति
सीताराम वैन राम सीता के आराम है।।
रामजी को स्वारथ सो सिय परमाथ है
सिया अभिलाष लाख भाँति राम काम है।
स्वादरस एकही सु जैसे 'रसरंगमनी'
वैसे दुइ नाम रूप एक सीताराम है।।

श्रीसीतानाम सहित जो श्रीरामनाम के एक बार भी उच्चारण कर ले, उसे दिव्य इष्ट धाम की अवश्यमेव प्राप्ति हो जाती है। वहाँ का वह परमपावन परमानन्द भोगने का अधिकारी बन जाता है। उनके हाथ श्रीअध्योध्याबिहारी बिक जाते हैं। श्रीसिया स्वामिनी जूके रस का उसे समास्वादन होता है।

श्री सीता संयुत सुनाम सुचि सकृत जौनजन लेवे।
परम प्रमोद पुनीत पाय परमेश धाम सुख सेवे।।
तिन वर विमल कंज कर में अवधेश बिके दुतिदेवे।
युगल अनन्य शरन स्वामिनिहू कृपा कलित रस भेवै।। श्री नाम कांति

श्रीसीतानाम विरहित अकेले रामनाम जपने वाले श्रीप्रिया प्रेम परतंत्र प्रियतम की कृपा से वंचित हो जाते हैं। अत: उन्हें युगलनाम जपवाला सुखस्वाद नहीं मिल पाता। युगल रससे वहिर्मुख एक ही नामजापक का हृदय शुष्क हो जाता है। अत: बड़भागी अनुरागी जापक श्रीयुगल नामजप रस में भीजे रहते हैं।

केवल भजन .सजे नाही सुख प्रसाद विहीने।
तुच्छ रुच्छताई अंतर झलकता बहिर द्दग दीने।।
प्रिया प्रेम परतंत्र श्याम क्यों रीझे रसिक रंगीने?
युगलानन्य शरन अनुरागी बड़भागी युग भीने।। २९३।।

जगत रीति को देखने से सीताराम युगल नाम ही विशेष रूप से प्रचार में है। हिन्दू, मुसलमान, नास्तिक जो भी युगलनाम लेता है, उसे अधिक सुखानुभव होता है। सीताराम सीताराम तो बिन सीखे भी जीभ अनायास उच्चारण करते हैं। अत: युगल नाम जप कर शोक रहित हो जाना चाहिये।

सीताराम नाम जाहिर जगजीवन जगत विलोको।
हिन्दू मुसलमान काफिर कुल कहे लहे सुख थोको।।
सीखे बिना स्वाभाविक ही रसना उच्चारण तोको।
युगलानन्यशरण सीतावर नाम रटो अविसोको।।

नाम वैखरी वाणी में ही जपना चाहिये

रहस्यसार नामक प्राचीन आर्षग्रन्थ में स्वयं भगवान श्रीमन्नारायणदेवजी, मुनियों के प्रति नामोपदेश करते हुए कहते हैं कि सज्जनों को उचित है कि जीभ से उच्चारणपूर्वक ही नामाभ्यास करें। श्रवणगोचर उच्चारणका नमा ही कीर्त्तन है। कलिकाल में तो नामकीर्त्तन ही सर्व सज्जन सम्मत नामसेवन की सर्वोत्तम विधि मानी जाती है।

योगी तथा ज्ञानी लोग भ्रमवश माने हुये हैं कि हमारी नामजप की विधि मानसिक है। नामसेवन से यथार्थ लाभ उठाना चाहें, तो उन्हें भी जिहवा से उच्चारण करके ही नामजप करना चाहिये। कर्मकांडियों तथा भक्तों के लिये तो नाम कीर्त्तन प्रशस्त है ही।

परावाणी से नामजप अति उत्तम है अवश्य, पर परावाणी का अर्थ समझने में लोग भूल करते हैं। प्रेम ही परमेश्वर का सच्चा स्वरूप है और परावाणी में भी ब्रह्म की स्थिति मानी जाती है। अत: प्रेम सम्पन्न सभी जप चाहे वैखरी से हो, मध्यमा से, पश्यन्ती से अथवा नाभी के नीचे परा स्थान से हो, परावाणी का जप माना जायेगा।

रसनायां विशेषण जप्तव्यं नाम सज्जनै:।
कलौ संकीर्त्तना विप्रा: सर्व सिद्धान्त सम्मतम्।।
नामप्रोच्चारणं नित्यं रसनायां प्रशस्यते।
भक्तानां योगिनां चैव ज्ञानिनां कर्मिणां तथा।।

यत्र संगृह्यते नाम प्रेमसम्पन्नामानसैः।
तत्र तत्र परावाणी नाभिसथा सर्वतः शुभा।।

श्री गरुड़पुराण में भी स्वयं भगवान् विष्णुदेवजी ने अपने अन्तरंग पार्षद श्रीगरुड़जी से कहा है कि कलिकाल के लिए तो श्रीरामनामकीर्त्तन ही अर्थात् बैखरी वाणी में उच्चारणपूर्वक जप ही विधेय है। नाम कीर्त्तन से ही कलिमल नष्ट होंगे। अतः परमोत्तम भजन नाम कीर्त्तन को ही समझना चाहिये।

कलौ संकीर्त्तनादेव सर्वपापं व्यपोहति।
तस्माच्छ्री रामनाम्नस्तु कार्यं संकीर्त्तनं वरम्।।

इस तुच्छ लेखनी की सम्मति में कीर्त्तन तथा संकीर्त्तन में थोड़ा अन्तर दीखता है। कहीं अकेले बैठकर बैखरी नाम जप को कीर्त्तन कहना चाहिये। साजबाज के साथ दस पाँच मूर्ति का समाज रागतालबद्ध नाम गान करे, उसे नाम संकीर्त्तन कहेंगे। यदि नामानुरागियों का ऐसा संकीर्त्तन समाज जुटा तो, भगवान् चैतन्यदेववाला भगवत्प्रेम अविलम्ब प्राप्त हो। ऐसे श्रीरामनाम संकीर्त्तन से वैराग्य, ज्ञान अद्‌भुत भगवत्प्रेम जो चाहो, सभी भरपूर मिलेंगे। ऐसा लघुभागवत का सिद्धान्त हैं

ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि।
संलभेन्नाम संकीर्त्य ह्यभिरामाख्यमद्‌भुतम्।।

तीर्थ, व्रत, दान, यज्ञ आदि वैदिक कर्म करने को तो लोग कर लेते हैं, परन्तु कलिकाल के दृष्ट प्रभाव के कारण, इनमें फलोदय नहीं होता। इसी से तो श्रीगोस्वामी पाद ने कहा है।

तप, तीरथ, उपवास, दान, मख जेहि जो रुचै करो सो।
पायेहि पै जानिवो करम फल, भरि भरि वेद परोसो।

हाँ, इन वैदिक सत्कर्मों के साथ नाम संकीर्त्तन होता रहे तो, उन कर्मों में त्रुटियाँ होने पर भी उनके पूरे–पूरे फल प्राप्त हो जायेंगे। नाम संकीर्त्तन का फल तो अलग से मिलेगा ही।

न्यूनातिरिक्त सिद्धि कलौ वेदोक्त कर्मणाम्।
नाम संकीर्त्तनादेव सम्पूर्ण फलदायकम।। श्री वृहन्नारदीये

महानुभावों के सभी सिद्धान्तों का निचोड़ यही है कि श्रीजानकीजीवन जू के नाम का संकीर्त्तन ही सर्वोत्तम भजन है।

सर्वेषां मतसाराणामिदमेकं महन्मतम्।
जानकी जीवनस्याथ नाम संकीर्त्तनं वरम्।। श्री निर्वाण खण्ड

वैखरी नामजप सम्बन्धी इतने पूवोचार्यों के उपदेश, जान, सुनकर भी जो आलस्य प्रमाद या हठवश मानसिक जप ही करते रहेंगे उन्हें न तो श्रीराम भक्ति मिलेगी न शरीरान्त होने पर श्रीसीतारामजी की सामिप्य

मुक्ति। हाँ, नामजप चाहे मानसिक हीसही, व्यर्थ तो जाने का नहीं। अत: मानसिक जम से कैवल्य मोक्ष भले मिल जाय। परन्तु याद रहे, कैवल्य मोक्ष में जीव की सत्ता मिट जाती है। ब्रह्मसिन्धु में जीवबिन्दु मिलकर एकाकार हो जाता है। भक्त लोग तो बार–बार जन्म चाहेंगे, परन्तु कैवल्य मिलने पर भी उसे ठुकरा देंगे। ऐसे वचन जगद्गुरु भगवान शंकर जी के हैं।

अन्तर्जपन्ति ये नाम जीवन्मुक्ता भवन्ति ते।
तेषां न जायते भक्तिर्न च राम समीपका:।।

श्री मन्महारामायण

पूज्यपाद श्री बड़े महाराज जीभ से उच्चारणपूर्वक नाम जपने का निजी अनुभव कर रहे हैं कि जीभ से नाम रटने में मुझे अपार हर्ष होता रहता है। व्यर्थ वचन कहना सुनना तो उग्र विषके समान प्रतीत होता है। नाम रटने में श्रीनामरूपी अमृत का स्वाद मिलता रहता है। अब तो जीभ को ऐसा रसमय चस्का लग गया है कि नाम रटने में स्वप्न में भी आलस्य नहीं करती है। प्राणप्रियतम श्रीजानकी रमणजू के प्रेमरस में ऐसी पग गई है कि शुष्क विषयरस इसे रूचता नहीं। क्यों न हों, तभी तो श्रीशेष श्रीगणेश, तथा श्रीमहेश जैसे महानों को भी जीभ से नाम रटन में ही मजा आता है। संतों को नाम रटन मय जीवन अतिप्रिय है ही। (श्री बड़े महाराज को) तो ऐसा लगता है कि विषय रूपी अपार सधन वनको काट काट कर साफ कर देने के लिए श्रीनामरटन तीक्ष्ण हथियार का काम करता है। सभी प्रकार के दिव्य प्रेमधन संचय करने में पारसमणि एवं चिंतामणि का चमत्कार करने वाले हैं श्रीनाम रटन

रसना नाम रटत हरषाती
वादि वचन विष तिष सम माने नाम सुधा सरसाती।
ऐसी वानि पड़ी कछु याके सपनेहु नहि अलसाती।।
सहजति सहज पगी प्रीतम रस तजि नीरस जाती।।
शेष गनेश महेश भावती, संतत संत सोहाती।।
विषय विपिन काटन के कारन तीछन धार लखाती।
(श्री) युगल अनन्य शरन पारस चिंतामनि दुति दरसातीं।।

श्री मिथिलजी के सुप्रसिद्ध सिद्ध नाम जापक परमहंस श्रीसियालालशरण उपनाम प्रेमलताजी महाराज स्वरचिज श्रीवृहद् उपासना नामक ग्रन्थ श्रीसियाराम नाम प्रसंग में वैखरी वाणी में नाम रटन के बारह ल भ इस प्रकार बताते हैं।

१. इस मानव स्थूल शरीर को वृक्ष का रूप देकर, कहते हैं पापपुण्य दोनों इस शरीर वृक्ष पर बैठे पक्षीगण हैं। जोर–जोर से उच्चारणपूर्वक नाम ध्वनि सुनकर पक्षीगण भाग जाते हैं। अत: वैखरी नाम जापक के शरीर में पाप अविशिष्ट नहीं रह पाता।

२. उनके नामोच्चारण सुनने वाले प्राणिमात्र संसार में तर जायेंगे।

३. कोई अन्य नाम जापक कुसंग पाकर भूल बैठा हैं तो हमारी नाम ध्वनि सुनकर वह भी नाम जाप में सावधान होकर तत्पर हो जायेगा।

४. अपनी कान से अपनी ही उच्चारित नामध्वनि सुनते रहने से बाहरी जगत के विक्षेप दायक शब्द नहीं सुन पड़ते। अत: विक्षेप से बच जाते हैं।

५. उच्चस्वर से वैखरी नामजप करने वाले के समीप नामजापक के लिए अति दुखदायिनी नींद नहीं फटकने पाती।

६. रिद्धि सिद्धि तथा सद्गुण आदिक नाम ध्वनि से आकृष्ट होकर नामजापक के समीप आ जुटते हैं।

७. भूत प्रेत, यमदूत, मृत्यु आदि दुष्टगण नामध्वनि सुनकर दूर ही से भाग जाते हैं।

८. अपनी नामध्वनि अपने ही कान से सुनते–सुनते नाम समाधि लग जाती है। उस क्षण मन समेत अपनी सारी उपद्रवकारिणी इन्द्रियाँ, उसमें लय हो जाती हैं। उस दशा में, "मैं अरू मोर तो तै माया" का अभाव हो जाता है। मदादिक विकार शांत पड़ जाते हैं।

९. आयु का निश्चय दिन की गणना के हिसाब से नहीं की जाती है। आयुका प्रमाण श्वास संख्या पर निर्भर करता है। वैखरीजपकाल में श्वासा विलंवित गति से चलती है। अत: वैखरी वाणी में नाम जप करने वालेकी आयु बढ़ जाती है। इस प्रकार श्रीब्रह्मकी प्रतिकूल लिपिभी मिट जाती है।

१०. श्रीचैतन्य महाप्रभु के संकीर्तन समाज की भांति या बजाकर नामगान करने पर, सब दुःख नष्ट हो जाते हैं, प्रेमानंद का अनुभव होने लगता है।

११. शुभाशुभ कर्म मिट जाते हैं। अत: संशय, भ्रम समुदाय आपही आप नष्ट हो जाते हैं। श्रीपरमहंस जी महाराज का निजी अनुभव है, यह।

१२. आपका यह भी अपना अनुभव है कि वैखरी युगल नामजप अधिक संख्या में करने पर अपने स्वरूप का भी ज्ञान हो जाता।

इन पंक्तियों के तुच्छ लेखक की समझ में बैखरी नामध्वनि से एक और लाभ है। उस लाभ को समझने के लिये वैज्ञानिक बुद्धि का प्रयोग करना होगा। विज्ञान मत से सभी प्रकार की ध्वनि अविनाशी मानी जाती है। ग्रामोफोन के तावे में भारी हुई, टेप में रेकार्ड की हुई, पुरानी ध्वनि आज भी सुनने को मिलती है। महात्मा गांधी के उपदेश वाली मौलिक ध्वनि को, भगवान श्रीकृष्ण द्वारा उपदिष्ट श्रीगीता को, मौलिक ध्वनि को पकड़ने के लिये आज का विज्ञान उपयोगी यंत्र आविष्कार करने के यत्न में ल गा है, पुरानी ध्वनि को वायुमंडल में आज भी व्याप्त मानकर ही न? एक बात और। एक जगह की समुच्चारित ध्वनि सम्पूर्ण धरातल के वायुमंडल में व्याप्त हो जाती है। दूर–दूर की रेडियो में सुनने से, वे तार के तार द्वारा भी दूर–दूर की वार्ता सुन लेने से यह ध्वनि की व्यापकता सहज ही में बोधगम्य हो जाती है। अत: हमारी उच्चस्वर में उच्चारित नाम पृथ्वी में अविनाशी रूप से व्यापक रहकर, सम्पूर्ण वायुमंडल का चिरकालतक दिव्यीकरण करती रहेगी उस वायुमंडल में रहने वालों में सुख शांति सदविचार का प्रसार होता रहेगा। इस दृष्टि से हम अनन्तकाल के सम्पूर्ण वायुमंडल को एक दिव्य सम्पत्ति देकर मरेंगे।

श्री बड़े महाराजजी की आज्ञा है कम से कम साधन की प्रथमावस्था में तो जीभ के द्वारा वाणी अर्थात उच्च स्वर से नाम रटनाही चाहिये और रटना चाहिये संख्या का नियम लेकर। बैखरी उच्चारण से लोक विलक्षण प्रबल दिव्य स्नेह का उदय होगा। जब जब आपके जिह्वाग्र पर श्रीनाम का स्पर्श होगा, प्रत्येकवारी में अमृत से बढ़कर स्वाद का अनुभव होगा। रोम–रोम में शीतलता छाकर जुड़ जायेंगे आप। ऐसे नाम रटन से हीन देवदुर्लभ मानव जीवन को अकारथ खोना है। श्रीनाम रटन भवसागर से पार उतारने वाले जहाज (वहित्र) है।

रसना से प्रथम सनेम नाम जप करि प्रबल सनेह उर उठत विचित्र है।
सुधासार स्वाद, वाद विगत विलास, जीह अग्रभाग परस परत सुपवित्र है।।
रोम रोम सोम सत सहस सुसीर नीर बहत अधीर धीर दैनहार मित्र है।
युगल अनन्य जानि खोइये जनम जाय, नाम रट लाय भव सागर वहित्र है।। ६०७।।

बिना जीभ से रटे प्रेमरंग छनेगा नहीं। हरदी का गिरह बिना रगड़े नहीं सरसाता है। तेज धार की तलवार पास में है तो क्या, युद्धोत्साह हुये बिना वृथा है। नाम रटने का उत्साह आवश्यक है। श्रीरामनाम परत्व, परात्पर है सही, परन्तु रटनहीन आनन्द उत्पन्न कैसे करेंगे?

'हरदी गिरह सम वरन विचित्र वर, नाम अभिराम रटि संग सरसायेगा।
रटन विहीन नहिं कढ़त अनुप रंग, संत संग बीच इह भेद दरसायेगा।।
तेग तेजतर निज निकट भये ते कहा जौलौं नहिं वेग सूरताई परसायेगा।
(श्री) युगल अनन्य सब जानत परेशनाम रटन रहित कहुँ मोद बरसायेगा।।२७७३।।

महात्मा गाँधी (हरिजन सेवक १४.४.१९४६) लिखते हैं जो आदमी जानता है कि राम सचमुच उसके दिल में हैं, उसे राम–नाम के उच्चारण करने की जरूरत नहीं, यह मैं कबूल कर सकता हूँ लेकिन ऐसे आदमी को मैं नहीं जानता। मुझे निजी अनुभव है कि रामनाम के रटने में कुछ चमत्कार है। वह क्या? और कैसे, यह अनुभव से ही जाना जा सकता है।

जपतो हरिनामानि स्थाने शतगुणाधिकः।
आत्मानञ्च पुनात्युच्चैज्जपन श्रीतृन्पुनाति च।।

नाम स्मरण से नाम कीर्तन का महत्व अधिक है, यथा–
हरिनाम जप करने वाले की अपेक्षा उच्चस्वर से हरिनाम कीर्तन करनेवाला शतगुण श्रेष्ठ है, क्योंकि जप करने वाला तो केवल अपने ही को पवित्र करता है, परन्तु उच्चस्वर से कीर्तन करने वाला अपने को तो पवित्र करता ही है, सुनने वाला जीव, जंतु, पशु, पक्षी, कीट, पतंग, सबको पुनीत एवं पवित्र करता है। श्री चैतन्यचरितामृत में लिखा ही है।

पशु पक्षी कीट आदि बोलती ना पारे। सुनीलेई हरिनाम तारा सब तारे।
जपीले से हरिनाम आपनी से तरे, उच्च संकीर्तन पर उपकार करे।।
अतएव उच्च करी कीर्तन करीलें, शतगुण फल हय सर्वशास्त्रे बोले।

जपसंख्या का नियम लेकर श्रीयुगलनाम जपना चाहिए

श्रीअत्रिसंहिता का आदेश है कि श्रीसीतारामजी के दिव्य धाम की प्राप्ति के लिए, तो चाहे कैसे भी नाम जपें, मरने पर धाम प्राप्ति तो अवश्य होगी ही। और यह सिद्धि है भी बड़ी मनोरमा।

येनकेन प्रकारेण संस्मरेद्रामनामकम्।
अवश्यं लाभते सिद्धि प्राप्तिरूपां मनोरमाम्।।

श्रीमानसजी भी यही आदेश देते हैं।

भाव कुभाव अनख आलसहूँ नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।

किन्तु जगद्गुरु भगवान शंकरजी श्रीपार्वती के माध्यम से नामजापकों को आदेश देते हैं कि श्रीरामनामका जपनियम सदा धारण करना चाहिये और आलस्य प्रमाद आदि त्यागकर, सावधातापूर्वक जपना चाहिये।

श्री मद्रामेति नाम्नस्तु नियमं धारणं सदा।
कर्त्तव्यं सावधानेन त्यक्त्वा प्रामादिकं शिवे।।

भगवती पार्वतीदेवी ने पूछा कि नियम कब तक निवाहना चाहिये। श्रीजगद्गुरु की आज्ञा हुई कि नियम तब तक न छोड़ें, जब तक चित्त से अनायास स्मरण न होने लगे अर्थात् अजपा जप सिद्ध होने तक नियम पूर्वक जपना चाहिये। अजपा से तो बिना यत्न के निरन्तर जप आप ही आप होने लगेगा। अतः अभ्यास की प्रथमावस्था में बिना नियम का जप निष्फल हो जाया करता है। कारण, मूढ़मन स्वल्प नगण्य जपको ही बहुत मानकर, पर्याप्त जपसे जी चुराने लगता है।

मन बड़ा ही धोखाबाज है, इस पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिये।

तावद्वै नियमं कार्य यावत् चित्तं न संस्मरेत्।
अनियमं कृतं जाप्यं निष्फलं प्रथमं प्रिये।।

नियमपूर्वक जप अधिक संख्या में बनता है और अधिक संख्या के जप से श्रभ्रामनाम में ध्रुवाप्रीति होती है। अतः आनाकानी छोड़कर, बुद्धिमान् जापक नियम का पालन अवश्य करते हैं।

नियमेनैव श्री रामनाम्नि प्रीतिर्ध्रुवा भवेत्।
तस्माद्विपर्य्ययं त्यक्त्वा नियमं सञ्चरेद्बुधः।।

जिनसे इस दुष्ट कलिकाल में अखंडनरूप से श्रीसीताराम का नियम पालन बन जाय, उन्हें अपने को बार–बार अहोभाग्य मानना चाहिये।

अहोभाग्यमहोभाग्यं कलौ तेषां सदा शिवे।
येषां श्री रामनाम्नस्तु नियमं समखण्डितम्।।

यहाँ तक तो हमने श्रीअत्रिसंहिता कथित श्री शिवपार्वती सम्वाद का उल्लेख किया।

अब विचार करना यह है कि हमारे नित्य नियम की जप संख्या कितनी होनी चाहिये। हम पिछले प्रसंग में श्रीदेवी भागवत के उद्धरण देकर, बता आये हैं कि हम गर्भ में प्रभु से उनके नाम जपने की प्रतिज्ञा कर आये हैं। उस प्रतिज्ञा में श्वास प्रत श्वास नाम जपने का करार किया था। चिकित्सा विज्ञान का कहना है कि स्वस्थ और शान्त जीवन में प्रत्येक दिन के चौबीस घंटे में एक साधारण व्यक्ति २१६०० श्वास प्रश्वास लेता है। अधिक भोजन, विशेष शयन, अधिक परिश्रम ब्रह्मचर्य नाश आदि कारणों से श्वास की गति बढ़ जाती है। अत: औसत दैनिक स्वांस संख्या पच्चीस हजार मान ली गयी है। अत: गर्भ करार के हिसाब से कम से कम हमारी दैनिक नामजप की संख्या पच्चीस हजार होनी चाहिये। किन्तु हमने जन्म लेते ही नाम रटना प्रारम्भ कर देने की प्रतिज्ञा की है न? अब तक नाम जप हीन आयु हमारी बीत गयी, वह बाकी संख्या कैसे पूरी हो? सो भी तो विचार करना है। हमारी समझ से हम कलि–काल में अधिक से अधिक एक सौ पच्चीस वर्ष की पूर्ण आयु भोग सकते हैं। एक दिन की स्वांस संख्या २१६०० x ३६५ x १२५ = लगभग सौ करोड़ अर्थात् एक अरब होता है। एक अरब १००००००००–१ = ९९,९९,९९,९९९ होता है। सभी नौ संख्या नौ हुई। जीवन में इतनी जप संख्या पूरी करने से सदा के लिए मुक्त होकर, परमपद के भागी बन जायेंगे। पचास कोटि जप संख्या पूरी करने पर आप माया के रज, तम, सत–इन तीनों गणों से मुक्त होकर, गुणातीत पद प्राप्त कर लेंगे पचहत्तर कोटि जप संख्या पूरी करने पर आप नित्य पद पा लेंगे। सम्पूर्ण एक अरब संख्या पूरी होते–होते आप जीवन्मुक्त हो जायेंगे। तब आपको सभी लोकों में विरचने की अव्याहत गति प्राप्त हो जायेगी। सभी सद्गुण लौकिक पारलौकिक प्रकार के दिव्यानंद आपके लिए सुलभ हो जायेंगे आपका यही स्थूल शरीर दिव्य प्रकाशमय हो जायेगा। इष्ट दर्शन आदि तो निरावरण होते ही रहेंगे।

अब हम श्रीपरमहंस जी महाराज की श्रीवृहद् उपासना रहस्य अन्तर्गत श्रीसियारामनाम प्रसंग से इस सम्बन्ध की मूलवाणी उद्धृत करते हैं।

कीन्ह करार गर्भ के माहीं। रटिहौं नाम कहो प्रभु पाँही।।
स्वास स्वास प्रति श्रीसियारामा। रटिहौं सत्य कहौं सुखधामा।।
गर्भ वास को सोक निवारहु। यहि ते बाहिर बेगि निकारहु।।
हलन चलन बोलन नहि पावहुँ। गर्भ कलेस कहाँ लगि गावहुँ।।
बंधे नसनि ते सकल सरीरा। परवश परेउ सहत अति पीरा।।
अर्धचरन सिर मलथल माँही। सोचत ही निसि दिवस सिराही।।
नहि कोउ मोर सहायक स्वामी। तुम्ह विन हे प्रभु अन्तरयामी।।
यहि अवसर मम विनय सुनीजै। नाथ गर्भ ते वाहिर कीजै।।
बार–बार यहि भांति निहोरी। विनवत प्रभुहि जीव करजोरी।।
रटिहौं निसिदिन नाम तव, तजि गृह सोकागार।
सत्य कहौं प्रभुपद सपथ, यहि विधि कीन्ह करार।।

अति आरत हुइ विविध प्रकारा। विनय कीन्ह प्रभु ते बहु वारा।।
तब बोले प्रभु परम उदारा। विसरेउ जनि यह गर्भ करारा।।
रटेउ सदा प्रति स्वास सुनामा। बहुरि न परव गर्भ दुखधामा।।
हरन नाम मम सर्व कलेसा। तजेउ न ताहि सु यह उपदेसा।।
रहिहौं मैं यहि विधि तब पासा। रटिहौ नामहिं जो प्रति स्वासा।।
कोटिन विष्णु संभु विधाता। नाम समान न कोउ जन त्राता।।
सकल काम पूरक मम नामा। रटेउ रटायउ तेहि बसु यामा।।
जो प्रति स्वासहि नाम न रटिहौं। फिरि फिरि तौ इन्हि गर्भनि परिहौ।।
बाहिर देखि प्रपंच अपारा। बिसरि जात मम नाम उदारा।।
गर्भ करार न भूलेहु कबहूँ। कोटिन होय परीच्छा तबहूँ।।
माया कृत दुख सुख सम जानी। रटेउ नाम मम सब सुख दानी।।
बारंबार सिखावहुं तोही। रटेउ नाम भूलेउ जनि मोही।।

यहि विधि दृढ़ करि गर्भ ते, बाहिर कीन्ह कुपाल।
विसरि गयउ वह कौली सठ, फँसि अब माया जाल।।

लगेउ करन कारज विपरीता। बिसरेउ प्रभु करि जग सन प्रीता।।
बाहिर निकरि अनेक प्रपंचा। सीखि जरै त्रयतापनि अंचा।।
रटत न नाम काम रस पागा। गर्भ कौल तजि दीन्ह अभागा।।
अबहुं चेति पच्चीस हजारहि। रटि सियराम सुनाम उदारहि।।
गये जाप जो स्वास वृथाहीं। अब न नसाउ सोचि मन माही।।
चढ़त सीस ऋण स्वसनि केरा। दिन दिन रटु सियराम सबेरा।।
पुरबहु अब तुम गर्भ करारा। रटि सियराम पचीस पद लीजै।।
जागहु मोह निद ते भाई। करहु बेगि सियराम रटाई।।

गये स्वास जो आज लगि, तिन्हि कर जोरि हिसाब।
पुरइ देह रटि नाम तब, नित्य मुक्त पद पाव।।

वर्ष सवा सौ दिन केते। जोरहु दिन प्रति स्वासा जेते।।
स्पसस स्वास प्रति नाम सुजोरी। चारि भाग तेहि करै बहोरी।।
प्रथम भाग जब रटि सुपुरैहौं। कर्ममुक्त गति तेहि दिन पैहौं।।
त्रगुन मुक्त गति दूसर भागा। पैहौ रटि मुख सह अनुरागा।।
तीसर भाग रटत मन लाई। नित्य मुक्त गति होत सुहाई।।
जीवन मुक्त सुगति सुखदाई। चौथ भाग रटि पैहो भाई।।

अव्याहत गति इच्छित कामा। पैहो रटि चहुं भाग सुनामा।।
स्वासन प्रति पुरिहहि सब नामा। हुइहहु तब सब गुन सुख धामा।।
नाम रटत परलोक लोक के। मिलत सकल सुख हरनन सोक के।।
देवनि सम नर देह यह, भासहि तेजागार।
अकथ अटर आनंद उर, भरिहहि आय अपार।।
सियवर दर्शन आदि अमित सुख। पैहौ विनसहि जनम मरन दुख।।
जो सब सस जनम भरि केरे। जोरि स्वास प्रति नाम सबेरे।।
रटिहहि ते सब सुख की ढेरी। हुइहहि अवसि कहौं मैं टेरी।।
कलियुग वयस सवासौ वर्षा। जोरि स्वास रटु नाम सहर्षा।।
करि वैष्णव गुरू बुझहु भेदा। नाम रटन कर नाशन खेदा।।
निज हठ तजि गुरु आयसु मानी। रटै नाम प्रति स्वास सुवानी।।
यहि विधि जो रटि नाम पुरावत। परमधाम सो जन सुख पावत।।
सहज स्वरूप धारि प्रभुसंगा। पावहि आनंद अकथ अभंगा।।
कर्मी धर्मी ज्ञानगुमानी। लहहि न यह गति सब सुख खानी।।
जो प्रति स्वास नाम रटि पावहि। नाम रसकि जन प्रभु मन भावहि।।
रिधि सिधि भगति ग्यान गति प्रेमा। नाम नटत पावहि प्रद छेमा।।
वर्ष सवा सौ दिनन के, गनि स्वासा प्रति स्वास।
रटि पुरवहि सियराम ते, राम रूप जग स्वास।।
यह विधि थोरे नाम न होई। रटै खूब सिधि पावहि सोई।।
यह साधन अति सुलभ ललामा। नहि कछु विधि विधान कर कामा।।
केवल युगल नाम लय लाई। रटै बैठि सब संग विहाई।।
अस विचारि तजि सकल असंका। करहु नाम कर नेम सुवंका।।
सवा लावा वा लाख सुवारा। रटहु नित तजि मद मारा।।

श्रीपरमहंस जी महाराज की उपर्युक्त नाम साधना में योगयुक्ति का मिश्रण नहीं है। प्रेमपूर्वक तथा ध्यान सहित युगलनाम का नियम से जप होना चाहिये। नियम कम से कम पच्चीस हजार, अधिक से अधिक सवा लाख नित्यजप संख्या का होना चाहिये। इससे अधिक जपमें उच्चारण दोष या गिनती में भूल होने की संभावना हो सकती है।

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज के मत से पच्चीस हजार नाम जापक मंगल भागी बनते हैं। पचास हजार या अधिक जपने वाले देव पूज्य बन जाते हैं। एक लाख नित्य नियम से जप करने वाले मायामुक्त—निर्भय बन जाते हैं। निरन्तर जप करने वालों की महिमा अकथ्य है।

सहस पचीस लो जपत जौन जीह नाम
राम अभिराम ताहि मंगल अवेशे हैं।
जाके नेम अचल पचास सहसाधिक है।
सो तो देव देविन ते पूजित विशेषे हैं।।
ज़ौन अनुरागी बड़भागी के सुनेम लक्ष
सो तो परत्यक्ष स्वच्छ रहित अंदेशे हैं।
(श्री) युगल अनन्य ताकी महिमा बखाने कौन
जाके सुखासागर की रटन हमेशे हैं।।

सबसे उत्तम जपसंख्या तो उपर्युक्त विधि से एक अरब ही आयु भर की स्वास संख्या के हिसाब से सही है। यदि एक लाख की संख्या में नित्य नाम जपते हैं, तो इनकी संख्या पूरी करने में आपको २८ वर्ष लग जायेंगे। सवा लक्ष नित्य नाम जप करने से यह संख्या २२ वर्षों में पूरी होगी। कोई बड़भागी रात्रि जागरण में प्रवीण स्वल्पाहारीदो—दो लाख नाम जप प्रत्येक दिन कर लेते हैं, उन्हें केवल १४ वर्षों में ही इतनी संख्या पूरी हो सकती है। यह नामजप संख्या उत्तम सिद्धि देने वाली है। यदि आपको इतने दीर्घकालव्यापी नामसाधना का साहस न हो, तो कोई बात नहीं, आप स्पसस प्रति नाम न जपकर, रोम—रोम प्रति के हिसाब से ही जप कर लें। विद्वानों के मत से कलिकाल में उपदिष्ट संख्या की चतुर्गणित संख्या में सिद्धि अवश्यंभावी हो जाती है। अत: आप साढ़े तीन कोटि के चौगुना १४ कोटि नाम जप कर लें, इसमें आपको एक लक्ष नित्य नामजप से चार वर्ष ही लगेंगे।

इस सम्बन्ध की मूलवाण श्रीपरमहंस प्रेमलताजी महाराज की हम उन्हीं के रचित ग्रन्थ श्रीउपदेश पेटिका से उद्धृत करते हैं।

प्रेमलता यहि भांति अब, रटु सियराम सनेम।
नासहि कलुष कुरोग कलि, कलि, पैहहु रम सुछेम ।। ३४।।
साढ़े तीन करोड़ जो, रोम जानि निज अंग।
चारि नाम प्रति लोम रटि, प्रेमसुलता असंग।। ३५।।

रोम रोम प्रति एक आवृत्ति अर्थात् साढ़े तीन कोटि नाम पूरा करने पर, वह भवजाल से छूट जायेंगे तथा उनके सभी भ्रम मिट जायेंगे। दो आवृत्ति अर्थात् सात कोटि पूरा करने पर, उसके मन, बुद्धि तथा चित्त शान्त होकर, ध्यान परायण हो जायेंगे तथा उन्हें अपने स्वरूप का ज्ञान प्राप्त हो जायेगा। तीसरी आवृत्ति पूरी करते करते, गुप्त दिव्य युगल विहार अपने हृदयनिकुंज में ही देखने लगेंगे। चौथी आवृत्ति होने पर, आपके युगल इष्ट सदा के लिये आपके हृदय में प्रत्यक्ष की भाँति बस जायेंगे। नामजप, प्रतीति तथा मन एकाग्रकर होना चाहिये।

एक बार जो लोम प्रति, रटै नाम लय लाय।
प्रेमलता भव जाल ते, मुक्त होय भ्रम जाय।।
उभयवार प्रति लोम रटि, मन बुधि चित्त थिराय।
प्रेमलता निज रूपकर, बोध पाय हरषाय।।
रटै तीसरी बार बर, नाम लोम प्रति जोई।
भासत युगल विहार उर, प्रेमलता जो गोई।।
चारि बार प्रति लोम जो, रटै नाम जन कोय।
श्री सियराम स्वरूप उर, प्रेमलता थिर होय।।
रटै नम यहि भांति वर, कोटि चतुर्दश जीव।
प्रेमलता तनु अछत कलि, निश्चय पावै पीव।।

साधारण नाम सिद्धि के लिए नाम जपका नियम आप केवल छ: महीने का कर सकते हैं। इस नियम सिद्धि के लिए, आपको फलाहार या दूधाहार वृत्ति बहुत सहायक होगी। युगलनाम जप विश्वासपूर्वक जपने से कलिकाल में छ: महीने में ही सिद्धि हो जाती है। इस सम्बन्ध में कुछ प्रमाण हम नीचे उद्धृत करते हैं।

स्वास संग सियराम रटु, प्रेमलता षट मास।
सादर होय प्रकास उर, कलिमल पावहि नास।।६९।।

राग द्वेष मूलक भेदभ्रम मिटाने के लिये नामजप की युक्ति

रटै नाम करि नेम निरंतर जिज्ञासू षन्मासा है।
तजि वनिता बकवाद भोग जग विविध विकार विलासा है।।
असन सैन लघु वैन बसै थल निर्जन आस न त्रासा है।
प्रेमलता भ्रमभेद कल्पना पावै आपहि नासा है।।
पय आहार फल खाइ जपु, राम नाम षटमास।
सकल सुमंगल सिद्धि सब, करतल तुलसीदास।।

श्री नृसिंहपुराण में देवर्षि श्रीयाज्ञवल्क्यजी से कहते हैं कि नाम जपने में पहले परमपावन परमानन्ददायक श्रीसीतानाम कहकर पीछे रामनाम अर्थात् सीताराम कहना चाहिये। यदि दो ही अक्षर वाले रामनाम ही जपना अभीष्ट हो, तो बीच–बीच में अवकाश पाकर, श्रद्धा भक्तिपूर्वक श्रीसीतानाम भी उच्चारण करते जायँ, इसी प्रकार से विश्वासी श्रीयुगलनाम जापक को केवल छ: महीने में ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है। नामजप निरन्तर होना चाहिये।

आदौ सीतापदं पुण्यं परमानन्ददायम्।
पश्चाच्छ्री रामनाम्नस्तु कथनं संप्रशस्यते।।

युग्मं वर्णं जपेद्यर्हि तदा सीतेति कीर्त्तयेत्।
सावकाशे सदा भक्त्या मध्ये मध्ये समादरात्
एवं रीत्या स्मरेन्नाम राम भद्रस्य संततम्।
षण्मासात्तिसिद्धिमाप्नोति कलौ विश्वासपूर्वकम्।।

बारह वर्षों का एक लक्ष नित्य नामनियम भी विशेष सिद्धिदायक है।

द्वादश वर्ष सनेम नित, रटै लाख सियराम।
येनकेन विधि तर्क तजि, फर्क बैठि निष्काम।।
दश नाम अपराध तजि, रटै खूब विनु ऊब।
पावै तब आनन्दघन, प्रेमलता महबूब।।
अवसि होय सियराम कर, रूप जियत जग सोइ।
तेहि सेवत पावहि सुगति, प्रेमलता सब कोइ।।

मूंगा, मोती तथा स्फटिक मणि की माला पर भी जप होता है, परन्तु श्री तुलसीमाला पर जो नाम की गणना की जाती है, उसका फल तो अक्षय होता है। ऐसा आह्निक सूत्रावलि में लिखा है।

प्रवाल मुक्ता स्फटिके जपः कोटि फलप्रदः।
तुलसी मणिभि र्येन गणिनं चाक्षयं फलम्।।

जप का जितना भी नियम रखें, फिर घटने नहीं पावे। नामस्वाद प्रगटाने के लिए सवालक्ष नित्य छः वर्षों तक जपना चाहिए। परमहंस श्री प्रेमलता जी अपने रचित श्री हितोपदेश शतक में कहते हैं—

श्री सियराम नाम चिंताहर सब भजनो का दाता है।
सकल भजन आधीन नाम के रटि रसना तजि बादा है।।
सवा लाख करि नेम वर्ष षट् पैहौं अनुपम स्वादा है।
प्रेमलता अनयास दुखह दुख नासहि सकल विषादा है।।६४।।

श्रीज्ञानेश्वर संहितान्तर्गत श्रीउमामहेश्वर सम्वाद रूप में श्रीनामनौका अनुष्ठान की विधि बतायी गयी है। श्रीपार्वतीजी का प्रश्न है— हे देवाधिदेव महादेव! भक्तानुग्रहकर्त्ता! श्रीरामचन्द्र के रामनाम का नौकानुष्ठान की विधि बतावें जिससे मनुष्य को सभी सिद्धियाँ प्राप्त हो जावे।

भगवान शंकर जी कहते हैं— हे देवि! मैं नौका नियम की विधि बताता हूँ, सुनो। श्रीरामनाम का नौका—अनुष्ठान परम कल्पवृक्ष तुल्य है। नव करोड़ निन्नावे लाख निन्नावे हजार नव सौ निन्नावे। इतनी जप संख्या पूरी करें। यह सर्वसिद्धि प्रदायक है। पूरी जप संख्या का नवमा अंश हवन करे, हवन संख्या का नवमा अंश तर्पण करे। तर्पण संख्या का नवमांश मार्जन करे। यह विधान धनकामी के लिए विशेष उपयोगी है। मार्जन का नवमांश भजनानंदी वैष्णव ब्राह्मणों को भोजन करावे। राजदंड का भय हो, शत्रुभय उपस्थित हो, तीनों तापों से दग्ध होते हों, प्राणसंकट

में पड़ जाय, तो सर्वसम्पत्ति दायक इस नाम नौका को करना चाहिए। हवन करे घृतसहित तिल चावल से, अथवा तस्मई से। तत्पश्चात् श्रीराघवजी के वीरगणों का यथाशक्ति आवाहन करके पूजन करे, क्योंकि ये वीरगण श्रीराघवजी के विशेष प्रिय हैं।

श्रीज्ञानेश्वर संहिता के मूल पाठः—

''पार्वत्युवाच—

देव देव महादेव भक्तानुग्रह कारक। वद श्री रामचन्द्रस्य नौकाख्यानमुत्ततम्।।
येनानुष्ठानतो देव सर्व सिद्धिर्भवेन्नृणाम्।

महादेव उवाच—

ऋणु वक्ष्यामि देवेशि! नन्दकार्या विधानतः।
श्रीरामनाम सम्भूतं कल्पवृक्षसमं परम्।।
नन्द कोटि नन्द लक्ष स्तथा नन्द सहस्रकम्।
तथा नन्द शतं देवि! नन्दकोत्तरमीरितम्।
एतत्क्रमेण कर्त्तव्यं सर्वसिद्धिकरं नृणाम्।
नवमांशने जुहुयात् तन्नवांशेन तर्पयेत्।।
मार्जनं तन्नवांशेन कर्त्तव्यं भूतिमिच्छता।
तन्नवांशेन च तथा ब्राह्मणे भोजयेत पुनः।
राजभये शत्रुभये त्रयतापे प्राणसंङ्कटे।।
कर्त्तव्यं साधकेनेदं सर्व सम्पत्तिकारम्।
पुनः स्वर्ण के चास्मिन हवनं तिल तन्दुलैः।।
सघृतैः पायसैश्चैव पश्चादाहृत्य वीरकम्।
पूजयेत्तु यथाशक्तिः यतः श्री रामवल्लभः।।

इति श्री ज्ञानेश्वर संहितायां पार्वती—महेश्वर सम्वादे श्रीरामनाम नौका विधिः समाप्तः। तिल तन्दुलैः घृतदुग्धैःजुहुयात् जलेन संतर्पयेत् कुशेन मार्जयेत् ब्राह्ममणं भोजनं कुर्य्यात्। एतदाभावे सति जप द्विगुणं कृत्वा अर्थात् हवनादि न बने तो जप संख्या दूनी कर दें।

श्री प्रेमलता जी महाराज स्वरचित बैराग्य प्रबोधक बहत्तरी में चौदह कोटि नाम जपकी विशेष विधि बताते हैं। सरल सुबोध मूल छंद ही में पढ़ लीजिए—

कलि केवल सियरामनाम गति जानहि जगत तमामा है।
कवनिउ विधि कोउ रटै कटै अघ कछु संदेह न या मा है।।
जो यहि भाँति रटै तो औरउ उत्तम चढ़ै सुरंगा है।
जग जबाल बहु ख्याल कला गुण मायिक विषय भुजंगा है।।
लोकलाज मद मोह कपट छल त्यागै नारि प्रसंगा है।
सावधान मन बैठि विलग मुख ठानि सुनेम अभंगा है।।

अशन सयन बहु वचन तर्कना तरकि लड़ाई दंगा है।
नाम प्रवाह अखंड सुमुख ते बह्यौ करै ज्यो गंगा है।।
कहुँ अनन्द अनुकूल फिरै कहुं भूखा प्यासा नंगा है।
तन सुखदुख सम समुझि निरंतर रटै नाम शुचि अंगा है।।
नाम अनन्य रसिक संतनि कर सेवा संग सु चित लाई है।
करै सदा मन मारि भली विधि तजि गुमान मद ठकुराई।।
उपजै परमानंद अनूपम जाय जो कहु केहि विधि गाई।
रोम रोम धुनि उठै नाम की भाव भक्ति रह उर जाई।।
संत कहैं यहि भांति चतुर्दश कोटि नाम रटि ले भाई।
बहुरि न परिहैं मोह जाल महँ जन्म मरण दुख नशि जाई।।
रामरूप होइ जात रटत नर नाम, काम तजि अधिकाई।
चहुँ जुग चहु श्रुति प्रगट नाम जपि कहहु को न शुभगति पाई?

✡ सर्व साधन—सार नाम जप ✡

श्री अग्निपुराण में जप शब्द का अर्थ बताते हुए कहते हैं कि इस शब्द का प्रथमाक्षर 'ज' पुनर्जन्म को रोकने वाला है तथा द्वितीयाक्षर 'प' का अर्थ है पाप नाशन। इस प्रकार नाम जप से सब पाप नष्ट होकर, जन्ममरण रूपी भवसमुद्र से मुक्ति जपार्थ से ही संभवित होती है। इसी से तो यजुर्वेद का मंत्र है—रामनामजपादेव मुक्ति र्भवति अर्थात् एकमात्र श्रीरामनाम जप से ही मुक्ति—प्राप्ति संभव है। मुक्ति तो शरीरांत होने पर ही स्पष्ट अनुभव में आती है। नामजप से जीवितावस्था में ही इष्टदेवता के दर्शन होते हैं। अथर्ववेद की उपनिषद् कहती हैं ''जपान्तेनैव देवता दर्शनं करोति कलौ नान्येषा भवति'' अर्थात् जप से ही कलि में इष्टदेवता के दर्शन होते हैं। अन्य उपाय से नहीं।

जापक का कोई अनिष्ट नहीं कर पाता— उसके पास यक्ष, राक्षस, पिशाच, भीषण ग्रह ये एक भी फटकने नहीं पाते—

यक्षरक्षः पिशचाश्च ग्रहाः सर्वे च भीषणाः।
जापिनं नोपसर्पन्ति भयभीताः समन्ततः।।

लिंग पुराण ८५/१२४

श्रीमद्भगवद्गीता अध्याय १० के श्लोक २५ में भगवान ने सभी यज्ञों में जप यज्ञ को अपना ही स्वरूप मानकर जपयज्ञ की सर्वश्रेष्ठता बतायी है।

'यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि।' 'विधि यज्ञाज्जपयज्ञो विशिष्टो दशभिर्गुणैः।।'

यह श्लोकार्द्ध मनु स्मृति २/२५, विष्णुपुराण ५५/९ तथा वुद्धपराशरस्मृति ४/५० में एक ही रूप से आये हैं। तात्पर्य यह कि यज्ञ की सर्वश्रेष्ठता सर्वमान्य है। यहाँ विधि यज्ञ का भाव स्पष्ट करते हुए प्रसिद्ध टीकाकार श्रीगोविन्दराजजी ज्योतिष्टौम आदि नाम वाले यज्ञ कहते हैं।

ज्योतिष्टौमादयो विधियज्ञा:। श्रीराघवानंद स्वामी दर्श पौर्णमास आदि यज्ञ बताते हैं— 'दर्शपौर्णमासादयो विधियज्ञा:।।' उपलक्षण से सभी अन्यान्य यज्ञ विधियज्ञ से सूचित हुए तथा उन सबों से जपयज्ञ दशगुना अधिक फलदायक है। मनुस्मृति के २/८६ श्लोक से पाकयज्ञ से भी जपयज्ञ श्रेष्ठ बताया गया है।

ये पाकयज्ञाश्चत्वारो विधि यज्ञ समन्विता:।
सर्वे ते जपयज्ञस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम।।

अर्थात् चारों प्रकार के पाकयज्ञ तथा विधि यज्ञ सभी अपने फल इकट्ठे करें तो जपयज्ञ के सोलह आने में एक आना भी नहीं तुलेंगे। अत: सर्व प्रकार की सिद्धियाँ जप से ही संभवित होती हैं। कहा भी गया है।

जपात्सिद्धि जपात्सिद्धि जपात्सिद्धि न संशय:।।
जप्येनैव तु संसिद्धये ब्राह्मणो नात्र संशय:।
कुर्यादन्यन्न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते।।

मनु. २/८७ वुहदविष्णुपुराण ५५/१९ पराशर. ४/६०

जप से जन्मजन्मान्तरों के पापपुंज नष्ट होते हैं, जप से सभी सुख भोग प्राप्त होते हैं, जप से मृत्यु पर विजय प्राप्त होती है, जप से सारी सिद्धियाँ मिलती हैं। यहाँ तक कि जप से मुक्ति भी मिलती है।

जपेन पापं शमयेदशेषं यत्तात्कृतं जन्मपरम्परासु।
जपेन भोगान् जयते च मृत्युं जपेन सिद्धिं लभतें च मुक्तिम्।।

लिङ्गपुराण ८१/१२५

यह तो किसी भी भगवन्मन्त्र के जप की महिमा हुई। सभी भगवन्नामों में सभी मन्त्रों में शिरोमणि भूत श्रीरामनाम की जप महिमा कौन कह सकता है? उत्तम नामजापक फलाशा की परवाह नहीं रखते। उनका नाम जप सर्वथा निष्काम भाव से प्रेम पूर्वक होता रहता है। परन्तु प्रारम्भिक साधक को नामजप का फल हाथों हाथ अनुभूत होता रहे तो उसकी जपश्रद्धा उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। इसी विचार से हम द्वादशकोटि नाम जप में प्रत्येक कोटि के फल विलग विलग अगले पृष्ठों में दिखायेंगे। जापक स्वयं नामजपकर उन लाभों को आजमा सकते हैं।

नामजप शुद्ध–शुद्ध हो, अपना कान ही सुनसुनकर इसका गवाह रहे। नाम में विश्वास ही किसी सिद्धि का कारण बनता है।

जन्म कुण्डली
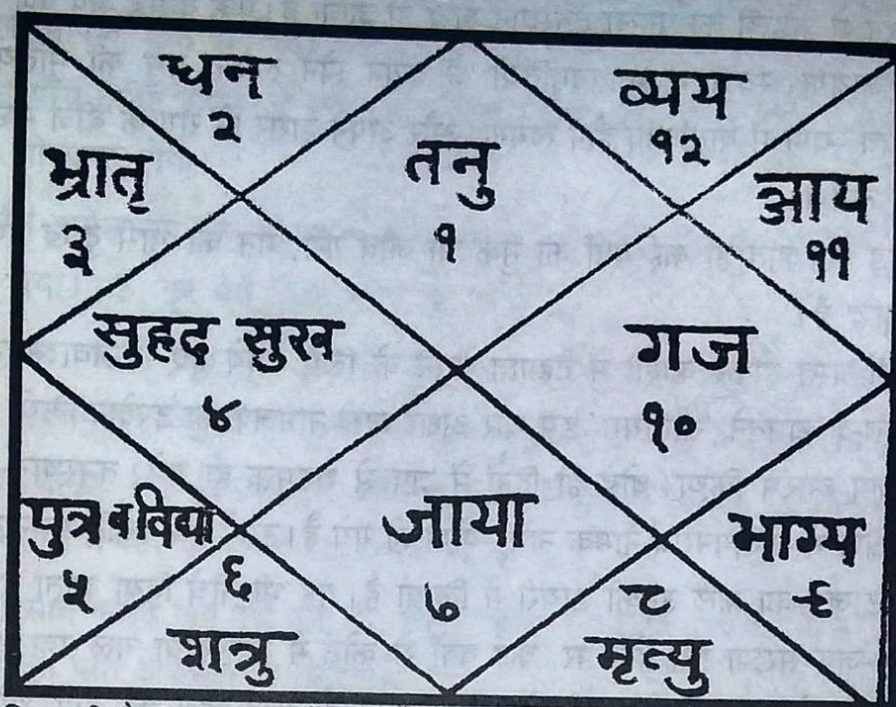
यों तो प्रसिद्ध ही है कि मन्त्रजप से ग्रह सौम्य हो जाते हैं, परन्तु प्रत्येक ग्रह के मन्त्र जप,, दान, हवन आदि पृथक–पृथक हैं एवं कष्ट साध्य हैं, एक श्री रामनाम ही ऐसे हैं जो सभी ग्रहों को शान्त कर अनायास सुरदुर्लभ पद प्रदान करने में समर्थ हैं। एक बार श्रीरामनाम उच्चारण ही त्रिताप शमन कर परम मंगल स्वरूप बना देता है, परन्तु जिन्हें इतना विश्वास नहीं है, उनके लिए उनकी साधन–निष्ठा के अनुसार बारह कोटि जप तो अवश्य ही करना चाहिये। इस साधन–निष्ठा में जप–संख्या और विधि पालन पूर्ण आवश्यक है। जो नामैकशरण हैं, उन्हे न जप संख्या का बंधन है न किसी विधि का ही। वे तो श्वास श्वास पर अजपा जप करते हुए निज जीवन धन्य करते तथा विश्वकल्याण संचालित करते रहते हैं। परन्तु जो ऐहिक सुखों का त्याग नहीं कर सकते अथवा नहीं कर पाये हैं तथा दुःख निवृत्ति के लिए लालायित रहते हैं, उनको तो पूर्ण विश्वास कर धैर्यपूर्वक द्वादशकोटि संख्यात्मक श्रीरामनाम का जप अवश्यमेव कर लेना चाहिये। ऐसा कर लेने से संतमतानुसार जन्मकुंडली के द्वादश स्थान शुद्ध हो जाते हैं। कुछ नाम योगियों का अनुभव पाठकों के हितार्थ यहाँ प्रकट किये जाते हैं।

दक्षिण महाराष्ट्र से 'वामनराव' नाम के प्रसिद्ध नामजापक हाल ही में हुए हैं। उनकी 'डायरी' में यह अनुभव लिखें हैं जो नीचे उद्धृत किये जाते हैं।

गुजरात के परम सिद्ध श्रीवासुदेवानन्द सरस्वती 'श्रीटेवेस्वामीजी' ने अपने मंत्रानुष्ठान के द्वारा श्रीभगवान् श्रीदत्तात्रय का साक्षात्कार प्राप्त किया था तथा उन्हीं भगवान् से जन्म कुंडली के द्वादश स्थान शुद्धि का नाम जप विधान प्राप्त किया था। हम भगवान दत्तात्रय द्वारा उपदिष्ट अंश (क) विभाग में तथा श्रीवामनरावजी का विचार (ख) विभाग में रखेंगे। (ग) विभाग में अन्यान्य नाम जापको के अनुभव लिखें जायेंगे।

१– प्रथम तनु स्थान की शुद्धि के लिए भगवान् दत्तात्रय कहते हैं (क) जिह्वा द्वारा एक करोड़ रामनाम जप करने से कुंडली का पहला तनुस्थान शुद्ध हो जाता है। एक करोड़ जप पूर्ण होते ही कल्पना प्रवाह बन्द हो जायेगा। स्वप्न में भगवद्मूर्तियों के दर्शन होने लगेंगे, प्रभु की मूर्तियों के साथ एवं साधु संतो के साथ स्वप्न में वार्तालाप होने लगेगा, और अपने शरीर के रोग के बीज नष्ट हो जायेंगे एवं सत्व वृद्धि होने लगेगी।

(ख) एक करोड़ जप होते ही कई वर्षों का मुकदमा जीत गये, मन का भारी दुःख नष्ट हो गया। यह तनुस्थान की शुद्धि है।

(ग) रोग ग्रस्त होकर काशी में देहपात करने के लिए आये हुए विठोवा नगसुंदर को प्रसिद्ध नामयोगी श्रीरामचन्द्र कामतने 'सीताराम' इस चार अक्षर वाले नामजप का उपदेश किया था। मृत्यु निकट जानकर उसने जप आरंभ किया। थोड़े ही दिनों में जप से रोगमुक्त हो गये। तनुस्थान शुद्ध हो गया।

(घ) दक्षिण में श्रीवामनराव नामक नाम–योगी हो गये हैं। उसने २४ कोटि रामनाम का जप किया था। प्रत्येक कोटि जप का फल उनकी डायरी में लिखा है। वह भी नीचे दिया जाता है। श्रीवामनजू को एक कोटि नाम–जप संख्या पूरी होने पर, कई वर्षों से कोर्ट में एक दावा चल रहा था,जिसकी उनके हृदय में बड़ी भारी चोट रहा करती थी, सो सहसा शांत हो गई। हृदय का ताप शांत हो गया। यह तनु–स्थान की शुद्धि का परिचायक है।

२– (क) दो करोड़ जप होते ही 'धनस्थान' की शुद्धि होगी। कर्जा अनायास निपट जायेगा और आर्थिक परिस्थिति शीघ्र ही अच्छी होने लगेगी।

(ख) दो करोड़ जप पूर्ण होते हुए ही सभी ऋण सध गया, आर्थिक संकोच दूर हो गया। यह धनस्थान की शुद्धि है।

(ग) ऊपर चर्चित विठोवा नागसुंदर को दो कोटि जप पूरा होने पर अच्छी जगह नौकरी मिल गई। धनस्थान शुद्ध हुआ।

(घ) श्रीवामनरावजी के दो कोटि नामजप पूर्ण होने पर कर्जा निपट गया। आर्थिक संकोच दूर हुआ। यह धन–स्थान की शुद्धि का परिचय है।

३–(क) तीन करोड़ जप पूर्ण होने पर 'पराक्रम स्थान' शुद्ध होगा। अपने कौटुम्बिक व बधुंजनों का वैमनस्य दूर हो जायेगा और कोई अपने से प्रेम करने लगेंगे।

(ख) तीन करोड़ जप पूर्ण होते ही भाइयों में परस्पर जो अनमेल था वह मिट गया, फिर कभी झगड़ा न हुआ। यह भातृस्थान एवं पराक्रम स्थान की शुद्धि है।

(ग) श्रीवामनरावजी को तीन करोड़ जपसंख्या पूर्ण होने पर उनके बंधु जो पहले उनसे विमुख रहते थे सो उनके साथ संपूर्ण प्रेम से रहने लगे। यह तृतीय भ्रातृ–स्थान व पराक्रमस्थान शुद्धि का परिचय है।

४–(क) चार करोड़ जप पूर्ण होने पर 'सुहृदस्थान व भ्रातृस्थान' की शुद्धि होगी अर्थात् अपने बंधुजनों और कुटुम्बियों के शारीरिक रोग दूर हो जायेंगे एवं मानसिक आघात बंद होगा।

(ख) चार करोड़ जप होते ही २२ वर्ष से एक जमीन का मुकद्मा चलता था, जिसको १६ बार आपके विरूद्ध कोर्ट ने फैसला किया था, अनायास बिना साक्षी के उसी कोर्ट ने आपके हित में निर्णय कर दिया। जमीन आपको सदा के लिए निर्विघ्न मिल गई। यह 'सुख–सृह्द–भ्रातृ स्थान' की शुद्धि है।

५–(क) पाँच करोड़ जपान्त में पुत्रस्थान व विद्यास्थान शुद्ध होगा। अपुत्र को पुत्र की प्राप्ति होगी और ब्रह्म विद्या भी प्राप्त होगी।

(ख) पाँच करोड़ जप होते ही प्रतिकूल रहनेवाला पुत्र स्वत: अनुकूल हो गया और ब्रह्म विद्या का बोध भी हो गया। यह 'पुत्र एवं विद्यास्थान' की शुद्धि है।

६–(क) छ: करोड़ जप पूर्ण होने से 'शत्रुस्थान व रोगस्थान' शुद्ध होगा। बाह्य शत्रुओं और आन्तरिक काम क्रोधादि षट् रिपुओं का उपद्रव निर्मूल हो जायेगा। शत्रु पाँव पर आकर गिरेंगे।

(ख) छ: करोड़ जप–संख्या पूर्ण होते ही जन–समाज में आपसे मतभेद रखने वाले सभी विरोधी आपके चरणों में गिर गये। यह शत्रु स्थान की शुद्धि है।

७–(क) सात करोड़ जप पूर्ण होते ही 'जाया स्थान' की शुद्धि होगी। पति को स्त्री अनुकूल हो जायेगी और स्त्री का पति अनुकूल हो जायेगा।

(ख) सात करोड़ जप पूर्ण होते ही अर्थ कष्ट से सदा रूठी रहने वाली धर्मपत्नी प्रसन्न रहने लगी और आजीवन अनूकूल रही यह 'जायास्थान की शुद्धि हुई।

(ग) विठोवा नगसुंदर को सातकोटि नाम जप पूरा होने पर एक बड़े श्रीमान् की कन्या का विवाह, जो दूसरे पुरुष से ठीक हुआ था, किसी खास कारण से छुड़ाकर, इनके साथ कर दिया गया तथा दायजे में बहुत धन मिला। इस प्रकार लाभ–स्थान व जाया स्थान दोनों शुद्ध हुये।

८–(क) आठ कोटि जप पूर्ण होने से 'मृत्युस्थान' शुद्ध होगा। अकालमृत्यु अपमृत्यु आदिक का भय न होगा।

(ख) आपके कंठ में एक नारियल जैसी कठिन गाँठ जो बहुत दिनों से थी एवं असह्य कष्ट देती थी, आठ करोड़ जप पूर्ण होते ही बिना दवा व चीर फाड़ के स्वयं गलकर नष्ट हो गई। यह 'मृत्युस्थान' की शुद्धि हुई।

९–(क) नव करोड़ जप पूर्ण होते ही 'महाधर्मस्थान' की शुद्धि होगी। नव करोड़ जप पूर्ण हुआ कि तुरंत ही विलक्षण घटना पटीयसी लीलाधारी प्रभु श्रीरामचन्द्रमाजू के स्थूल आँखों से प्रत्यक्ष ही दर्शन हो जायेंगे।

(ख) नव करोड़ जप पूरा होते ही श्रीमारुति मन्दिर में श्रीरामजी के दर्शन हुये। यह 'धर्मस्थान (भाग्य स्थान') शुद्धि का परिचय हुआ।

(ग) विठोवा नगसुंदर को नौ करोड़ जप पूर्ण होते–होते श्रीविश्वनाथजी व श्रीरघुनाथजी महाराज के साक्षात् दर्शन प्राप्त हुए।

१०–(क) दस करोड़ जप पूर्ण होने पर 'कर्मस्थान' की शुद्धि होगी। आपसे आप संत महात्मा व साधुपुरुषगण बिना बुलाये अपने घर पर स्वयं आकर मिलेंगे एवं अपने हाथों सदैव केवल शुभकर्म ही होते रहेंगे।

(ख) दश करोड़ जप पूर्ण होते–होते ऊँचे–ऊँचं महापुरुषों का समागम प्राप्त होने लगा, श्री ऊँडली आचार्य आपके घर पधारे।

११–(क) एकादश कोटि जप होने से 'लाभस्थान' की शुद्धि होगी। प्रापंचिक धन धान्य समृद्धि आदि का अनायास ही लाभ होता रहेगा।

(ख) ग्यारह करोड़ जप पूर्ण होते ही खेती की जमीन फलद हो गई, थोड़ी जमीन में पूरी उपज होने लगी। यह 'लाभस्थान' शुद्धि हुई।

१२–(क) बारह कोटि जप पूर्ण होने पर अशेषत: रजोगुण तमोगुण का नाश होगा। पूर्ण सत्वगुण–पूर्वक संपूर्ण सिद्धिकला प्राप्त होगी और कोई भी कर्त्तव्य करना शेष नहीं रहेगा। इस प्रकार बारह कोटि 'नामजप' करने से संपूर्णतया कृतकृत्यता प्राप्त हो जाती है। अपना प्रारब्ध एवं भावी भी बराबर बदला जा सकता है।

(ख) बारह करोड़ जप पूर्ण होते–होते स्वयं प्रभु श्रीरामजी ने आज्ञा प्रदान की कि तुम्हारा भजन पूर्ण हुआ। अब जीवों को नाम–सम्मुख करो। लोक में नाम का प्रचार कर जगत का कल्याण करो।

श्रीयुत् नरहरि कुलकर्णी सौदलगे नामक एक योगी हो गये हैं। आपको एक गाय ने सींग से मारा था। मृत्युवत् पीड़ा होनी लगी थी। जब औषधि से आराम नहीं हुआ तब किसी संत के उपदेश से दो अक्षर के मंत्र 'राम' मात्र का जप किया। धीरे–धीरे अच्छे हो गये। फिर तो आपको नामजप का चस्का लगा कि बड़ी तीव्रता से जप में तत्पर हुये। नव कोटि जप पूर्ण होने के पहले ही आपको श्री रामजी का साक्षात्कार हो गया।

श्रीयुत् डाक्टर रामचन्द्रराव भीमराव नायक भी १३ कोटि त्रयोदशाक्षर राममंत्र पूर्ण करने के लिए जप कर रहें थे। नित्य की संख्या बराबर डायरी में घड़ी के हिसाब से रखते थे। उन्हें भी अच्छे–अच्छे अनुभव हुये। श्रीगुरूआज्ञा परवश अपने अनुभवों का प्रकाश तो नहीं किया, किन्तु इतना अवश्य कहा कि द्वादश स्थान की शुद्धि के क्रम में अवश्य ही सब कुछ होते है। उस विषय में स्वानुभव होने से आपको पूर्ण विश्वास भी जम गया हैं।

इस प्रकार जीभ को नाम जप का चस्का लग जाय, तो देखिये क्या–क्या रंग छनता है? नामोच्चारण छोड़कर अन्यवार्त्ता नीम के समान कड़वी लगेगी। मुर्दे की भाँति जगत से उदासीन होकर सब संशय नि:शेष रूप से मिट जायेंगे। मस्तिष्क में अभिमानमद का लेश भी नहीं रहेगा।
श्री नामकांति कहती है–

सोभा सरस विशेष देख तब जब जुवान जप जागें।
नाम ललाम कलाम दाम तजि अपर बचन कटु लागे।।
दुविधा दाग दिमाग राग भव शव समान लखि त्यागे।
श्रीयुगलानन्यशरन सतगुरु पद पंकज सेव सुभागे।।४३।।

✡ निरन्तर अखंड नामजप ✡

उठते–बैठते, खाते–पीते, सोते–जागते सदैव नाम रटते रहना चाहिये। नाम भूलना बड़ी मूर्खता है, अनेकों खेद को बुलाना है। नामाभ्यास की उत्तम रीति यही है कि विश्वास पूर्वक श्रीनाम ध्यान को ही निरन्तर हृदय में धारण किये रहें। अपनी आत्मा के उद्धार का यही उपाय है कि सोते–जागते कभी नाम भूलें नहीं। यदि बने तो श्री अवध सरयूतट का अखंड निवास सज ले, 'तबतो सोना और उसमें सुगन्ध भी'। यह उपदेश कभी भूलना नहीं चाहिये।

ऊठत बैठत राम ररो मत मूढ़ मरो भरो खेद हजारो।
है यह उत्तम रीति पुनीत प्रतीति समेत हिया दृढ़ धारो।।
जागत सोवत भूलो नहीं, निज नामहि ते नित आतम तारो।
(श्री)युग्म अनन्य बसो सरयूतट, है वर बात न कीजियो न्यारो।।१०७।।

श्रीपद्मपुराण में लोकपितामह श्री ब्रह्माजी देवर्षि श्री नारद जी से कहते हैं कि श्रीरामनाम निरन्तर जपना चाहिये। नामजापक मनुष्य यदि श्रीजानकीजीवनजी का मधुर मनोहर नाम आधे क्षण के लिए भी भूल जाय, तो महदोष का भागी हो जाता है। हे महामुने। मैं आपसे सत्य कहता हूँ।

क्षणार्द्धं जानकीजानेर्नाम विस्मृत्य मानवः।
महादोषालयं याति सत्यं ब्रवीमि महामुने।।

मार्कण्डेयपुराण में श्रीव्यासदेवजी ने श्रीसूत जी को बताया है कि जीभ से उच्चारणपूर्वक श्रद्धा सहित निरन्तर नाम जपने से थोड़े ही दिनों में परमानन्द का अनुभव होने लगेगा।

भजस्व सततं नाम जिह्वायां श्रद्धया सह।
स्वल्पकेनैव कालेन महामोदः प्रजायते।।

श्रीशिवपुराण का प्रसंग है। भगवान् श्री शंकरजी ने श्रीनारदजी के प्रति कहा है कि नारदजी! श्रीनाम सरकारकी जप द्वारा सेवा निरन्तर करनी चाहिये। आधाक्षण भी बिनानाम जपे बितावे, तो वह समय मृत्यु से भी अधिक दुखदाई प्रतीत हो।

रामनाम सदा सेव्यं जपरूपेण नारद।
क्षणार्द्ध नाम संहीनं कालं कालातिदुःखदम्।।

श्रीलिङ्गपुराण में श्रीशिवजी श्रीपार्वती जी के प्रति कहते हैं कि निर्वाणदाता श्रीरामनाम का स्मरण निरन्तर करना चाहिये। जापक यदि आधे क्षण के लिये भूल जाय, तो दुःखनिवास में पड़ जाता है।

स्मर्तव्यं तत्सदारामनाम निर्वाणदायकम्।
क्षणार्द्धमपि विस्मृत्य याति दुःखालयं जनः।।

श्रीआदिपुराण में भगवान्श्रीकृष्ण भक्तराज श्रीअर्जुन जी से कहते हैं कि जो सांसारिक विषयों से विरक्त होकर निरन्तर नाम का गान करते हैं, उनके बीच में खासकर श्रीराघवजी साक्षात् की भाँति सदा निवास करते हैं।

सततं नाम गायन्ति विनिर्विण्णेन चेतसा।
तेषां मध्ये सदा वासः श्रीरामस्य विशेषतः॥

पुनः भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि मैं जगद्गुरु श्रीरामनाम का निरन्तर प्रेमपूर्वक स्मरण करता रहता हूँ क्षणमात्र भी नहीं भूलता हूँ। अर्जुन मैं सत्य सत्य कह रहा हूँ।

रामनाम सदा प्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरूम्।
क्षणं न विस्मृतिं याति सत्यं सत्यं वचो मम॥

श्रीजावालिसंहिता का वचन है कि मुमुक्षुओं को चाहिए कि श्रीरामनाम को निरन्तर जपे, जाने और ध्यान करे अथवा दिनरात सदा सर्वदा कीर्त्तन ही किया करे।

रामनाम परं जाप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरन्तरम्।
कीर्त्तनीयं च बहुधा मुमुक्षुभिरहर्निशम्॥

श्रीलोमशसंहिता में भी जगद्गुरु शंकरभगवान् का आदेश है कि श्रीरामनाम ही का निरंतर स्मरण करे, श्रीनाम ही सदा सुना करे, नामक्षरों का पाठ करे तथा कीर्तन करे तो दिनरात श्रद्धापूर्वक अखंडरूप से।

स्मर्तव्यं रामनामैकं श्रोतव्यं चैव सर्वदा।
पठितव्यं कीर्त्तितव्यं च श्रद्धायुक्तैर्दिवानिशम्॥

श्रीअनंत संहिता में श्रीरामानाम के निरतर जप का प्रभाव बताते हुये भगवान्शंकर जी श्रीपार्वती जी से कहते हैं कि श्रीरामानात्मक मंत्र को जो निरन्तर आदर और प्रेम के सहित जपते हैं, वही कलिकाल में कृतार्थरूप हैं। नामहीन व्यक्ति को माया मोहित समझना। इस मंत्र को अहर्निश निरतर जपते रहने से सब पापों से मुक्त होकर, जापक श्रीराघवजी की सायुज्य मुक्ति पाता है, अर्थात् भूषण वसन बनकर, उनके श्रीअंगों में संलग्न रहता है।

इमं मन्त्रं सदा स्नेहाद्ये जपन्तीह सादरम्।
ते कृतार्थाः कलौ देवि अन्ये मायामोहिताः॥
इमं मन्त्रं महेशानि जपन्नित्यमहर्निशम्।
मुच्यते सर्व पापेभ्यों रामसायुज्यमाप्नुयात्॥

श्रीप्रेमार्णव नाटक नामक आर्षग्रंथ का प्रमाण है कि निरन्तर नामजप का प्रभाव जान कर भी जो अधम पामर क्षणमात्र भी नाम के अतिरिक्त अन्य वस्तु का चिंतन करता है उसे गधा समझना।

क्षणं विहाय श्रीरामनाम यः पामराधमः।
कुरुते चान्यवस्तूनां चिन्तनं स तु गर्दभः॥

श्रीगणेश रहस्य में कहा गया है कि श्रीनामजप के बिना एकमुहूर्त भी बीत जाय तो हाथ मल–मल कर, माथा पीट–पीट कर, पछताया करे, कि पाप रूपी डाकू ने मेरे अमूल्य मानवजीवन का नामस्मरण वाला स्वर्ण अवसर चुरा लिया।

एकस्मिन्नप्यतिक्रान्ते मुहूर्ते नाम वर्जिते।
दुस्युभि र्मोषितस्तेन युक्तमाक्रन्दितुं भृशम्।।

श्रीवशिष्ठ रामायण में श्री मुखवचन है कि जो निरन्तर स्नेहपूर्वक मेरे सुधा सरोवर रामनाम का स्मरण करता है वह धन्य है। हमारा अतिप्यारा है। मैं सत्य सत्य कहता हूँ।

ये स्मरन्ति सदा स्नेहान् मम नाम सुधासर:।
तेऽतिधन्या: प्रियास्माकं सत्यं सत्यं ब्रवीम्यहम्।।

पुन: कहते हैं कि जो इन्द्रियों का संयम करके, मेरे नाम को निरन्तर जपता है, उसके समान मेरा प्यारा ब्रह्माण्डमंडल में दूसरा नहीं है।

मन्नाम संस्मरेद्यस्तु सततं निब्रतेन्द्रिय:।
तस्मात् प्रियतम: कश्चिन्नास्ति ब्रह्माण्डमण्डले।।

श्री विनय पत्रिका ६७ में श्री नामजप की विधि एवं निषेध का विवेचन करते हुए श्री गोस्वामिपाद आदेश करते हैं कि निरन्तर नाम–जपना, जप की सर्वोत्तम विधि है, श्रीनामसरकार को क्षणमात्र में भूल जाने से बढ़कर कोई निषिद्ध कर्म नहीं है।

''राम सुमिरत सब विधि ही को राज रे।
राम को बिसारिबो निषेध–सिरताज रे।।''

श्रीबड़ेमहाराज श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका, ९२४ में कहते हैं कि कराल काल को खंडन करने में श्रीनामसरकार परम प्रचंड हैं। इनका जप करना चाहिये। श्रीनाम में विश्वास प्रेम होने पर, अन्य साधन की आँच में जलना नहीं पड़ता। श्रीनामही को मनोहर मूलमंत्र मानकर, निष्काम भाव से इन्हें जीभ से निरन्तर जपना चाहिये। इससे सभी पापरूपी कलंक एवं अनिष्ट मिट जायेंगे। निरन्तर नामजप प्रियतम को अपनाने वाली अनमोल मुहर छाप के समान स्वीकृतिसूचक है।

''काल कराल को खंडन वेशक नाम प्रचंड सुजांप जपो जी।
प्रीति प्रीतिति कराय भली विधि साधना आँच न भूलि तपो जी।।
जीह अनीह निरन्तर धारना मूल मनोहर मंत्र थपो जी।
युग्म अनन्य कलंक कबाहत काटि के छाप अछाप छपो जी।।

श्री मिथिला जी के नाम जापक शिरमौर परमहंस श्रीप्रेमलता जी का भी यही आदेश है। आठो पहर निरन्तर नाम जपना चाहिए।

''नारि संग तजि श्रीसियरामा। रटै अखंड पुलकि बसु यामा।।''

श्रीवृहद उपासना अन्तर्गत श्रीसियरामनाम प्रसंग से–

श्री वैष्णव स्मृति में कहा गया है कि सोते जागते, खाते—पीते, उठते—बैठते, चलते—फिरते जो सदैव राम नामक मंत्र को जपते रहते हैं, उनको हम बार—बार नमस्कार करते हैं।

स्वपन् भुंजन् ब्रजंस्तिष्ठनुक्तिष्ठंश्च वदंस्तथा।
यो वक्ति रामनामाखयं मन्त्रं तस्मै नमो नमः।।

अखंड नाम जपने वाले को भोजन करते समय भी नामजप छोड़ना नहीं चाहिये। अत्रिस्मृति नामक धर्मशास्त्र का आदेश है कि प्रत्येक ग्रास मुख में डालने के पहले नामोच्चारण कर लें। फिर ग्रास रखे! चबाते समय भी बीच—बीच में नाम गुनगुनाया करे। इस प्रकार से नामस्मरण पूर्वक भोजन करने वाले को अनेक दोषों से भरे अन्न में, कुअन्न भक्षण का दोष नहीं लगता। बल्कि भोजन के जितने भी दाने पेट में जाते हैं,, प्रत्येक दाने—दाने के हिसाब से उतने महायज्ञ करने से भी अधिक फल उन्हें मिलते हैं

कवले कवले कुर्वन् राम नामानुकीर्त्तनम्।
यः कश्चित् पुरूषोऽश्नाति सोऽन्नदोषैर्न लिप्यते।।
सिक्थे सिक्थे लभेन्मर्त्यो महायज्ञाधिकं फलम्।
यः स्मरेद्रामनामाखयं मन्त्रराजमनुत्तमम्।।

श्री आदिरामायण में श्रीहनुमतलाल जी का आदेश है कि जागते, सोते, चलते, बैठते, विचरण काल में पलक खोलते, बन्द करते, हर समय श्रीरामनाम का जप करते रहना चाहिए।

जाग्रंस्तिष्ठन् स्वपन् क्रीडन् विहरन्नाहरन्नपि।
उन्मिषन् निमिषंश्चैव रामनाम सदा जपेत।।

निरन्तर नाम जप से कुछेक ही दिनों में अजपा जप सिद्ध हो जाता है। उस समय स्थिति कैसी बन जाती है, श्री बड़े महाराज का अनुभव उन्हीं की महावाणी में पढ़िये।

मेरे चित्त में सुखसार नामजप की अखंड तैलधारा इस प्रकार बहने लगी है कि उसका तार तोड़ने पर भी नहीं टूटता। उनसे प्राप्त आनन्द में पगकर, मन में दृढ़तापूर्वक जमी हुई काम वासना भी मिट गई। छलकी छाया भी मिट गई। व्यभिचार का कलंक मिट गया। स्थूल, सूक्ष्म,कारण और महाकारण रूप चारों मायिक शरीर श्रीराम विरहाग में जल गये। दुष्ट वासनाओं की शृंखला भी जाती रही। व्यर्थ का शोक संताप तथा कामादि प्रगट विकार भी हिल गये अर्थात् मिट गये। श्रीसदगुरु की श्रीशीथ प्रसादी पाकर शरीर को पोसा है। अब निर्भय होकर श्रीरामनाम स्थित रमणीय रकार में मन रम रहा है।

चल्यो चित बीच नाम धार सुखसार अब
एकतार तैल सम तुड़त न तार है।
मल्यो मुद मदन मुराद मजबूत मन
छल्यो छल छाँह दाग दल्यो व्याभिचार है।।

जल्यो तन चार हार हिरस हराम होश
हल्यो हिय हाय जाय जाहिर विकार है।
(श्री) युगल अनन्य पल्यो सतगुरु सीत पाय
विगत विभीत रंग रमन रकार है।।९२५।।

भगवान्नाम का किसी भी दूसरे काम में प्रयोग नहीं करना चाहिये। भगवान्नाम लेना चाहिये केवल भगवान के लिए। भगवान् के लिये भी नहीं, उनके प्रेम के लिए– प्रेम के लिए भी नहीं, परन्तु इसलिये कि लिये बिना रहा नहीं जाता, मन की वृत्तियाँ ऐसी बन जानी चाहिये कि जिससे भजन हुए बिना एक क्षण भी चैन नहीं पड़े जैसे श्वास रुकते ही गला घुट जाता है– प्राण अत्यन्त व्याकुल होकर छटपटाने लगता है। इसीलिए भगवान् नारद जी कहते हैं 'अव्यावृत भजनात्' तैल धरावत् निरंतर भजन करने से ही प्रेम की प्राप्ति होती है।

✡ एकाग्र चित्त होकर नाम जपना ✡

श्रीपद्मपुराण में भगवान् वेदव्यास जी ऋषियों को श्री नाम उपदेश करते हुए, आदेश देते हैं कि श्रीरामनाम के अक्षरों को ध्यान में यत्नपूर्वक चित्तवृत्ति को एकाग्र बनाते हुए, नामाभ्यास करना चाहिये। चित्तवृत्ति रोके बिना, नामरस का स्वाद सुख बड़े–बड़े मुनियों को भी नहीं मिलते।

चित्तस्यैकाग्रता विप्रा नाम्नि कार्या प्रयत्नतः।
वृत्तिरोधं विना हार्दं दुर्लभं मुनीनामपि।।

पूज्यपाद श्रीबड़े महाराज स्वलिखित 'श्रीसीतारामनाम अभ्यास प्रकाश' नामक पुस्तक में अवधी भाषा के गद्य लेख में इस प्रकार इस सम्बन्ध में आदेश देते हैं। नाम जापकों के लिए 'प्रथम रूप का ध्यान दुर्लभ है,ताते प्रथम श्रीनाम ही के ध्यान में वृत्ति लीन करे। परमतेजमय सर्वत्रपूरन अथवा हृदय कमल में नाम का ध्यान करे। अष्टदल हृदयकमल के मध्य में महातेजमय सिंहासन, तामें श्रीनाम दोउ वरन अनंत भानु सम प्रकाशमान ध्यान करे औ दलन में प्रनवादिक महामंत्रन को ध्यान करे सहज रीति से और इह ध्यान करे के श्रीनाम से महामधुर धुनि उठि रही है, सो सावधान समेत सुने। सब अनाहद उसके सामने फीके पड़ि जाते हैं। देहादिक को भुलावै। या रीतिसे ध्यान करते–करते श्रीनाम के अंतरही में रूप सच्चिदानन्दमय भाव के अनुसार प्रकाशित हो जायगा, जिनकी छबि अकथ है। उस स्वरूप के दर्शन से बीज समेत वासना अविधा नष्ट हो जायगी। पुनि श्रीपरात्पर स्वरूप के ध्यान में लीन रहे। अभ्यास पुष्ट भए पर कीट–भृङ्ग न्याय आप भी हो जायगा, संशय नहीं हैं रूप अनूप सिंधु में लीन हो जाय। बाहर की सब सुधि भुलाय के ऊपर के शब्दों में उपदिष्ट ध्यान विधि सर्व साधारण के लिये उपयोगी है। आगे मधुर उपासकों के लिये ध्यान श्री बड़े सरकार बताते हैं।

"कोई संत रसवंत का संमत इह हैं के परत्पर धाम मन में विचार करे, उसी में श्रीसीता सर्वेश्वरी सहित सर्वेश्वर श्रीराम को भाव रूप ध्यान करे। अपना स्वरूप भी वहाँ शुद्ध निर्विकार परिकर सम विचारे। उसी ध्यान में मगन रहे, संक्षेप सेवा भी करे, जो विशेष न हो सके।"

सपरिकर युगल मनहरणललन का नखशिख ध्यान करते हुए उन्हीं की अष्टयामीय मानसिक सेवा में सदैव छके रहने का नाम रसिकाई की भाषा में भावना है। श्रीवृहद्विष्णुपुराण में रघुकुलगुरु श्रीवशिष्ठपौत्र महर्षि पराशर जी अपने शिष्य को भावना का उपदेश करते हुए आदेश दे रहे हैं कि भावनापूर्वक नामस्मरण करने से जापक परमानन्द के सुधासिन्धु में मग्न हो जाता है। इससे बढ़कर कोई भी दिव्यानन्द नहीं है।

"परानन्दे सुधासिन्धौ निमम्नो जायते जनः।
यदा श्रीराम सन्नाम संस्मेद्भवनायुतः।।"

परन्तु है यह उच्चदशा की बात। सुदीर्घ कालीन नामाभ्यास के पश्चात् अन्तःकरण की संशुद्धि हो जाने पर ही भावना बन सकती है।

"हरि निर्मल मलग्रसित हृदय असमंजस मोहि जनावत।
जेहि सर काक कंक बक सूकर क्यो मराल तहँ आवत।।"

श्रीमार्कण्डेय संहिता में कहा गया है कि अन्य साधनों से तो अन्तःकरण शुद्ध होने से रहा। सभी तत्त्ववेत्ताओं की अनुभव सिद्ध सम्मति है कि कलिकाल में तो श्रीरामनाम की साधना से ही अन्तःकरण विशुद्ध होगा।

"अन्तःकरण संशुद्धि र्नान्य साधनतो भवेत्।
कलौ श्रीरामनाम्नैव सर्वेषां सम्मतं परम्।।"

अन्तःकरण को मलिन करने वाली है वासनाएँ! स्थूल वासना तो वैराग्य विचार से हट भी जाती है परन्तु सूक्ष्म वासना गुप्त रहने से उसके अस्तित्व का पता भी नहीं लगता। किन्तु छिपी रहने पर भी वह सूक्ष्म वासना दिव्य परमानन्द का अनुभव होने देती। श्रीरामनाम जपसे वह छिपी सूक्ष्म वासना भी आप ही आप मिट जाती है।

"चित्तस्य वासना सूक्ष्मा सर्वानन्द विनाशिनी।
सापि नाम संलापादनायासेन नश्यति।।"

पूज्यपाद श्री बड़े सरकार की ऊपर उपदिष्ट विधि से आप नामाभ्यास के प्रारंभ में श्री नामाक्षरों का ही ध्यान करें। जप समय नाम ही सुनते रहें। इस प्रकार नामाकार वृत्ति बनाने पर आपका अन्तःकरण शुद्ध हो जायगा। अन्तःकरण के विशुद्ध होते ही चित्तवृत्ति को निरूद्ध करने में दीर्घकालीन बहुश्रम साध्य उपायों का अवलंब लेना पड़ता है। पहले आप यम नियम प्राणायाम प्रत्याहार कर ले, तब आप ध्यान के अधिकारी होंगे। ध्याान से धारणा तक सम्हालने में चित्तवृत्ति एकाग्र होती है। ध्यान सिद्ध होकर समाधि लगने पर चित्तवृत्ति का निरोध होता है। परन्तु श्रीनामजप में इतनी लंबी प्रक्रियाओं की अपेक्षा नहीं। आप केवल छः महीने उपर्युक्त वृत्ति से नामाकारवृत्ति बनाकर नामाभ्यास करें। आपकी चित्तवृत्ति सुनिश्चित रूप से निरुद्ध हो जायगी। तब आप भाव समाधि या प्रेम समाधि के पात्र बन जायेंगे।

श्रीनृसिंह पुराण में कहा गया है कि योग भाषा में कथित प्रमाण, विषर्य्यय विकल्प, निद्रा और स्मृति आदि दशा में प्राप्त सभी प्रकार की चित्तवृत्तियाँ श्रीनाम को सावधानतापूर्वक जपने से निश्चय निरुद्ध होकर समाधि लगने लगेगी।

सर्वासां चित्तवृत्तिनां निरोधं जायते ध्रुवम्।
रामनाम प्रभावेण जप्तव्यं सावधानतः।।

श्रीआदिपुराण में भगवान श्रीकृष्ण श्रीअर्जुन जी को चित्त एकाग्र करने के सिलसिले में आदेश देते हैं कि श्रीरामनाम के जपसे ही जापकों की बुद्धि परात्पर ब्रह्म श्रीजानकी रमणजू के रूप में निश्चल रूप से लग जाती है। चंचल चित्त सहित मन को उस मनहरण रूप में तल्लीन करने वाले भी श्रीनामजप ही है।

नाम्नैव नीयते मेधा परे ब्रह्मणि निश्चला।
नाम्नैव चञ्चलं चित्तं मनस्तस्मिन्प्रलीयते।।

चित्तवृत्ति को एकाग्र करने में बाधक है विकार गण। नामजप से ही इनका अभाव संभव है। सबसे बड़ा विकार है मोह, जिसके कारण क्षणभंगुरवस्तु भी नित्य की भाँति, अपावन भी पावन की भाँति वाधक भी साधक की भाँति प्रतीत होता है। मोह ही का नाम अज्ञान है। यह अन्य उपाय से शीघ्र नहीं मिटता। नामजप से अनायास मोह भाग जाता है।

श्रीआदिपुराण में कहा गया है कि जिनके नाम स्मरण करने से मोह रूपी महा अज्ञान वन्धन अनायास नष्ट हो जाता है उन्हीं श्रीराघवजू का हम भजन करते है।

यन्नाम स्मरतो नित्यं महा ह्यज्ञान बन्धनम्।
छिद्यते चाश्रमेनैव तमहं राधवं भजे।।

श्रीलामेश संहिता में भी कहा गया है कि जिस प्रकार चिन्तामणि के संस्पर्श से दरिद्रता नष्ट हो जाती है उसी प्रकार श्रीरामनामजप से मोह जाल निस्संदेह मिट ही जाती हैं।

यथा चिन्तामणेस्स्पर्शादारिद्रय याति संक्षयम्।
तथा श्रीरामनाम्नावै मोहजालमसंशयम्।।

श्रीपद्मपुराण में श्रीवशिष्ठ जी श्रीभरद्वाज से कह रहे हैं कि सभी लोक लोकान्तर मोह की अग्निज्वाला से दग्ध हो रहे हैं श्रीरामनाम सुधा सिन्धु की सुरक्षा में घुस पड़ने वाले उसमें जलने से बच जाते हैं।

मोहोनलो लसज्ज्वाला ज्वलल्लोकेषु सर्वदा।
श्रीनामाभ्भोधिरक्षायां प्रविष्टो नैव दह्यते।।

श्रीजैमिनिपुराण का कथन है कि भगवान ने इस जगत को कर्माधीन बना रखा है और शुभाशुभ कर्म का फल भगवान ही के अधीन है, परन्तु श्रीरामनाम जप से समस्त कर्म संस्कार मिट जाते हैं।

कर्माधीनं जगत्सर्वं विष्णुना निर्मितं पुरा।
तत्कर्म केशवाधीनं रामनाम्ना विनश्यति।

ध्यान में बाधक है —लय (निंद), विक्षेप (वाह्यशोर गुल से चित्त उस ओर आकृष्ट होना), कषाय(विषय चिंतन), और रसाभास। श्रीप्रमोदनाटक नामक आर्षग्रन्थ का आप्त वचन है कि श्रीरामनाम के स्मरण से ये विघ्न भी मिट जाते हैं। इतना ही नहीं नाम जापक संसार से तर जाता है। श्रीरामनाम दोनों के आरति हरण है। उन्हें ही हम सदा स्मरण करते हैं—

कषाय विक्षेप लयादि हारकं सुतारकं संसृति सागरस्य।
सदैव दीनार्तिहरं दयानिधि स्मराभि भक्त्या परमेश्वरप्रियम्।।

श्री सांख्यल्य स्मृति नामक धर्मशास्त्र का आदेश है कि सभी पापों को नष्ट करके चित्तवृत्ति का निरोध कर देने वाले तथा परमानन्द का अनुभव कराने वाले मंगलमय श्रीरामनाम का जप करते रहना चाहिये।

पापानां शोधकं नित्यं परानन्दस्य बोधकम्।
रोधकं चित्तवृत्तीनां भजध्वं नाम मङ्गलम्।।

संमोहन तन्त्र में भगवान शंकर ने पार्वतीजी को बताया है कि सभी सिद्धियाँ एक मात्र श्रीरामनाम जप से ही मिल सकती हैं, जो नित्य चित्तवृत्ति को एकाग्र करके सदा श्रीरामनाम का जप करते हैं, उनके लिये कुछ भी दुर्लभ नहीं है।

चित्तैकाग्रतयानित्यं यं जपन्ति सदा प्रिये।
रामनाम परंब्रह्म किंश्चित्तेषां न दुर्लभम्।।

चित्त की एकाग्रता की सर्वोत्तम विधि है रूपध्यान। यदि कोई निराकार वादी कहे कि चराचर में व्यापक ब्रह्म अरूप ही होकर रमण करता है तो उसे नाम जपने वाली सच्ची शान्ति नहीं मिलेगी। श्रीनाम वाचक है, उनके वाच्य हैं परमानन्दमय सगुण साकार द्विभुज धनुषधारी श्रीअवध बिहारी ही है। यदि आप रूपध्यान छोड़कर नामाभ्यास करते हैं या नामजपना छोड़ केवल रूपही का ध्यान करते है तो दोनों में कोई सिद्ध नहीं होने को। ऐसा सिद्धान्त समस्तसंत समाज सम्मत है तथा वेद सम्मत भी। अतः श्रीबड़े महाराज का आदेश है कि रूप ध्यान जागृतकर नाम जपना चाहिये। इस प्रकार नामाभ्यास करने पर आप सभी उत्पाती विकार समुदाय के उपद्रवों से बाल बाल बच जायेंगे।

श्रीबड़े महाराज ध्यान करने की एक सरल बिधि बताते हैं। एकान्त में पद्मासन या सुखासन से बैठकर आँख कान बंद कर मौन हो जायँ। श्रीनाम रटते हुए पहले सूर्यचन्द्र तथा अग्नि के बीज रूप श्रीरामनाम के प्रकाश ही का ध्यान करे। नाम रटने से अघट सुख मिलेगा। इसी मार्ग से चलने पर नाम सुधा का स्वाद मिलेगा। इस प्रकार का अभ्यास कुछ दिन करने पर हृदय शुद्ध हो जायगा। तब रससिन्धु श्रीयुगल रूप अनायास ध्यान देश में प्रगट हो जायेगा। किन्तु यह साधन तभी बन पायेगा जब संत सद्गुरु की चरण परिचर्या पहले कुछ दिन कर लेंगे।

नैन बैन श्रवन विशेष मूँद करि ध्यान
प्रथम प्रकाश ही को भली भाँति कीजिये।
नाम की रटन सुख अघट घटन पंथ
अटन विशेष सजि सुधा रस पीजिये।।
कछु दिन बीते पर सम शुद्ध सत्त्व भये पर
रूप रस सागर के बीच जाय भींजिये।
(श्री)युगल अनन्य इह होय तब मीत जब
युगल चरन संत सतगुरू मीजिये।।३१८।।

इष्ट—रूप—ध्यान पूर्वक नाम जपना चाहिये

रूपमारोग्यमर्थांश्च भोगांश्चानुषङ्गिकान्।
ददाति ध्यायतो नित्यमपवर्गप्रदो हरि:।।

अर्थात् मुक्तिदाता हरि, ध्यान करने वाले पुरुष को रूप, आरोग्य, धन और नानाप्रकार के भोग भी बिना माँगें ही दे देते हैं।

चिन्त्यमान: समस्तानां क्लेशानां हानिदो हरि:।
समुत्सृज्याखिलं चान्यं सोऽच्युत: किं न चिन्त्यते।।

श्रीहरि अपने चिंतन करने वाले के सभी क्लेशों की हानि करने वाले हैं। अन्य सभी साधनों का त्याग कर के उस हरि का ही चिंतन क्यों न किया जाय? यहाँ चिंतन ध्यान ही का पर्यायवाची है।

ध्यायेन्नारायणं देवं स्नानादिषु च कर्मसु।
प्रायाश्चित्तं हि सर्वस्य दुष्कृतस्येति वै श्रुति:।।

अर्थात् स्नानादि कर्मों को करते समय नारायणदेव का ध्यान करे। यही सब पापों का प्रायश्चित्त है। ऐसा श्रुति कहती है।

अति पातकयुक्तोऽपि ध्यायान्निमिषमच्युतम्।
भूयस्तपस्वी भवति पंक्तिपावनपावन:।।

अर्थात महापापों से युक्त मनुष्य भी यदि निमिष भर अच्युत प्रभुका ध्यान करे तो पंक्तियोंके पवित्र करने वालों को भी पवित्र करने वाला बड़ा तपस्वी बन जाता है।

आलोड्य सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुन: पुन:।
इदमेके सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायण: सदा।।

अर्थात् समस्त शास्त्रों का मंथन करके और बार—बार विचार करके यही सिद्धान्त स्थिर किया गया कि सदा नारायण का ध्यान करना चाहिये। प्रथमावस्था में श्रीनामाक्षरों का ही ध्यान करना चाहिये। नाम के प्रत्येक वर्ण में अपार ऐश्वर्य भरा है। हृदय में नामाक्षर विराजमान

होते ही हमें सर्वथा निर्भय हो जाना चाहिये, क्योंकि अब नामध्यान से हमारी नाम शरणगति परिपूर्ण हो जाती है। नामध्यान छोड़कर इधर–उधर चित्तवृत्ति बहने नहीं पावे अन्यथा नामध्यान हीन हृदय ही को नाना प्रकार के दुखदायी मानसिक कष्ट व्यथित करते हैं। इस प्रकार नाम सनेह सम्हारने से आपको दिव्य दृष्टि प्राप्त होगी। कहा भी है।

ताही को सूझत सदा, दशरथ राजकुमार।
चश्मा जाके दृगन में, लग्यो रकार मकार।।

फिर तो श्री अवध विहारी क्षण मात्र के लिये आपकी आँखों से ओझल होंगे नहीं। अपने नयनों को उनकी रूप रमणीयता में रमाया करें।

हूजे सहज असंक अंक बिन विभव वरन उर धारी।
दूजे तरफ नहीं दीजे दिल दरद दून दिकदारी।।
चितवन चमन रमन कीजे चित नाम सनेह सँवारी।
युगलानन्य सरन बिसरे नहिं पल भर अवधविहारी।।८९।।

अब श्रीयुगलकिशोर के रूप में चंचल चित्त को दृढ़तापूर्वक स्थित कर दे। मनके चंचल स्वभाव को छोड़कर एकाग्र मन से प्रेमपूर्वक युगल रूपके नखशिख दर्शन करते रहें। आलस्य तो आपत्ति मूलक है विषयस्पृहा हृदय को कष्ट देने वाली है। तृष्णाओं में कोई रस नहीं। ऐसा विचार कर इन सबों से पृथक् होकर युगल किशोर के छविससेवर में मगन रहना चाहिये।

युगल किशोर ओर दीजे चित चपल अचल ठहराई।
नखशिख नवल नेह पूरन अवलोकिय बानि विहाई।।
आलस कहर कषाय हाय हिय हिरस अरस दृग लाई।
(श्री) युगलअनन्यशरन सोभासर मन मज्जत सरसाई।।९०।।

नाम–रटन का सुदृढ़ संकल्प

श्रीगुरु संत शास्त्र श्रुति सम्मत समुझा मैं विद्वानों से।
नाम सार–सिद्धान्त कहत सब फिरि क्या काम प्रमानो से।।
रटिहौ सोइ विश्वास सुधरि दृढ़ तजि बकवाद अजानों से।
पारसमनि जब मिली मोह क्या तब फिरी पैसा आनों से।।

झूलना छंद

आज से रैन दिन सैन करिहौ नहीं,
लेटि जुग घड़ी उठि बैठना है।
मारि मन मदन को शौक सद सदन में,
होय हुशयार अब पैठना है।।

किसी से काज कछु मीत मुझको नहीं
विश्व से भलीविधि ऐंठना है।
युगल अनन्य श्री नाम सुख सिंधु में
दमबदम मौज मिलि मैठना है।।
आज से भली विधि जीति हौं निंद को
जानकी नाह निज नाम जपि के।
खान और पान दुखखान व्यवधान कर
छोड़िहौं नाम–तप तीव्र तपि के।।
किसी के साथ निज गाथ कहिहौं नहीं
कौन वाकिफ शबद वृथा खपि के।
भनै युग आनन्य जी जान को वारिहौं
जानकी नाथ पद छाँह छपिके।।१८३१।।

अब लौं नसानी अब न नसैंहौं।
राम–कृपा भव–निसा सिरानी, जागे फिरि न डसै हौं।।
पायऊँ नाम चारु चिंतामनि, उर कर तें न खसैहौं।
स्यामरुप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं।।
परवश जानि हँस्यो इन इन्द्रिन, निज सब ह्वैन हँसैहौं।
मन–मधुकर पनकै तुलसी, रघुपति–पद–कमल बसैहौं।।

श्रीनाम सेवन के अन्यान्य प्रकार

वृहन्नारदीय नामक आर्षग्रन्थ के मतानुसार, हम श्रीसीतारामनाम का कीर्त्तन करें अथवा मानसिक स्मरणही करें, सुनते ही रहें या लिखा करें श्रीनामाक्षरों के दर्शन किया करें या श्रीनामाक्षरों के ध्यान धारण ही करें, हमारे नाम सेवन का प्रकार चाहे उपर्युक्त विधियों में किसी भी विधि का हो हमारे सभी मनोरथ श्रीनाम सरकार पूरा करेंगे।

'स्मरणात्कीर्त्तनाच्चैव श्रवणाल्लेनादपि।
दर्शनाद्धारणादेव रामनामाखिलेष्टदम्।।'

श्रीलोमश संहिता का आदेश है कि एकमात्र श्रीनाम ही का स्मरण, श्रवण, नामाक्षरों का ही पठन अथवा श्रीनामका ही कीर्त्तन अहर्निश श्रद्धापूर्वक करते रहना चाहिये।

''स्मरतव्यं रामनामैकं श्रोतव्यं चैव सर्वदा।
पठितव्यं कीर्त्तितव्यं च श्रद्धायुक्तं दिवानिशम्।।''

काशीखण्ड नामक प्राचीन सद्ग्रन्थ में कहा है कि श्रीकाशीवासी भगवान् शंकरजी जीवों के कल्याणार्थ श्रीकाशीपुरी की गली–गली में सतत घूमते हैं तथा सबों को उपदेश करते रहते हैं कि परमानन्ददायक श्रीनामोच्चारण रूपी अमल को कर्णछिद्रों का दोना बना कर पान करते रहो। श्री रामनामही तारक ब्रह्म है। इन्हीं का मन से ध्यान किया करो। ऐसा कहते हुए मरणशील प्राणियों के कान में श्रीनामसुनाकर उन्हें मुक्त करते रहते हैं।

''पेयं पेयं श्रवणपुटके रामनामाभिरामं
ध्येयं ध्येयं मनसि सततं तारकं ब्रह्म रूपम्।
जल्पञ्जल्पन्प्रकृतिविकृतौ प्राणिनां कर्णमूले
वीथ्यां वीथ्यमटति जटिलः कोऽपि काशी निवासी।।''

श्रीजावालसंहिताका भी यही आदेश है कि भवसागर से तरने वालों को अन्यान्य जपों की अपेक्षा नामजप ही सर्वोपरि जप है। श्रीनाम ही सरकार के महत्त्व परत्त्व प्रभावादि को जानना चाहिए। ध्यान भी श्रीनामाक्षरों का ही करना चाहिये। कीर्त्तन भी श्रीनाम ही का होवे एवं प्रकार श्रीनामसेवा में सतत संलग्न रहना चाहिए।

''रामनाम परं जाप्यं ज्ञेयं ध्येयं निरन्तरम्।
कीर्त्तनीयं च बहुधा मुमुक्षुभिरहर्निशम्।।''

श्रीनामजापक को चाहिये कि अन्य साधनों से उदासीन होकर एकमात्र श्रीरामनाम जपके लिए चातक के समान टेक धारण करें। श्रीनामाक्षरों के ध्यान में चन्द्रचकोर की वृत्ति धारण करना चाहिये। मेघगर्जन समान नामकीर्त्तन सुनकर हर्षोन्नमत्त होना मयूर से सीखें। इनके दोषों पर ध्यान न दें। इस सम्बन्ध में श्रीसुदर्शन संहिता का आदेश है।

''चातकानां चकोराणां मयूराणां तथा शुभम्।
लक्षणं दोषनिर्मुक्तं धार्यं श्रीनामतत्परैः।।''

श्रीभुशुण्डिरामायण में कहा गया है कि जो परात्पर श्रीरामनाम कीर्त्तन को सद् भक्ति पूर्वक सुनते हैं, वे भी परमधाम को प्राप्त करते हैं। फिर जो स्वयं जपते भी हैं और स्वयं सुनते भी हैं, उनके विषय में क्या कहना हैं।

''जे शृण्वन्तिहि सद्भत्या रामनाम परात्परम्।
तेऽपि यान्ति परं धाम किं पुनर्जापको जनः।।''

श्रीरामनाम सत्य है तो श्रीनामध्वनि कान से सुनना चाहिये। जीभ से श्रीनाम जपना चाहिये। पावनसुयश वाले सीतारामनाम को हाथ से लिखना चाहिये। नामाक्षरों का ध्यान मन से दृढ़तापूर्वक जमाना चाहिये। श्रीनामाक्षरों से अंकित श्रीतुलसीमाला को हाथों से स्पर्श करते रहने के लिए माला फेरा करो। नेत्रों से श्रीनामाक्षरों के दर्शन किया करो। संसार से भय हो तो श्रीनाम की शरणागति ग्रहण करो।

'श्रवन सुने सतनाम सुरव सुखादेन सुरसना जपिये।
करन लिखो सुचि सुजस नाम अभिराम सुमन थिर थपिये।।
परसो प्रेम समेत नाम दृग देखो वृथा न खापिये।
युगलानन्यशरन संकित संसृति से ह्वै तहँ छपिये।।

स्मरण करना है तो श्रीनाम का, जपरूप से सेवन करना है तो श्रीनाम का, स्पर्श करना है तो श्रीनामाक्षरों का, दर्शन भी नामाक्षरों के ही, पारम्परिक संभाषण में केवल नामचर्चा रहे। सुने नाम, मन में मनन करें नामार्थ ही। केवल नाम स्नेही जापकों से स्नेह करना चाहिये तथा समस्त कामनाओं से निष्प्रयोजन रहना चाहिए।

'सुमिरन सेवन सुचि दरशन परसन पुनीततम नामे।
संभाषण सब तरह श्रवन मन मनन नाम अभिरामें।।
नाम सनेह निरत नेही से सजना संग सदा में।
श्रीयुगलानन्य कदंब काम से रहना नित निष्कामें।।१४३

मत्स्यपुराण का कहना है कि जिसने सर्वमनोरथ दाता श्रीनामाक्षरों का ध्यान कर लिया, श्रीनामध्वनि सुनली, नाम गान कर लिया, उसने सर्व वैदिक कर्त्तव्यकर्म करने का फल पा लिया। नामही ध्यान करने योग्य, जानने योग्य तत्त्व, कर्णछिद्रों द्वारा पान करने योग्य हैं। सभी सिद्धान्तों का यह सारसर्वस्व है, सुख सौभाग्यदायक है।

'येन ध्यातं श्रुतं गीत रामनामेष्टदं महत्।
कृतं तेनैव सत्कृत्यं वेदोदितमखण्डितम्।।
ध्येयं ज्ञेयं परंपेयं रामानामाक्षरं मुने।
सर्वसिद्धान्त सारेदं सौख्य सौभाग्य– कारणम्।।'

गुणानुसन्धानपूर्वक नामजप

हिन्दी के विद्वान् लेखक बाबू शिवपूजन सहाय का कहना है– संतों के मतानुसार नामोपासक को, हरिगुंणगान में भी अनुरक्त होना चाहिए, क्योंकि जिसके गुणों की महिमा दिल में बैठ जायगी, उसी का नाम याद करते रहने में दिलचस्पी होगी। रामकथा में जिसका मन लगेगा, उसी का चित्त रामनाम के सुमिरन–भजन में एकाग्र होगा– रमेगा– तन्मय होगा। यह स्वाभाविक बात है कि जिसके गुणों पर मन रीझता है, उसी के नाम और रूप में हृदय आसक्त होता है। हम पहले भी कह आये हैं कि श्रीराम नाम में ही सपरिकर सानुज, तथा श्रीधाम सहित श्रीयुगलकिशोर की स्थिति है तथा समस्त दिव्यगुणगण भी श्रीनाम में ही स्थित रहते हैं। आदित्य पुराणे श्रीमहादेव वाक्यं शिवां प्रति–

'रामनाम्नि स्थितास्सर्वे भ्रातरः परिकरास्तथा।
गुणानां निचयं देवि तथा श्री धाम मंगलम्।।'

अत: गुणचिंतन नामार्थ चिंतन ही है। नामार्थ चिंतनपूर्वक नाम जपने का आदेश है, योगसूत्र का भी। श्रीगुणगणों के चिंतन से युगल ललन में अनुराग की बाढ़ सी आ जाती है।

सुमिरि सुमिरि गुनग्राम राम के उर अनुराग बढ़ाऊँ।
तुलसिदास अनयास रामपद पैहहि प्रेम पसाऊ।।

— श्री विनय १००

यदि अपरिमित रस सिन्धु श्रीसीतारामनाम के साथ दिव्य प्रेमानन्द संवर्द्धक गुणगणों का चिंतन भी हो तो ऐसा परमानन्द छनेगा कि जिसका बखान वाणी द्वारा हो नहीं सकता। इसी से तो श्रीमुखवचन हैं श्री भरतलालजू के प्रति—

मम गुन ग्राम नाम रत, गत ममता मद मोह।
ताकर सुख सोइ जानई परानंद संदोह।।७।४६

श्री बड़े महाराज का आदेश है कि धारा प्रवाह अखंड नामजप करे। कोटि कोटि विघ्न होने पर भी नामजप रुकने नहीं पावे। वासनाओं के ताप में भूलकर भी नहीं तपे। लोकशोक से लापरवाह रहे। नई नई प्रेम भूमिकाएँ मिलेंगी। नाम रटन शिथिल कभी न होने पावे। नाम के गुण गा—गाकर उन्हें रिझाते रहें।

जपे जीह सरित प्रवाह के समान नाम
होय ना निरोध आठयाम विघ्न कोटि हूँ।
तपे ताप वासना विलाप से विहीन होय
खपे लोकशोक में न कैसहू अगोटि हूँ।।
नये नित्य नित्य नेहमयी भूमिका भुलाय आप
कँपे न कदापि एक रोमहू लगोटि हूँ।
युगलअनन्य गुन गायके रिझावे राम।
वेद भेद खेद पार इतनोइ ओटि हूँ।।१२७४।।

राघव के गुन गाइये जू बहु वाद विवाद में कौन मजा है।
व्यर्थ कुमारग में भटको निज नाम सनेह सुराह बजा है।।
छाड़ो सभी चतुराई चटाक दै नाम रटो दुख दूर अजा है।
युग्म अनन्य सुनाम बिना कुछ और बके तिसही को सजा है।। १७५३।।

मरणकाल का नामोच्चारण

जब बात बेग करि प्रान उदवेग करि
नाड़ी उतपात भरी गात गात छाइ है।
पित्त हूँ प्रकोप करि बुद्धि चित्त लोप करि
ताप ज्ञान गोप करि जरनि जगाइ है।।
पाय सन्निपात अन्य बात ना सुनाइ है
दृगन तन्द्रा छाइ कंठ कफ लगि जाइ है।
हाय राम भाइ तब दैहों कहवाइ
राम नाम 'रसरंग' के मरत मुख आइ है।।

काशी वासी प्राणियों का मरणकाल ही में नाम सुनाकर भगवान् शंकरजी मुक्त कर देते हैं।

जासु नाम बल संकर कासी। देत सबहि सम गति अविनासी।।
आकर चारि जीव जग अहहीं। कासी मरत परम पद लहहीं।।
सोपि राम महिमा मुनि राया। सिव उपदेश करत करि दाया।।
कासी मरत जंतु अवलोकी। जासु नाम बल करौं बिसोकी।।

भक्तिहीन प्राणी भी मरणकाल में नामोच्चारण करे तो उसे निर्वाण मोक्ष मिलेगा ही।

'राम राम कहि तनु तजहि, पावहिं पद निर्वान।।' ३/२०

जाकर नाम मरत मुख आवा। अधमउ मुकुत होइ श्रुति गावा।।
जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं। अंत राम कहि आवत नाहीं।।

जन्म–जन्म का भाव यही है कि मरणकाल में नामोच्चारण नहीं होने से बार–बार जन्म होते हैं।

पद्म पुराण में कहा है कि प्राण त्यागते समय रामनाम एक बार भी उच्चारण करने से वह सूर्यमण्डल को वेधन कर भगवद्धाम को जाता है। याद रखना है कि यह अर्चिरादि मार्ग केवल उत्तम वर्ग के सिद्धों के लिए ही सुगम है। सो अंतिम काल एक बार के नामोच्चारण से मिलता है।

'प्राण प्रयाण समये रामनाम सकृत्स्मरेत्।
स भित्वा मण्डलं भानोः परं धामाभिगछति।।'

श्री क्रियायोगसार में कहा है कि हे विप्रवर! मृत्युकाल में श्रीरामनाम का एक बार भी उच्चारण कर ले तो पापी भी परममोक्ष प्राप्त करता है।

मृत्यु काले द्विज श्रेष्ट रामरामेति यः स्मरेत्।
स पापात्मापि परमं मोक्षमाप्नोति मानवः।।

श्रीआदिपुराण में भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन जी से कहा है कि जो रामनाम का स्मरण करते हुए प्राण त्यागते हैं, उनको वह परमोत्तम फल मिलेगा, जो मुझे भी नहीं मालूम। मैं तो ऐसे प्राण त्यागने वाली का भजन करता हूँ।

रामस्मरण मात्रेण प्राणान्मुञ्चति ये नराः।
फलं तेषां न पश्यामि भजामि तांश्च पार्थिव।।

श्रीनारायण रहस्य में कहा गया है कि प्राण त्यागते समय भक्तिभाव से आविष्ट मन होकर वचन से रामनाम का कीर्तन कर ले वह रोगी भी सर्व शुभाशुभ कर्मों से मुक्त हो जाता है।

त्यजन् कलेवरं रोगी मुच्यते सर्व कर्मभिः।
भक्त्यावेश्य मनो यस्मिन् वाचा श्री नामकीर्तने।।

श्रीअध्यात्म रामायण में श्रीवालि का वचन है कि मरणकाल में विवश होकर भी जो आपके नाम का स्मरण करता है, उसे परम पद मिलता है।

यन्नाम विवशो गृणन्म्रियमाणः परं पदं याति....।

———o———

सद्धि खण्ड

नामजप से वैराग्योदय

आप ज्ञान मार्ग से चलना चाहते हैं तो आपको ज्ञान की आधार भूमि वैराग्य पहले प्राप्त करना होगा। वैराग्य की प्राप्ति निष्काम कर्म योग से होती है।

धर्म तें बिरति जोग ते ग्याना। ग्यान मोच्छप्रद वेद बखाना।।

आप भक्तिमार्ग से चलना चाहें तो पहले वैराग्य प्राप्त करना होगा। वहाँ भी निष्काम कर्म योग से ही वैराग्य–प्राप्ति संभव है।

भगति की साधन कहउँ बखानी। सुगम पंथ मोहि पावहिं प्रानी।

प्रथमहि विप्र चरन अति प्रीती। निज निज कर्म निरत श्रुति रीती।।

तेहि कर फल पुनि विषय बिरागा। तब मम धर्म उपज अनुरागा।।

श्रीमद्‌भागवत का श्लोक प्रसिद्ध है कि ज्ञान को पूर्व भूमिकाभूत वैराग्य हृदय में दृढ़तापूर्वक न जम जाये तब तक कर्म करते रहें अथवा भक्तिमार्गियों को भगवत्कथा श्रवणादि में श्रद्धा न उपज जाय तब तक कर्म मार्ग नहीं छोड़ें।

तावत्कर्माणि कुर्वीत न निर्विद्येत यावता।

मत्कथा श्रवणादौ वा श्रद्धा यावन्न जायते।।

नाम साधना के पहले भी वैराग्य की आवश्यकता है। यह वैराग्य नामजप में प्रवृत कराने वाला है। यह वैराग्य नामनिष्ठ नामानुरागी संतों की चरणसेवा से प्राप्त होगा।

यावन्न रामभक्तानां सततं पादसेवनम्।

राम नाम्नि परे तावत् प्रीति स्संजायते कथम्।।

– आदि रामायणे।

यदि आपको किसी पूर्वपुण्य पुञ्ज के फलस्वरूप बिना सेवा किये ही नामजप में लगन लग गई, तो आप सेवा की भी उपेक्षा कर सकते हैं। आप नामाभ्यास में ही जुटे रहिये। श्रीनामसरकार ही आपको आवश्यक वैराग्य भी देंगे।

हमारे शास्त्रकारों ने वैराग्य की पाँच विभिन्न श्रेणियाँ स्वीकार की हैं। १. यतमान, २. व्यतिरेक, ३. एकेन्द्रिय, ४. वशीकार और ५. पर।

१. वैराग्य की यतमान दशा में विषयभोग त्यागने के यत्न में साधक लगता है।

२. व्यतिरेक दशा में सभी भोंगों का त्याग बन जाता है।

३. एकेन्द्रिय दशा में इन्द्रियों की विषयलिप्सा शिथिल पड़ जाती है। यह जितेन्द्रियता शास्त्रीय भाषा में दम कहलाती है।

४. वशीकार दशा में मन से विषयस्पृहा नगण्य हो जाती है। इस मनवशीकार को शम कहते हैं।

५. पर वैराग्य का लक्षण श्रीमानसजी में श्रीमुख में कहा गया है।

कहिअ तात सो परम बिरागी। तृनसम सिद्धि तीन गुन त्यागी।।

निष्काम कर्मयोग से वैराग्य उदय होता है। परन्तु कर्म द्वारा उत्पन्न वैराग्य की सीमा शमदम तक हद है। पर वैराग्य एकमात्र नामजप से भी संभव है। क्योंकि श्रीरामनाम के अंशभूत रकार से ही परवैराग्य प्रगट होता है। श्रीमहारामायण में कहा गया है।

'रकारोहेतु वैराग्यं परमं यच्च कथ्यते

इस संदर्भ में हम श्रीराम–नाम विज्ञान के यशस्वी लेखक पं० जगदीश शुक्ल के ओजस्वी वचन यहाँ उद्घृत करते हैं– शुक्लजी अपने ग्रन्थ के पृ० ७२ में लिखते हैं–

'सच मानिये, जो राम–नाम रस पी लेता है, उसके लिये संसार के सारे रस नीरस हो जाते हैं। सांसारिक भोगैश्वर्य के विलास को वह नरक की यातना मानता है। रामनाम से शून्य षड्रस का भोजन और नवरस का काव्य भी उसे सुहाता नहीं हैं, लुभाता नहीं है। कृष्णगढ़ाधीश नागरीदास को किस सांसारिक भोगैश्वर्य की कमी थी, जो उन्होंने अपने भोगैश्वर्य– प्रधान राज्य को ठुकरा दिया और राम–नाम के साम्राज्य को अपना लिया। कुन्दनलाल भी धनकुवेर ही थे, किन्तु उन्हें भी राम–नाम के रस का ऐसा चसका लगा कि उन्होंने भी सांसारिक सुखों को ठोकर दे दी। राम–नाम का प्याला होंठों में लगाकर जमकर बैठ गये। राज्य–संचालन काल में राज्य–सुख से ऊबकर नागरीदास ने एक बार कहा था–

'कहा भयो नृपहूं भये ढोवत जग बेगार।
लेत न सुख हरिभगति को सकल सुखनि को सार।।'

क्या कारण है कि एक भिक्षुक (श्रीजीवगोस्वामीजी) भी नाम–धन का धनी होकर पारसमणि जैसे मूल्यवान रत्न को भी नाचीज मानकर, नहीं नहीं खतरनाक जानकर, यमुना के जल में फेंकवा देता है। वह कौन सा अपूर्व आनन्द मिलता है रामनाम के रसिया को जो सिंहासन को भी ठुकराकर निर्जन जंगलों में जंगली जीवों के बीच में अलमस्त होकर घूमता फिरता है? क्या आपने इस विषय में कभी तत्त्वत: सोचा है? शायद नहीं सोचा है और न आपको सोचने की फुरसत ही है। तो विश्वास कीजिए अपने सत्यनिष्ठ और बीतराग पूर्वजों पर, रामनाम के अनुभवी महापुरुषों पर, भगवान् श्रीकृष्ण पर, भगवान् शंकर पर, देवर्षि नारद पर, ब्रह्मर्षि शुकदेव पर, महर्षिवाल्मीकि और याज्ञवल्क्य– जैसे सर्वमान्य महात्माओं पर। विश्वास कीजिये परमहंस रामकृष्ण पर, संततुलसीदास

पर, तथा युग–पुरुष और विश्व वन्द्य अपने राष्ट्रपिता बापू पर। विश्वास कीजिए, इन महापुरुषों को आपसे कोई स्वार्थ नहीं साधना है, झूठ नहीं बोलना है। दगा नहीं करना है। ये सभी संसार के सर्वश्रेष्ठ विचारक एकमत होकर एकस्वर होकर आपसे कह रहे हैं कि रामनाम की आनन्दगंगा में गोते लगाकर आपभी अपने आप को तारिए और इस परम और चरम लाभ के लिये औरों का भी आह्वान कीजिए। इसके लिए काशी या प्रयाग जाना नहीं है, कोई साधन या सामग्री जुटाना नहीं है, कुछ खर्च नहीं है, बस दिल खोलकर, जी उड़ेल कर, खुले कंठ से झूम–झूमकर गाना है–

'सीताराम जय सीताराम, सीताराम जय सीताराम'

पर वैराग्य से गुणगणों में सम्बन्धित सिद्धान्तों की अरुचि होती है।

कहिअ तात सो परम बिरागी। तृन सम सिद्धि तीन गुन त्यागी।।

श्री बड़े महाराज श्रीसीतारामनाम सनेह वाटिका में लिखते हैं।
नाम ही के आसरे न चाहे रिद्धि सिद्धि को–

साँची कहौ वानी सुखसानी मतिमानी नाम
कलित कहानी नहिं खाहिस समिद्ध को।
हौं तो अति अज्ञ पर नाम सरवज्ञ सोइ
वदन में बैठि वदैं वचन सुसिद्ध को।।
उचित न नाम नेह व्योम में मगन होय
और चीज चाहे इस रीति गुन गिद्ध को।
युगल अनन्य सुख सकल सुलभ नित
नाम ही के आसरे न चाह रिद्धि सिद्धि को।। ९९३।।

श्रीगोस्वामिपाद श्रीविनयपत्रिकामें कहते हैं।

रामनामते विराग जोग जाप जागि है।
सहित सहाय कलिकाल भीरू भागि है।

श्रीयाज्ञवल्क्य स्मृति में कहा गया है कि विषय भोगों से वैराग्य, ज्ञान, विज्ञान निर्मल प्रेम सब नामकीर्त्तन से सुलभ हो जाते हैं।

ज्ञान विज्ञान सम्पन्नं वैराग्यं विषयेष्वनु।
अमलां प्रीति मुन्निद्रां लभते नामकीर्त्तनात्।।

लघुभागवत में भी वैराग्य, ज्ञान, भगवत्प्रेम आनन्ददायक नामकीर्त्तन ही से प्राप्त होना कहा गया है।

ज्ञानं वैराग्यमेवाथ तथा प्रीतिः परात्मनि।
संलभेन्नाम संकीर्त्यह्यभिरामाखयमद्भुतम्।।

वैराग्यपूर्वक नामजपनेवालों के मध्यही में श्रीरघुलालजी का खास निवास रहता है। श्रीआदि पुराण में भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीअर्जुनभक्त से ऐसा कहा है–

सततं नाम गायन्ति विनिर्विण्णेन चेतसा।
तेषां मध्ये सद्वा सः श्रीरामस्य विशेषतः।।

नामजापक की सुरक्षा

श्रीसीतारामनाम जपने वाले को निर्भय निशोच रहना चाहिये। यही नाम सभी ईश्वरों के भी जाप्य है। अत: इस नाम के जपसे सभी ईश्वरवर्ग परम प्रसन्न होकर, उस जापक की रक्षा में बिना बुलाये सदैव तत्पर रहते हैं। सिद्ध नामजापक परमहंस श्रीप्रेमलताजी का अनुभूत वचन है—

'राम रूप धनुवान धारि कर रक्षा में नित रहते हैं।
शिव त्रिशूल धरि, ब्रह्मदंड कर, विष्णु चक्र निज लहते हैं।।
नारायन धरि गदा कौमुदी जापक के रिपु दहते हैं।
प्रेमलता हनुमान मनोरथ पुरवहि जो कुछ चहते हैं।। ९४
सियजी भोजन देइँ शक्ति सब करैं आइ शिर पर छाया।
दानव देव भूत किन्नर पशु पक्षी जो जग में जाया।।
नाम प्रसाद विषमता परिहरि करत सकल निसदिन दाया।
प्रेमलता तेहि भजहि न जड़मति पाइ अनूपम नर काया।। ९५

श्रीहितोपश शतक

श्रीमार्कण्डेय संहिता का वचन है कि परमानन्दरूप परमोत्तम श्रीरामनाम सरकार जापक के विवेकादि शुभाचारों की रक्षा में सदा स्वयं तत्पर रहते हैं।

'विवेकादीन् शुभाचारान् रक्षणाय सदोद्यतम्।
श्री रामेति सन्नाम परमानन्दविग्रहम्।।'

अत: आर्तभक्त के जीवन, दृप्त भक्तों के प्रमोददाता तथा सामान्य भक्तों की सदा रक्षा करने वाले श्रीरामनाम के ही हम शरणापन्न हो रहे हैं।

'आर्त्तानां जीवनं नित्यं दृप्तानां वै प्रमोददम्।
भक्तानां त्राणकर्त्तारं रामनाम समाश्रये।।'

यही कारण है कि श्रीरामनाम स्मरण करते ही सभी उपद्रव उसी प्रकार मिट जाते हैं, जैसे सूर्योदय होने पर अन्धकार।

'सूर्योदये यथा नाशमुपैति ध्यान्तमाशु वै।
तथैव नाम संस्मणाद्विनाशं यान्त्युपद्रवा:।।'

नृसिंह पुराणे

श्रीसाकेतबिहारीजी सगुणनिर्गुण ब्रह्मों से भी बड़े हैं। वह भी अपने नाम के अधीन रहते हैं। श्रीनाम इतने महान् होकर भी ऐसे प्रेम प्रवीण है कि आपका प्रेमी नीच ऊँच कोई भी हो, उसके हृदय—भवन में प्रवेश करने में तनक भी नहीं सकुचाते हैं। एक बार भी श्रीनामका उच्चारण कर ले तब उसके शत्रुसमुदाय को नष्ट कर देते हैं। युद्धस्थल में भी रामनाम का स्मरण कर लो तो वहाँ भी रक्षा (अमन) करते हैं। सुरक्षा करने की प्रतिज्ञा बहुत ही पुष्ट है। श्रीनामरहस्य ऐसा सूक्ष्म है कि बिना सद्गुरु कृपा—कटाक्ष के समझ में नहीं आता।

अगुन सगुन के पार परम प्रभु सोउ श्रीनाम अधीना।
नीच ऊँच गृह गमन करत नहिं सकुचत प्रेम प्रवीना।।
वारक बदत दरत अरिकुल रन अमन करत पन पीना।
युगलानन्य शरन सद्गुरु बिनु लखि न परत गति झीना।।१३६।।

श्रीनामसरकार अपने जापक की सुरक्षा में ऐसे तत्पर रहते हैं कि उसके कुटिल शत्रु काम को, कलिकाल की हरकत (ख्याल) को, अज्ञानान्धकार पुँज को नष्ट करने में अपने हृदय में हर्षित होते हैं। (श्री युगलानन्यशरणजी महाराज) ने परख लिया है, हजारों सूर्य समान श्रीनाम समर्थ है– नाम बल पर जापक दिनरात निश्शंक रहता है। आपके गुणों को याद करके आँसू बहाता है। रक्षा में श्रीनाम ऐसे शूरवीर होते हुए भी जापक पर तो स्वप्न में भी क्रोध नहीं करते, चाहे उससे भयंकर भूल भी हो जाय।

काम कुटिल, कलिकाल ख्याल, तमतोम, हनत हिय हरषे।
सरस सूर शशि सद्दश विलक्षन शुचि समर्थ पन परखे।।
रैन ऐन संका बिहीन बल बिशद बूँद वर वरषे।
युगलानन्यसरन नेहिन पर सपनेहू नहीं अमर्षे।।१६६।।

श्रीनामकांति।

❄ सभी पापों का प्रायश्चित नामजप ❄

मार्कण्डेयपुराणमें श्रीव्यासदेवजी ने अपने शिष्यों को समझाया है कि पापों के प्रायश्चित करके विशुद्ध बनने के लिए, धर्मशास्त्र ने बहुत से धर्माचरणों का आदेश दिया है। परन्तु उन सबों से अनन्तगुण श्रेष्ठ श्रीरामनाम का कीर्त्तन है।

'धर्मानशेण संशुद्धान्सेवन्ते ये द्विजोत्तमा:।
तेभ्योऽनन्त गुणं प्रोक्तं श्रेष्ठं श्रीनामकीर्त्तनम्।।'

श्रीप्रभासपुराण में श्रीमुखवचन है श्रीनारदजी के प्रति–
हे तपोनिष्ठ मुनिवर! सभी भगवन्नामों में सर्वश्रेष्ठ श्रीरामनाम है। इनका कीर्त्तन करना ही समस्त पापों से मुक्त होने का प्रायश्चित कर लेना है।

नाम्नां मुख्यतमं नाम श्रीरामाख्यं परन्तप।
प्रायश्चितमशेषाणां पापानां मोचकं परम्।।'

श्रीतापनीय संहिता में कहा गया है कि सभी दोषों का परम प्रायश्चित है श्रीरामनाम का कीर्त्तन। इससे अकल मृत्यु टल जाती है। मूला अविद्या नष्ट हो जाती है। इससे भिन्न और क्या कहें? हमारे जीवन सर्वस्व श्रीरामचन्द्र हैं। उनके नाम में अनन्त वैभव सन्निहित हैं।

सर्वेषामेव दोषाणां प्रायश्चितं परं स्मृतम्।
अपमृत्यु प्रशमनं मूलाविद्या विनाशनम्।।
नाम संकीर्त्तनं विद्धि अतो नान्यद्वदाम्यहम्।
सर्वस्वं राम चन्द्रोऽपि तन्नामानन्त वैभवम्।।

श्रीपराशर संहिता में कहा गया है कि सभी प्रायश्चित विधियों में श्रीरामनामका जप सर्वोत्तम है। संन्यासियों और श्रीरामभक्तों के लिए तो सभी भाँति से यही उत्तमोत्तम प्रायश्चित हैं।

प्रायश्चित्तोतषु सर्वेषु राम नाम जपं परम्।
यतीनां रामभक्तानां सर्वरीत्या विशिष्यते।।

वहीं यह भी कहा गया है कि सत्य सत्य बता रहा हूँ श्रीरामनाम से विमुख चाहे अपने पापों का हजारों प्रायश्चित करा ले, वह सर्वथा शुद्र हो ही नहीं सकता। भला किस प्रायश्चित में इतनी बड़ी विशुद्धीकरण क्षमता है?

श्रीरामनाम विमुखं जीवं शोधयितुं क्षमम्।
प्रायश्चित्तं न चैवास्ति कश्चित् सत्यं बचो मम।।

श्री शिव सर्वस्व में कहा गया है कि श्रुतिस्मृति पुराणों में श्रीरामनाम को ही परमोत्तम प्रायश्चित बताया गया है। श्रीरामनाम कीर्त्तन से तीनों ताप भी मिट जाते हैं। इससे सभी पापों का पूरा परा प्रायश्चित हो जाता है। नाम कीर्त्तन से बढ़कर तीनों लोकों में कोई पुण्य है भी नहीं।

श्रुति स्मृति पुराणेषु रामनाम समीरितम्।
यन्नाम कीर्त्तनेनैव तापत्रय विनाशनम्।।
सर्वेषामेव पापानां प्रायश्चित्तमिदं स्मृतम्।
नातः परतरं पुण्यं त्रिषु लोकेषु विद्यते।।

श्रीकबीर जी कहते हैं कि सब पापों का नाश श्रीनाम से सहज संभव है।

नाम जो रत्ती एक है, पाप जो रती हजार।
आध रती घट संचरै, जारि करै सब छार।।
जबहि नाम हिरदे धरा, भया पाप का नास।
मानो चिनगी आग की, परी पुरानी घास।।

(भगवन्नाम महिमा अंक पृ० ८१ से साभार उद्धृत)

अवतार लीलावाले मधुर देश की बात है। भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का अभी अवतार नहीं हुआ था। महाराजा श्रीदशरथ ने एक दिन भूल से शब्दबेधी वाण के द्वारा मृग समझकर, सिन्धु मुनिका वध कर डाला। अन्ध मुनि और उनकी पत्नी ने पुत्र शोक से महाराज के सामने ही प्राण त्याग कर दिये। तीन निरपराधी ईश्वरानुरागियों के प्राणनाश का कारण होने से महाराज श्री कौशलेन्द्र ने अपने को महान् अपराधी माना। उनके मन में असह्य वेदना होने लगी। किसी भी

प्रकार उन्हें शान्ति न मिल सकी। अब मानसिक दशा ऐसी न रही कि वे राजधानी लौट आते। उन्होंने सोचा कि प्रायश्चित करने पर चित्त में शान्ति आ सकती है। इस उद्देश्य से वे गुरु श्री वशिष्ठ जी के आश्रम में गये। श्री वसिष्ठ जी आश्रम में न थे। उनके पुत्र श्रीवामदेव जी, महाराज के मुख से सारा वृतान्त सुनने के बाद बोले— मैं प्रायश्चित करा देता हूँ। आप स्नान करके आइये। महाराज के स्नान कर लौटने पर श्रीवामदेवजी ने कहा—

आप तीन बार रामनाम उच्चारण करें। महाराज ने वैसा ही किया। श्रीनाम के प्रभाव से उनके सारे पाप दूर हो गये। उनके प्राणों को शान्ति मिली, महाराज कौशलेश अपनी पालिता श्रीअयोध्या नगरी में लौट आये। इधर श्रीवसिष्ठ जी जब आश्रम में आये तो उनके पुत्र ने महाराज का आगमन तथा उनके प्रायश्चित का सारा वृत्तान्त कह सुनाया। पुत्र के द्वारा तीन बार रामनाम का विधान सुनकर, श्री वसिष्ठ जी आश्चर्यान्वित और क्रोधान्वित हो उठे। एक बार के स्थान में तीन बार क्यों? श्रीरामनाम में अविश्वास! अरे, एक बार 'रा' वर्ण का उच्चारण करते ही सारे पाप चले जाते हैं और 'म' वर्ण के बोलते ही मुखबंद हो जाने पर, फिर पाप लौटकर, शरीर में घुसने नहीं पाते। इस प्रकार के नाम में अविश्वास चाण्डाल ही कर सकता है। श्रीरामनाम के प्रति मर्यादा का उल्लंघन करने पर श्री वसिष्ठ जी पुत्र से कुद्ध होकर बोले, 'तुम मेरी संतान होने योग्य नहीं हो, तुम चाण्डाल हो, मैं तुम्हारा मुख भी नहीं देखना चाहता, दूर हो जाओ, अपराध क्षमापन की प्रार्थना होने पर, आपको मर्यादा रक्षणार्थ आपने उन्हें चाण्डाल जाति के निषादराज गुह रूप में भगवान् श्रीराम का अभिन्न हृदयसखा बनने का वचन दिया। हुआ भी ऐसा ही।

प्रायश्चित— विमर्श

मनुस्मृति, याज्ञवल्क्यादि स्मृतियों के प्रायश्चित प्रकरण में भिन्न—भिन्न पापों के लिए अलग अलग प्रायश्चितों की व्यवस्था कही गई है। पुनः जहाँ राजाओं के लिये सदक्षिणा राजसूय, अश्वमेधादि यज्ञों को प्रायश्चित रूप में करने का आदेश है, वहाँ चारों वर्णों और आश्रमों की प्रजाओं के लिए भी एक ही पातक के लिये वर्णाश्रम के अनुसार ही अलग—अलग प्रायश्चित बताये गये हैं। कहीं दो दिनों का सात्पनब्रत, कहीं नव दिनों का अतिकृच्छ, कहीं बारह दिन व्यापी प्राजापत्य व्रत करने का आदेश है। किसी पाप के लिए चान्द्रायण, किसी के लिए तप्त कृच्छ, कहीं कृच्छ—चान्द्रायण, कहीं कृच्छातिकृच्छ चान्द्रायण व्रत करने को कहा गया है। इसी प्रकार पञ्चगव्य प्राशन, कहीं ब्राह्मण भोजन, गोदान, स्वर्णदान प्रायश्चित रूप में करने का धर्मशास्त्रादेश है। उसी प्रकार दर्श पौर्णमास्य आदि नैमित्तिक यज्ञों की भी आज्ञा है।

पुनः उपर्युक्त पातकों के कर लेने पर भी वह चीर्ण प्रायश्चित नहीं माना जाता । कुछेक ही पापों की आंशिक निवृत्ति होती है। पाप—संस्कार बने रहते हैं। वे पुनः उस पातकी को पापों में प्रवृत्त कराकर दुर्दशा पात्र बनाते हैं। बात यह है जैमिनिपंथी कर्मकांडियों की दृष्टि सामान्य धर्म तक ही सीमित रहती है। सामान्य धर्म ऐहिक तथा स्वर्गीय सुख ही दे सकते हैं। उससे भक्ति, मुक्ति, भगवद्धाम की प्राप्ति तो होने से रहे।

अत: स्मृति–वचनों की अपेक्षा विशेष धर्म बताने वाले पुराणों के प्रमाण वेदतुल्य अधिक पुष्ट माने जाते हैं। कहा गया है–

पुराणं पञ्चमो वेद:–

इतिहासं पुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते।
वेदानध्यापयामास महाभारत पञ्चमान्।।

श्रीनारदीय पुराण में कहा गया है कि वेदार्थ से भी अधिक पुराणार्थ माने जाते हैं। वेद पुराणमें ही प्रतिष्ठित है। अत: स्मृतिपुराण में विरोध होने पर पुराण ही अधिक बलवान् माने जायेंगे।

'स्मृति पुराण विरोधे पुन: पुराणन्येव वलीयांसि।'

पुराणों में पापी के द्वारा किये गये भूत, वर्त्तमान यहाँ तक कि भविष्य के भी संभाव्य समस्त पापों का अशेषरूप से आत्यन्तिक और सर्वांग पूर्ण प्रायश्चित श्रीरामनाम का उच्चारण मात्र ही है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में श्रीरामनाम के तत्त्व के परम पारखी देवर्षिनारदजी राजर्षि अम्बरीषजी से कहते हैं। अनन्त जन्मों के अर्जित पाप पुंज श्रीरामनाम के प्रभाव से नाम उच्चारण करते ही उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं।

जन्मान्तर सहस्रैस्तु कोटि जन्मान्तरेषु यत्।
रामनाम प्रभावेण पापं निर्याति तत्क्षणात्।।

पुराण के इस नाम प्रभाव कथन का धर्मशास्त्र समर्थक है। कात्यायन स्मृति नामक धर्म शास्त्र कहते हैं कि पूर्व के किये हुये पाप, वर्तमान के क्रियामाण पाप तथा भविष्य में होने वाले पाप सभी दो अक्षर वाले श्रीरामनाम के एक बार ही के उच्चारण से नष्ट हो जाते हैं तथा उच्चारण कर्त्ता को शुद्ध बना देते हैं।

कृतैश्च कियमाणैश्च भविष्यद्भिश्च पातकै:।
रामेति द्वयक्षरं नाम सकृज्जप्त्वा विशुद्धयति।।

अल्पपुण्यवाले मंदभागी मनुष्य को श्रीरामनाम के इस अचिन्त्य प्रभाव में सहसा विश्वास नहीं होता। उनके मन में नाना प्रकार के कुतर्क उत्पन्न होते रहते हैं। वे कहते हैं कि बारह–बारह वर्षों तक कृच्छ चान्द्रायण व्रत करने पर जो पातक नष्ट हो पाता है, वह इस छोटे से दो अक्षर वाले रामनाम से शीघ्र कैसे मिटेगा? उन्हें वेदार्थभूत हिरण्यगर्भसंहिता के इस परम प्रामाणिक वचन पर विचार करना चाहिये। संहिता कहती है कि अल्प नाम से इतनी अधिक पापराशि कैसे नष्ट होगी? ऐसी शंका नहीं करनी चाहिये। सूखे घास के बहुत बड़े ढेर को आग की एक छोटी सी चिनगारी कैसे जलाकर भस्म कर देती है? देखते नहीं। उसी प्रकार अग्नि के भी कारण श्रीरामनाम अशेष पातकों को भस्म कर देते हैं। इतना ही नहीं जापक के महामोह मदादि भी मिट जाते हैं।

अल्पे नाम्ना कथमस्य पापक्षयो भवदत्र न शङ्कनीयम्।
तृणादि राशि दहतेऽल्प बह्निस्तथा महामोहमदादि नाम।।

सच्ची बात तो यह है कि श्रीनामोच्चारण मात्र से इतने अधिक पापपुंज मिटते हैं, जितने पाप बड़े से बड़े श्वपचादि महापातकी में भी नहीं पाये जाते। कोई पापी जीवन पर्यन्त सभी कुकर्म यत्नपूर्वक करने पर कमर कस ले, तो भी इस भूमंडल पर उतने पाप नहीं कर सकते, जितने अधिक एक नामोच्चारण से मिटते हैं।

श्री रामनाम सामर्थ्यमतुलं विद्यते द्विज।
नहि पापात्मकस्तावत्पापं कर्तुं क्षमः क्षितौ।।

— बोधायन सं०

श्वादोऽपि नहि शक्नोति कर्तुं पापानि यत्नतः।
तावन्ति यावती शक्ती रामनाम्नोशुभक्षये।।

— इतिहासोत्तमे

इस पर कुतर्की कहता है कि हो सकता है दीर्घकाल तक नामाभ्यास करने पर पाप सभी मिट जायँ। बेचारे श्रीनाम की अचिन्त्य शक्ति से सर्वथा अनजान है। अजी, श्रीनाम प्रभाव जानने वाले हमारे शास्त्रकारों ने तो केवल एक बार ही नामोच्चारण से समस्त पापों का अवश्यमेव नाश होना बताया है। हम नीचे प्रमाण के श्लोक लिखते हैं। ग्रन्थविस्तारभय से अर्थ न लिख पायेंगे। सरल संस्कृत है।

सकृदुच्चारयेद्यस्तु रामनाम परात्परम्।
शुद्धान्तकरणो भूत्वा निर्वाणमधिगच्छति।।

श्री पद्मपुराणे।

एक बार ही के उच्चारण से मुक्ति निश्चित रूप से मिलेगी, पुनः पाप न करे तो।

सकृदुच्चारणादेव मुक्तिमायाति निश्चितम्।
न जानेऽहं शतादीनां फलं वेदैरगोचरम्।।

— श्री शिवपुराणे

एक ही बार साक्षात् नाम न कह कर नाम से युक्त शब्द भी कोई कहे जैसे हराम, तेभी उसे साक्षात् नाम ही का समस्त फल मिलेगा। यहाँ तक कि मुक्ति भी मिल जायेगी।

सकृदुच्चारितः शब्दों राम नाम्ना विभूषितः।
कुरूते नामवत्कार्य सर्व मोक्षावधिं नृणाम्।।

सौर्य धर्मोत्तरे

कुतर्की जी! अब समझा अपने? अजी सत्पात्र कोई होगा, उसका थोड़े में बन जाता होगा। सबों के लिए ऐसा संभव थोड़े है? महाशय जी, हमारे भुशुंडि रामायण तो कहती है कि ब्राह्मण हो या राक्षस, पापी हो या धर्मात्मा नाम कहने वाला भवबन्धन से अवश्य मुक्त होगा।

द्विजो वा राक्षसो वापि पापी वा धार्मिकोऽपि वा।
रामरामेति यो वक्तो स मुक्तो भवबन्धनात्।।

श्री लघुभागवत का कहना है कि अभक्ष्य भोजन, दुष्टानारी गमन जैसे महापालक भी एक ही बार के नामोच्चारण से नष्ट हो जाते हैं

अभक्ष्य भक्षणात्पापमगम्यागमनाच्च यत्।
तत्सर्वं विलयं याति सकृद्रामेति कीर्त्तनात्।।
'जासु नाम सुमिरत एकबारा। उतरहि नर भवसिन्धु अपारा॥ ' २/१०१/२
'बारक नाम कहत जग जेऊ। होत तरन तारन नर तेऊ।।
स्वपच सबर खस जमन जड़, पांवर कोल किरात।
राम कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात।। २/१९४।।

कहिये जी! अब क्या शंका है आपको? हमने मान लिया, परन्तु श्रद्धा विश्वास प्रेम से नाम उच्चारण करेगा, तब न पाप मिटेंगे? फिर आप श्रीनाम के वस्तु गुण में अगर मगर लगाने लगे। ब्रह्मवैवर्तपुराण के प्रमाण पर नहीं ध्यान देते ? अनादर से भी नामोच्चारण करने वाले का पाप उसी प्रकार व्यर्थ जाता है, यथा वेदविहीन विप्र का दिया हुआ दान।

श्री रामेत्युक्तमात्रेण हेलया कुलवर्द्धन।
पापौघं विलयं यान्ति दत्तमश्रोत्रिय यथा।।

असावधानी से ही आग छू लो, तो हाथ जलेगा ही, उसी प्रकार अनजान से ओठ से नामोच्चारण हो जाय तो सभी पाप भस्म हो जायेंगे।

प्रमादादपि संस्पृष्टो यथाऽनलकणो दहेत्।
तथौष्ठयुट संस्पृष्टं रामनाम दहेदघम्।। ब्रह्मपुराणे।

नाम कहने वाले की ही बात नहीं, नाम सुनने वालों के भी सभी पाप इस प्रकार जल जाते हैं, जैसे अग्निकण से रूई का पहाड़।

रामेति नाम यच्छ्रोत्रे विश्रम्भाज्जपितो यदि।
करोति पाप संदाहं तूल बह्निकणे यथा।। — श्री विष्णुपुराणे।

पापनाश किसी विशेष सिद्ध देश में, अथवा किसी पुण्यपर्व पर ही नामोच्चारण से होता, ऐसा भी प्रतिबन्ध नहीं। स्नानादि से पवित्र होकर ही नामोच्चारण करे, ऐसी भी कोई शर्त नहीं है। नाम तो पवित्र कर ही देंगे।

न देशकाल नियमो न शौचाशौच निर्णयः।
विद्यते कुत्रचिन्नैव रामनाम्नि परे शुचौ।। — वैश्वानर संहिता।

स्वप्न में कोई नाम बड़बड़ा उठे, संभ्रमवश नाम कह उठे, प्रमाद से, जम्हाई लेने में, गिरते पड़ते समय, अभाव में पड़कर, किसी भाँति एक बार भी नामोच्चारण हो जाय, तो उनकी असंख्य गोहत्या ब्राह्मणहत्या जैसे घोरपाप भी नष्ट हो जायेंगे।

'स्वप्ने तथा संभ्रमतः प्रमादाच्चेज्जम्भृणात् संस्खलनाद्यभावात्।
रामेति नाम स्मरणतः सकृद्वै नाशत्यसंख्य द्विज धेनु हत्या।।'

श्री भुशुंडिरामायणे।

प्रायश्चित विमर्श पर श्रीभगवान्नामकौमुदीकार ने बड़े ही युक्तियुक्त ढंग से विचार किया है। संस्कृत जानने वाले उसे अवश्य देखें। श्रीअयोध्या के वर्तमान लक्ष्मण किलाधीश जी महाराज द्वारा लिखित अजामिल–उपाख्यानभी इस सम्बन्ध में द्रष्टव्य है। हमने यहाँ अतिसंक्षेप में लिखा है। इस प्रकार हम शास्त्र–दृष्टि से देखते हैं कि अन्य सहकारी साधनान्तरों से निरपेक्ष, अकेले एक ही बार के श्रीनामोच्चारण अशेष पातकों के एकमात्र समर्थ प्रायश्चित हैं। अग्नि के समान, उग्रवीर्य रसायन घटित औषधि के समान, श्रीरामनाम में अपना वस्तुगण है। यह जानकर, अनजान में, श्रद्धाविश्वास पूर्वक या विश्वासहीन होकर अविधिपूर्वक नामोच्चारण भी महान पापियों का आत्यन्तिक प्रायश्चित है। साक्षात् नाम का कहना ही क्या है? नामाभास भी वही कार्य कर देते हैं। प्रमाण तो बहुत दे चुके हैं। एक दो और दे रहे हैं।

कदाचिन्नाम संकीर्त्य भवत्या वा भक्तिवर्जितः।
दहते सर्वपापानि युगान्ताग्निरिवोत्थितः।।

ब्रह्मवैवर्त्त।

'प्रमादादपि श्री रामनाम उच्चरितं जनैं।
भस्मीभवन्ति पापानि रोगानीव रसायनैः।।'

सुश्रूत संहिता।

अवशेनापि यन्नाम्नि कीर्त्तते सर्व पातकैः।
पुमान्विमुच्यते सद्यः सिंह त्रस्ता मृगाइव।।

श्रीविष्णुपुराणे।

धर्मशास्त्र कथित कृच्छातिकृच्छ चान्द्रायण व्रतादि, प्रभूत धर्मसाध्य व्ययसाध्य यज्ञादि भी श्रीनाम के समान पातकियों के अशेष पाप नष्ट करने में समर्थ नहीं है। श्री मद्भागवत ६ ।१ ।९, १० में श्रीपरीक्षित जी श्रीशुकदेव जी से पूछते हैं कि मनुष्य नरगमन आदि पारलौकिक कष्टों के अनुभव से यह जानता है कि पाप उसका शत्रु है,फिर भी पाप वासनाओं से विवश होकर बार– बार पापकर्मों में प्रवृत्त हो जाता है। ऐसी अवस्था में उसके पापों का प्रायश्चित कैसे संभव है? मनुष्य कभी तो प्रायश्चित आदि के द्वारा पापों से छुटकारा पा लेता है, कभी पुनः उन्हीं पापकर्मों को करने लगता है, ऐसी स्थिति में मैं समझता हूँ कि उसका प्रायश्चित भी गजस्नान की भाँति ही व्यर्थ है।

दृष्टश्रुताभ्यां यत्पपापं जानन्नप्यात्मनोऽहितम्।
करोति भूयो विवशः प्रायश्चित्तमथो कथम्।।